॥ ॐ श्री ॥

करुणासागरो विजयते

परम पूज्यपाद महाराज श्री करुणासागर

विरचित

पंचम (सूक्ष्म) वेद.

प्रकाशकः—

परमहंश सुखानंदजी.

मु० (अठवा) उमरा व्राया-सुरत

जो सुख सज्जन समोहकु सुनत ग्रंथ एही सार;
दुर्लभ अज अही पतिनकु पुनिभव श्री भरथार.

प्रथमावृत्ति.

संवत १९७६.]   [सने १९२०.

ज्ञान कींमत अमूल्य

पण स्थुल कींमत ३।) पोष्ट साथे.

पुस्तक मळवानुं ठेकाणुं

परमहंस सुखानन्दजी.

मु० (अठवा) उमरा

पोष्ट उमरा वाया-सुरत.

शा. खुबचंद अमीचंदना "धी सुरत जैन एन्जिन" प्रिन्टींग प्रेसमां प्रभुशंकर नरभेराम व्यासे छाप्युं

ठे. खपाटीया चकला-सूरत.

प्रस्तावना ।

पूज्यपाद परम दयालु भगवान करुणासागर विरचित पंचम (सूक्ष्म) वेद (पंचम) एटले पांचमो (सूक्ष्म) एटले झीणुं (वेद) एटले ज्ञान (पांचमा वेदनु झीणुं ज्ञान) आपनार आ सुक्ष्म वेद छे. ते आज सुधी पृथ्वीनी सपाटी अने सुर्यना प्रकाशमां जाहीरात तरिके नहि मुकायेलो होवाथी. हिंदुस्तान, तेमज बहीर देशोना कोइपण विद्वानोना कर्ण आगळ उद्घोस नहि करतो होवाथी, चतुर वेदना करमकांड ज्ञानथी जेवो हंमेशने माटे आनंद मानी बेठेला छे. तेओना आगळ भगवान करुणासागरजीनो विरचित पंचम सुक्ष्म वेद अत्रे हुं जाहीरात तरीके मारा कायमपंथी भ्राताओ आगळ तेमज सर्व कोई विद्वानो आगळ रजु करु छुं तो आशा छे के हरहंमेश मनन करशो.

आ ग्रंथनी हृदयभेदी प्रस्तावना लखवी जोइए, पण केटलीएक आपत्ति पुस्तक छपाववानी प्रवृति वखते होवाथी अत्रे माराथी लखी सकाइ नथी.

सुक्ष्म वेदनी हिंदी अने गुजराती भाषानु मिश्रण होवाथी अमोए साधारण गुजराती करेलु छे. अने तेमां ट्रांशलेशन करतां कायमपंथी भ्राताओने तेमां संशय उत्तपन्न थाय तो पत्रथी खुलासो करशो.

आ पुस्तकमां हस्तदोश अने प्रेस दोसथी असुद्ध रही गएलुं जोवामां आवतुं होय तो सुद्धिपत्रमां जोई लेशो.

सुक्ष्मवेदनु गुड, गहनज्ञान होवाथी मारी अल्प शक्तिना प्रमाणमां दोष जगातो होय तो वांचक वर्ग सुधारीने वांचे एवी आशा राखुं छुं.

रा. रा. प्राणजीवनदाश लल्लुभाई तरफथी रू. ५००) नी मदद मळी छे तो तेना बदल भगवान श्री करूणासागर तेओने सहायता आपो एवी आशा राखीए छीए.

ॐ शांति ! शांति !! शांति !!!

ली०

सुखानन्द परमहंस

मु० उमरा-ता. चोर्यासी.



शुद्धि पत्र.



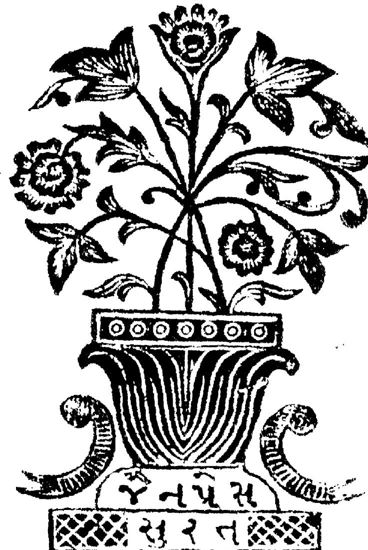
पृष्ठ	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
९	५	परहंस	परमहंस
२१	१०	अपकीनी	अप कीरनी
२३	११	उजे	उपजे
३९	११	कैतल	कैवल
४६	४	परहा	परही
४६	९	वेठा	बैठा
५०	१	गुपन	गुपत
५८	११	उनसुनी	उनमुनी
६५	१	अष्टमी	खष्टमी
६५	३	सट	खट
६६	१२	अष्टमी	खष्टमी
६६	१३	स्फरा	स्फुरा
६९	१२	अनंद	आनंद
७९	७	भग	भाग
७९	१२	भग	भाग
७९	१६	भग	भाग
७९	१७	भग	भाग

पृष्ठ	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
८१	१०	पच	पंच
८५	१२	संभासकरण	संभसकरण
८७	१६	तर्या	तर्या
८९	५	रह्यो छे	रह्या छे
८९	९	जाणवा	जाणवो
९२	१	अग्नि	इशान
९२	१०	शील	शीत
९८	१४	देजमां	देशमां
१०७	२१	अध	अंध
११२	छेल्ली	भानु	भागनुं
११३	१८	ॐकार	एथी ॐकार
११४	१०	अहंकार	ओहंकार
११५	२	के जे ओंकार ते थयो	के जे ओंकार
११५	६	अनो	अने
१२१	३	रुषी	रुपी
१२४	८	ग्रण	ग्रहण
१२७	१३	तृष्ण	तृष्णा
१३२	९	भाग	भागे
१३३	१५	हतो वो	हतो ते

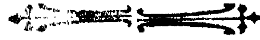
पृष्ठ	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१३५	९	चा[illegible]नुं	चांदीनुं
१३५	१४	कर्थ	अर्थ
१३९	१६	पृथ्वीनो	तेने पृथ्वीनो
१४०	८	पुरुष त	पुरुषने
१४३	१२	जे	जो
१४५	१६	पंचभाग	पंच अर्धाभाग
१४६	४	बे भाग	बे अर्धा भाग
१४९	१०	पोष्य	पोष्या
१५५	११	स्थावरनो	स्थावरना
१५९	११	तूटीन	तूटीने
१६१	१	तेन	ने ते
१६६	११	एज गुणघण बीज	एज
१६७	३	स्थावरने	स्थावरना रस-मां रूप मात्रा होय तो
१७२	१	विळासी	विळसी
१७३	१८	गणा	घणा
१७८	१०	एने	अने
१८१	१८	जंगममांथी	जंगमथी

पृष्ट	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१८१	१९	अंदर	अद्धर
१८२	१	जठरा	जठराग्नि
१८५	१३	पृथ्थी	पृथ्वी
१८५	१५	जाठतत्व	जळतत्व
१८७	८	कुंभकविग्थाना	ने कुंभकविवस्थाना
१८७	१९	उपर	उपर मुजब
१९२	१३	घसातुं	घसातुं के
२००	२०	नाडीओना	नाडीओनी
२०२	६	पुरुष काम वगेरे	पुरुषने काम प्रगट छे ते अनंग चक्षसत्व जाणवुं त्यार पछी
२०४	५	अधोमुखे.	उर्ध्व मुखे
२०९	१	अचे	अने
२१०	१८	जेवा	जेवी
२१४	८	सोय	होय
२२०	१२	होत	होय

पृष्ट	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२२१	५	पोषाइएलां	पोषाएलां
२२१	१४	नाड्डी तेज तत्व भाग छे	नाडी भाग छे
२२५	१८	घद्भाज	उद्भिज
२३२	१५	थीया छे	थया छे
२४५	१५	प्राणायममां	प्राणायम
२५४	छेल्ली	कालचक्षमत्व	कालचक्षमत्वनं



विषयक्रमणिका.



विषय	पृष्ठ.

विषय.	पृष्टांक.

अथ अगाधबोधनुं मंगळाचरन.

ओम् प्रथम प्रणाम धामजीनु सकल परापर,
सरले जाकी शक्त व्यक्त ब्रह्मांड सकलधर १

जय जय कैवलनाथ सनातन सर्व कर्तारन
अखिलानंद अविनाश विलासिक विविधी सुधारन २

लोक चतुरदश द्वंद फंद फन करन सदारन
विविधी भात्य गुन ग्रंथ व्रदं विद अलग उदारन ३

अगणित इंड कटाक्ष पाक्ष उत्तमोत्तम पद परम
अलंग सलंग एकतास आद्य कोहु न जाने मर्म ४

हंश निवास धाम धणी तुम पुरुष पुरातन
नमो नमो निरवाण प्राण पति सचर समासन ५

प्रकृति बीनु धन पूरुष पलकमें खलक उपाशक
अन्यधाम पतिदेव जुगल शक्ति तन आशक ६

सब देवनके देव सकल शीग्हो तुम कैवल
शाक्षीवत शुद्ध सलंग प्रौढ पद पुरुष एकलमल ७

जय करुणामय कंथ अंत मध्य आद्य परापर
हंस रूप स्तुति कुबेर निज ग्रंथ करन स्वर ८

अथ गुरु अष्टक.

प्रथम वंदु गुरुसत स्वामी सकलगुण गति सागरं
ता चरनरज लई धरुं शीरपर ग्यो गति अगम उजागरं १
त्याग भक्ति पूनी प्रेम ज्ञान निज अखंड अनुभव दीजीए
करी करुणा प्रभु दीन जाणी जन आपनो कर लीजीए २
जयेती जयेती जुगतात स्वामी अंतरजामी आप हो
उपाये अंशकु दक्षदेवा ज्ञान मेवा लाये हो ३
अमृतफल निज मोक्ष लाये पाये संत सज्जन भये छकीतं
दुष्ट जीव दुर्मतिके घेरे न पाये भये दुखीतं ४
उभये जनकु सुख साहेक सुनो संत सचेतन
ज्ञानहिन जग भिन्न जडवत थावर सम मनुचेतन ५
उमग नहि नभ घयन न गर्जत वसंत नहि बिनु प्रोजन
सीचत बाग जब शीर नियंता काज अकाज सब प्रोक्षन ६
उपज सभी फल बीजवाडी बीनु फल वृक्ष अखंडन
लाभ लीन भिन्नन व्रती नायक सीचत नहि तरुत्रदन ७
विश्व बाग कर्तावृत्ति प्रेरक सीचत धन सुखदायक
ज्ञान जदीप जगत्ये सब जावे मनुष श्रेष्ठन सहायक ८
थावर जंगम समष्टि पुष्टि करन पीछुत्ये नही
बिनु पुष्टि पर्ले सब जावे फेरी रचतां प्रेहेतन रही ९
निजपति ईतहेर आज्ञा दइ आप अंश पठावन
बिनु निज ज्ञान जगत जन पर्ले सरल गेल नहि पावन १०

ध्यावंत अनंत गतिजीनु गवन संत संग शोभित
गगन उडघन चंद्र शोभे अनंग छबी मुरतजन लोभित ११
कलाखट दश निद्य पूरण सिद्धि अष्ट चरणे बसे
लोक चतुरदश सेवा कारन लाये आप सुरधामसे १२
अधर तख्तपर अरस आशन दर्शत दिव्य नेत्रं
लक्षातित पक्ष ते वरजीत सोइ सतगुरु तत्पर‍ं १३
अवन अंकुर बीज जेता सहास बिनु जल रहे
अरस नीर जब परस पाये उदे अंकुर सन्मुख रहे १४
मघन घननीर सूध करुना श्रीमत कुबेरकी जब थइ
अंश अंकुर उदे अचल मति नीज पति सन्मुख द्रष्टभइ १५
तेजपुज तनु बिशेष विधुती शक्ति जोत नहि पावन
अजउमीयापति श्रीपति शारद शेष सहस्त्र मुख गावन १६
संत सहाय करन निज कर्ता भक्तवच्छल नरतनु धरे
श्रीमत कुबेर सब सुखके दाता दास हेतु डोलंत फरे १७
फीरत भव भीडभंजन प्रभु करन काज सब जीवन
असंख्य जीव धणीधाम पठावत बंदी छोड अद बंदन १८
तिलक भाल विशाल लोचन अधुर अनोपम शोभितं
निजानंद घनश्याम मुरत संतजनके मन लोभितं १९
पाण जोडी शिरनामी सेवक दास नारण्य करे विनति
मागुं प्रेम भक्ति चरनसेवा जशगावा अनुभव गति. २०

अथ परिक्रमा लीख्यते.

चालो संत सजन परिक्रमा प्रभुनी करोजो,
श्रीमत्कुवेर चरण सीस प्रीत्ये धरोजो चालो. १
कदम एक कोटी जज्ञ फल पामसोजो,
चोराशी लक्ष जन्मकेरु दुःख वामसोजो चालो. २
चतुर आंटी घांढी खाण्य चतुरनी टलेजो,
पंचमी परिक्रमाये अचल पदमी मलेजो चालो. ३
कनक डंब व्रतनमी पाये जे पडेजो,
सप्त गोत्र लेई परमपद परवरेजो चालो. ४
चरणसेवा सुखनी सीरसाधन सउ फलेजो,
ग्रही चंतामणी जेहेणे हाथ धारे ते मलेजो चालो. ५
बीनु चेन चरण चाहो मत कोइनाजो,
प्रगट जक्त गुरु चरण ग्रहो ओएनाजो चालो. ६
सुखना सागर दुःख नीकंदन करनार छेजो,
भये दर्शन धन्य तेहनो अवतार छे जो चालो. ७
खुद खावंन खलक पावंन करन आवीयाजो,
अखंड ज्ञान चरण चेनजोने लावीयाजो चालो. ८
अंकुस अमर फुलीश कमलजव्य सोभीताजो,
ध्वजा धेनुपद संख चक्र ओपीताजो चालो. ९
स्वस्तीक जंबु फल कलसमुधा सार छेजो,
अर्धे चंद्र खटकुनमीन आकार छेजो चालो. १०

बींदु उरध रेखा अष्टकुणा अंगमेजो.
इंद्रधनुष त्रीपे कुणधारे तनमेजो चालो. ११
करुणा सीधुकुबेर प्रगट जुगमे हरीजो,
अंग रंग अनंग छबी सूरत त्हांवरीजो, चालो. १२
सोले कळा संपूर्ण सर्वे साज छे,
नारणदास केहे एवा महराज छे जो,
चालो संत सजंन परिक्रमा प्रभूनी करोजो. चालो १३

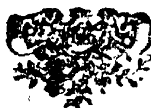
राग हेलारी:—

संसार सार कछू नहि, अंत्ये जोयुं विचारी,
उपन्युं ते अलपाय छे, गया कररे पसारी. सं. १
राजा रंक धन्यवंतही गुनी गांध्रवसुरा,
असक धर्यो संसारसु काले किनारे चुरा. सं. २
ग्रस्त प्रस्तवान ब्रह्मचरजही चोथा जे संन्यासी,
मतवादी मतने वीशे चीन्यानां अवन्यासी. सं. ३
जोगी जंगम सन्यशी सेवडा तपसीने द्रवेसा,
ब्राह्मण भूल्या भव वीशे भीन्न जाणे छे वेसा. सं. ४
वरण भीन्न भवमां घणी भीन्न वरते वहेवारा,
सो सतमानी मतमां रह्या पेख्या न कीस्तारा. सं. ५
समजुकु संकेपमें, केहे नाथा कही दीना,
मुरखसें नहि बोलना तांहां वो मुन्य प्रही रेहेना. सं. ६

श्रीमत कुवेर करुणा करी हो गरीब नवाज,
दास नारण्य एवुं जाणीने आव्यो चरण धीराज. सं. ७

पद.

साधुजन सुखीया घणा समझे सुख होई,
वेसधर्यो आ विश्वमे माने नहि कोइ. सा. १
ताको कहु द्रष्टांत ही समझो सह सारा,
नराधी प्रत्ये खेली खेलकु आयो जाचन हारा. सा. २
वेष लीधो भूपति तणो नरपती नीरे आगे,
मालक मन प्रसन भये मारु मुखसेजो मागे. सा. ३
जाचकपणु जेणे परहर्यु जोयो वेश तपासी,
मनगमती मोजो भोगवे अंत्ये पद अवन्यासी. सा. ४
दीपक जोतमे काजल भरु प्रगटे पदारथ अंगे,
नीरावणजो नेक नव लगे येसो साधुनी संगे. सा. ५
दधी मध्ये तुप तक्र रहे भीन्न करे कोइ भोगी,
संग दोस परहरी जुवे माणे वस्तु म्हा मांगी. सा. ६
श्री मत कुवेर करुणा करी स्वामी म्हासुखदाई,
दास नारण्य एवुं जाणीने चरणे रहो लपटाइ. सा. ७





परम पूज्य दयाळु भगवान करुणासागरजी.



કાયમપંથી પરમહંસ સુખાનન્દજી.

સ્થાન ઉમરા

Lakshmi Art, Bombay

पंचम (सुक्ष्म) वेद।

मंगलाचरण स्तुति।

सोहम् करुणा करनन प्रणव ओहंग अविकाशा,
द्वैत रमण गुज गवन कीये हु निज पति प्रकाशा; १
तेही कायम कैवल कुल एकल मल अरशु,
अति अपरम पर परम सर्व शिर पद सद परसु; २
तयो ज्यो अहो अकल शकल सामथ करतारन,
पसरन पूरुत्व अनंत अंत विनु अशंख अपारन; ३
विविधी भात विगतंग अंग भिन्न व्रनन निरुपम्,
शमल शक्ति जीनु सरल चरल कुल करन अनुपम्; ४
हीरणग्रभ अज अमर आध्य अणु अचर चराचर,
निरमेयु सृष्ट उतकृष्ट आपजीनुं शकल परापर; ५
सर्व उत इत तित तखत अकथ कोहु गतिनां प्रशितवितु,
तदेव अखेव खुद खलक पलक मांही अखीलजीवांनु
बिज मजल समस्तहेतु. ६
अनंत सिधान्त अंत मोर्घनी कैवल कंथ याहीते नां
कोहु तंत अधि पर्स्तिए,
इशनके इशधीस मचल मजोनी पुरुष कर्ताके कर्ता-
रेश्वर कुवेर नमस्तिए. ७

इति.

राग दोहा।

एही प्रथम मंगलाचरणन, त्ररणन करन इति ग्रंथ,
सुक्ष्मवेद शुद्ध पंचमो, ताही गति विस्तरहुं अरथ. ८
सोहम स्वासा स्वसमही, प्रणाव प्राक्रम जेह,
अखील लोक अंतर जप, वेद पंचमो तेह. ९
तेहीं ससम् निज निगमसें, ह्रसत शकल जगजीव,
चर अचरा सुरलोकल्यौं, प्रसीध जीवनपर सिव. १०
निगम चतुर चुर चुरमनी, गति विलोकेहु भेद,
जाहींते नेति कर थकी रहे. ताही गति लहे ससम् वेद.. ११
स्वसम् वेद शुद्ध सरलये, पुर्व परायण संच,
रचेहू खलक जीने बहु विधी, ताहींनिधे जाहीको समंच. १२
ताहीते समंचकर स्वर इत रहेहु शकल घटव्याप,
ज्ञांन सचित जंतर वत, स्वसम तार निज जाप. १३
तेही तारे तन ग्रोइया. लोक चतुर दश खंड,
स्थावर जंगम जल थल, अणु आद्य ब्रह्मान्ड. १४
तेही इख निरणे निरूपण, निगम पंचमा म्हांय,
ओर शकल ओरली गम. वेद चतुर गति ज्हांय. १५
विधि उत्पन्न सिर पंचमो, जेही उचरत स्वसम वेद,
काटेहु शिवले समजते, भव नहि पावही भेद. १६
जो पावहीं भव भेद एह, रहत नहि कोहू अंध,
जदिप अंध अज्ञान बिनु, जीव परत नहि फंद. १७

बिनु फंदे भव फारगत, लहत परम पद सोय,
होहू मोक्ष सर्व एक समे, वृद्धि उत्तपन्न नहि होय. १८
बिनु वृद्धि उत्तपन्न विश्वही, को करही कैलाश,
खेल अखंडीत क्यौं चले, निज करता ईतिहाश. १९
ताहीते निगम निज पंचमो, ईश्वर रखेहु दुराय,
अपने स्वार्थ लगनहु, राखेहु जीव फनाय. २०
फनेहु जीव जग ज्यौं त्यौं, त्यौं लहु ईश आधिन,
जबते रहे ईतके ईत, निज करता नहि चीन. २१
बिन करता चिने निज, रहेहु शकल जग जीव,
जीव गति विशियानंद, जजत न सदिव. २२
जजत ईत अंतर गत, इच्छत फल अहंमेव,
लेतदेत नाटक पचे, भुल गयेहू निज भेव. २३
भुलेहु निज घर जबनते, तबतेहु भरमत जंत,
उपनि सृष्टिजीनु अब लगे, वितेहु कल्प अनंत. २४
एही विधि भरमत जीव जग, कोहु लहत नहि पार,
राचेहु जांहीं त्हांही उन इत, खोजन खुद कीरतार. २५
तब तेही जीव मुक्तावन, पावन करन ज्हांन,
आयेहु तनु धर जबि हम धरी भव भेख म्हान २६
अब तुम सुनो जीव ज्हांन जग, मग मुस्कल जेहीं जंत,
तेही पंथ मम बक्षावहुं, जाव हो ज्हां निज कंत २७
निज गति परम पूरातन, जन जावही जेही धाम,
पावदी मोक्ष परम पद, सोही गावहुं गुन ग्राम. २८

जेही गुन ग्राम गुढारथ, भारत भरम निवार,
लायेहु लक्ष तेही ज्हां वशे, खावन खुद किरतार. २९
सोही लक्ष जीनु लखवावहुं, काहावहुं मम जन संत,
अरपेहु तन मन चरनन, जबि करहु गति वंत. ३०
अबजीनु चाहेहु मोक्ष जन, तेहु तन मन मम देह,
भेजेउ परम पद निज घर, ज्हां वशे कैवल सदेह. ३१
परम मोक्ष परमारथ, करन हरन भव द्वंद,
आयेहु निज पति पठयेहु, लहतन जीव मति मंद. ३२
सोयेहु जग अज्ञांनहीं, ताही जगावन टेर,
कृपा सिंधु करुणामय, कायम सत कुवेर. ३३
अविलोकएयु निजपति जग, कैवल आनंद कंद,
देखेहु परवस सबे, निगम चतुर गति फंद. ३४
उपनी म्हेर जबि जीवपर, निज नेनन पति देख,
करन मोक्ष तेही जननकु, खनये कुवेर धरि भेख. ३५
जेही मोक्ष गति अगमकी, निगम चतुर गति न्हाय,
तेही गति मति पति परमसें, लायेहु मम भव म्हांय. ३६
पूनि जग म्हांइ हम् आयकर, निरखेहु नजर पसार,
करम कांड फल आसक, अटक रहेहु संसार. ३७
गुनि ज्ञानि पंडित कवि, भक्त जक्त ओरु भेख,
गृही हदकी मध्य पचि रहे, धरि धरि भेख अलेख. ३८
ब्रह्मा, विश्नु महेश्वर, इश्वर अंश विशेष,
सक्ति जोत्य ल्यौं खट पति, धारेहु सर्व सिर इश. ३९

याहीते शकल कल विश्वही, अटकी रहेहु ईत पंथ,
खट पतिके मत महि पचे, चिनेहु नहि कुल कंथ. ४०
याहीते अगम गति जेहुन कि, तेहुनके ब्रह्मसिद्धांत,
परमहंस ज्हां छकी रहे, निरसत्व निष्ट वेदान्त ४१
रामकृष्ण जुग इशनकी, गति गीता मति चिन.
सोही समरस त्रीगुणातित, जोति ब्रह्म त्यौं लिन. ४२

आ उपर मुजब बाबतोपर महाराजश्री कुबेरस्वामीजीने जो कठीन वचनोथी कहेवुं पडेलु होय तो, अवतारादिक पुरुषो अने आचार्योनोज दोश छे. तेओए फक्त पोतानाज स्वार्थ माटे संसारना तमाम जीवोने रोकेला छे, जो तेमना होततो सद्धर्मनो सदोपदेश करवाने तैयार रहेते पण आ संसारना पोतेज मालीको थइ पुजाया छे. आखा हिंदुस्थानमां प्राये करीने देवोमां जो पुजाता होय तो अवतारदिक सिवाय बिजुं कोई नथी. आ बधो संसार त्यांज अटकेलो छे, अने एथी स्वर्गादि तृष्णाने लेइ, हुंकाण अने मारुं शुं स्वरूप छे, ते तमाम जीवो भूली गया, एथी अंश स्वरूप पदनुं ज्ञान बाजुपर रहीं गयुं. संसारनी उत्तपत्ति ज्यारथी थइ ते अत्यार सुधी कैवल पद समजवामां ना आव्युं ते नाज आव्युं अने जिवो डाल पांखडे वळगी गया. तेमज जेम जेम जमानो आगळ चालतो गयो तेम तेम ज्ञाननी गहनगतिओ जाणवाने ताकात ओछी थती गई.

प्रभु कुबेर स्वामीजीनुं आगमन, केवे स्वरुपे अने शा माटे ते विषे.

खुदसें इत आवनगत, जेही साम्रथ अंकुर,
फेरी पतिनपे जावन रत, हजरत हाल हजुर. १
सोही लख पख बिनु परमही, उतकृष्टि अजमाल,
निज पति येहु जीने वक्षेहु, तेही हुलावे हाल. २
महाद अंश विभूति विद, निज पति कीये प्रथम,
सृष्टि आध्य जेही जेष्टही, तिनकु दिन हुवाही गम. ३
महाद अंशकु मतलबे, निज गम दिये उपदेश,
उत इत काही पोहोचावन, खुदका खरा संदेश. ४
जीनकु व्यापत ना कछु, असुझ अंध अज्ञान,
सदा सर्वदा उत इत, रहत अहोनिश ज्ञान. ५
ओर सब अंश सामान्यकी, अति अज्ञान अबुज,
अंध द्वंध गत सबनकी, उत इत कछु न सुज. ६
परम हंश जुग इस लहुं, ओरले रहत फसाय,
ओर अल्प मति जीवनकी, तिनकी कवन चलाय. ७
लोक चतुर दश त्यौं तसें, कोहु न लहत निज भेद,
जीनु पथ आगहु इश्वर, परमहंश ओरु वेद. ८
बहेहु लाहार शब तेहुनकी, अंध परम परद्योख,
तेहुतेनां कोहु पाइया, सुद्ध कैवल पद मोख. ९

एही अभिप्राय आय हम, कथहु ताय द्रिग ज्ञान,
चौद तबक चकवे गति, करहु चराचर ज्हांन. १०
श्रोता शकल ममोक्षहु, सुनहो शकल चित लाय,
भव उत्तपन्न जीनु कहु, स्थिर स्थावर जंगमाय. ११
ओरु इंद्रादिक सुर सर, अणु आद्येही इंड,
विविधी भात विस्तरहुं, पंचीकरण प्रचंड. १२
अज ईश्वर पंडित कवि, सरस्वति सारद शेष,
सोगति अति हम वरनहु, तिनको ज्हां ना प्रवेश. १४
खुद खावन केवल कुल, जीनु अंश जीव ज्हांन,
आयेहु प्रथुउतसें इत, धरी तन तिलक विरान. १४
तेही तिलक निज नरणवुं, बरणवुं करता संबंध,
जेही लक्षसें ही जीव आयेहु, तेही लक्षसेंही तनुबंध. १५
निजपतिसेंही जबीविलसेहु, रती अंकुर अणीभेष,
तेही कारण तनु परमही, विखरेहु विश्वविदेश. १६
मलीन आद्य सुभ सुरलहु, खांण चतुर कर मीर,
विविधी भात जीत तित जीव, कोहु धरे शरीर. १७
तरण आध्य ओरु कीट अज, रज तज सजे जुश वेख,
सर्व तनु पर निज पतिनके, चिन दिन अणी रेख. १८
चिन भाल अर्णी अम्र जेह, निज वरका फुरमान,
शकल अंश तितसें इत, लायेहु सधर प्रमान. १९
सोही घर सधर प्रमानगी, वानगी विनु नरखेन,
तेही घट घट दर्शावहुं, जबि हम पुरुष अलेख. २०

अंग तिलक चिन्तामणि, अग्र जेही अंक,
सिर धरके जीव जीततित, पति परखे फरत निर्संक. २१
सोनिज पतिसें बगर कर, घुनेगार जिव होय,
खांन पांन जीनु जेही, सरखु नपोखे सोय. २२
आप अपने अवगुण सबे, भुगतत सुख दुःख संच,
निज पति तखतकी ताडना, कोउकु कछु न रंच २३
निज क्रत भ्रत शब ज्हांनही, ज्ञान विना गम गोय,
तबलगी जीवन पाव ही, खुद पति गति न कोय. २४
पण सिर अंक प्रतापसु, खुदसें खरा करार,
महाद मोक्ष नहि गुरु विना, ओरु पोखत तन आहार. २५
खुद घर गम गरज दिनके, तोपे वदित वचन,
नारणदास धन्य तुज गति, रति मोपे तनमन, २६
नारणदास तोइ नरणवी, देखहु निज अधिकार,
स्वप्नंतर अंतर नहि, मम चितवन एक तार. २७
ओरु शकल निज संतही, मम चरनन जीनु चाय,
एही लक्ष तिनही बतावहु, अति अंतर उर लाय. २८
नारणदास निज तिलकके, मरम बतावहु तोय,
ओरु निज पति गम गावहु, तोपे रखुन कोय. २९
हम बक्षि गति तुहीनको, तोहीका तोही उर राख,
देखेहु निज अधीकारी कोहो, तेही जनको मम डाख. ३०
चहेहो लक्ष एही जेही जन, तेही मूजपे मुगताय,
महाद मोक्ष गति मुज विना, ओरसें नहि बकसाय. ३१

एही नफा मुज मीलनका, दरसवु निज करतार,
सदेही अधीक मुज थकी, पावही पद अधीकार. ३२
हम जेही गति मति तुज देही, अजर अमर घर तंत,
उपनी सृष्टि जीनु अब लगे, ना कही जुग पर जंत ३३
एही तन घर एक तुज कहा, परहंस ओर दोय,
कंचित तेही अधीकाथे, पण समजणके सोय. ३४
बाई [३]चतुर्थि अचरत[१] ब्रह्म[२] जोन तनु जेह,

(टीपणीं) नं. १. भगवान करुणा सागरनी पासे अचरतनी आदे चार बाईओ गृहकार्यनो कुल धंधो छोडी कैवल परायण थवाने माटे जेओ भेख धारण करी हमेशने माटे पास रहेती हती. तेओना कुटुंबीओए अचरत बाने अतिशय दुःख दिधेलुं होवा छतां पवित्र बाइ शुद्ध ध्रड अडग विसवासु सर्व गुण संपन्न होवाथी डगी गयां नहिं, एटलुंज नहिं पण स्वघरनी अंदर पुरी निंदाखोर मनुष्योए घरनी चोतरफ आग सळगावी बाळी मुक्युं पण कैवल परायणतामां तल्लीन थयेलां होवाथी घर बळी गयुं पण गुरु भक्त बाई अचरतने कांइज थयुं नहि. आवी बेहद श्रद्धा राखनारनेज कुवेर स्वामीजीं परम पद आपी शके छे. अने धन्यवाद छे के आवां अनेक संकटो आवेलां होवा छतां पोतानी श्रधामां कंई पण कसुरन लावतां गुरु भक्ति जीवन परियंत उठावी छे एथी अमो तेओने धनवाद आपीये छीए.

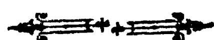
तिनु गति रति मम चरनन, स्वपनेहु नहि संदेह. ३५
रेहेणी रचित वित जत मत, तजी कुल समशेर,
लोक चतुर दश त्रणवत, डारेहु मम सिर फेर. ३६
एक अखंड वृत्ति मुज विषे, तजी शकल कृत कहेर,
सहेज स्वाभाविक शुद्ध चिते, ओर काहु सुनही वेर. ३७
जबि निज लक्ष हम तिनु दिया, देखेहु निज अधिकार,
गुपत कहीथी सो अब कही, नारणदास तोही झार. ३८
जबि हम कहत तुजे सुन अति आग्रहे देई कोल,
कहेना नहि एही काहुनसें, राखी रहेहु सत सिल. ३९
जोगत हम तुमसें कही, ओरु तुम ओरसें केह
कुण अधिक महतम मम, धरी आवनकु देह. ४०

---

२. अचरत बाई ब्राह्मणना कुलमां जन्मेलां हतां, हिंदुस्थानमां ए ब्राह्मणो के श्रीकृष्ण जेवा महायोगीने पण दुःख आपवा कसुर नथी राखी. ब्राह्मणो कृष्णनुंजो भजन करता होय तो तेओनो स्वर्गवास थया पछीज छे. भगवत जुवो.

३. भगवान करुणासागरनी पासे समरथ विद्वान चार बाईओ रहेती हती वेद सास्त्र पुराण विगेरे सर्वश्र भणेली हती तेमां परम पवित्र बाई अचरत विरचीत वचनामृत जुओ तैयार छे.

अब समजेहु संखेपमां, मम उर आसे अंत,
लाख सिखनकी सिख एह, कोउकु दिये न तंत. ४१
एही आगे गति वरणवहु, ओरु निज पति कतवेत,
अब तो कहु निज तिलककी, सुण नारण धरी हेत. ४२
एही सतसंग तुझ तणो, नारण रखी चुपचाप,
अब वदु वचन प्रभावीक. पंडित ज्ञानी समाप. ४३
तेही पण सुने सनमुख रही, अति अंतर रसलाय,
गुप्त ग्रंथ गत खुदनकी. केहुं कुवेर समजाय. ४४



अथ द्वितिये स्थावर तिलक चिन्तामणी कंद २

राग चोपाइ.

जेही निज तिलक भालगति तंतु,
धरे तन सिर जेतनेही जीवजंतु;
सुनहो संत पंडित तेही मरमु,
कहुं जेही अरथ तुरत जाय भरमु. १
नाम रुप गुन जीव तन जेते,
अचर चराचर जल थल तेते
तिलक भाल सर्व सिर अधीकारा,
सुक्ष्म स्थुल अणी आकारा. २
ध्यान शकल सर्व तरणही सारे,
पत्र सर्व ही तिनु अणी आकारे;

भार अठार वनस्पति जातीं,
अणी अग्रे तेहुनकी सर्व पाति. ३

केतेककु कंटक अणीयारे,
केतेककु अनि फल फूलही धारे;
केतेककु आकार अनि भाला,
डाल मुल सर्व पेड विशाला. ४

केतेककु अनि सहु साज सकुला,
केतेककु साखाही अनि मुला;
केतीक वेल अनिन हरन हरकु,
पकर लेत सर्व गीरे तरुवरकु. ५

केतेक पत्र फुल अनिडीरा,
केतेककु अनि शकल शरीरा;
द्रख्त शयलके निज गतिन आदु,
लहो तेंही परख बरखकीं अनादु. ६

बिजग अनांद आध्य अंकुल,
उदित प्रथम अणीकार त्रसुल,
कोई अंकुर बेडग गति दरसे,
पण नीकशत अनि बिज निज वरसें. ७

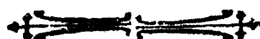
भाल तिलक लक्ष सर्व तरु उगही,
आध्य अंत अणी सार जुग जुगही;

वनस्पति गत एही अनुसारा,
तिलक भाल अंक सर्व तनुधारा. ८

स्थिर स्थावर तरुवर गत पेखी,
विनु अनि अग्र आकार न देखी;
ओरु स्थावर परवत जमी जेता,
भाल तिलक सम अग्रही तेता. ९

कमल नाम पृथवि आध्यही निकशे,
अति अलंकार भाल विनु बिकशे,
बिकसत कली दल कमल सलुने,
सघरी पंख अनि तिलक नमुने. १०

शकल अचर गत एही नर नुपा,
भाल तिलक अनि अग्र स्वरुपा,
कही गति तिलक अचर शिर जेती,
केहं कुवेर अब चर सिर तेती, ११



अथ श्रीतियो तिलक चिन्तामणी कंद ३.

राग—चोपाइ.

चर ब्रह्मा चतुरानन जेही,
संभु सत्वगुन आध्य सबेही,

तेहुनके अरघ वर गत न जगता,
एसी लक्ष चौलक्ष विवगता. १

अवन लोक सुर लोक गगन हो,
विविधी भात त्रेह त्रेह के तन ही,
त्री गुन अरव जग त्रिगत विभागा,
जेही जीनसें उत्तपत्र कहु रागा. २

शब्द स्पर्श रूप रस ओरु गंधा,
पंचतत्व सहीत शिव धंधा,
इंद्रि साज दश अज उत्तपानी,
प्रथक् प्रथक् पिंड मांही रचानी. ३

ओरु विष्नुके अंतःकरण चौनां,
चतुर अवस्था रेह जेही भोवनां,
प्रसिध स्रष्ट तन एही स्थुला,
सरल शक्त व्यापक अनुकुला. ४

धारन पिंड अकड अहंकारा,
अणु आध्ये ब्रह्मान्ड ही सारा,
सोही निज अंश संच गुण शिवके,
अवनी रचि जाजवकीत दिवके. ५

सात्विक गुन तत स्वान्ति शकलमें,
ब्रह्माके रजोइंद्री विकलमें;

शक्ति सरल तुम यही जेही आगु.
प्रोये एही तत्व शकल तिनधागु. ६
दरस अदरस आध्य चक्रवरति,
सुक्ष्म स्थुल अणु प्रोये प्रकृति,
एही परकार निगम चौहु कहेवु:
निज उत्तपन्न गति अगमही रहेवु. ७
शक्ति धागु वटवल अकडाइ,
भये निरंजन पुरुषके अंश पाइ;
आगु शक्ति जीनसें उत्तपानी,
फेरी तेही पुरुष भाश सर सांनी. ८
सोही श्रुति कहत पुरुष ब्रह्महेजा,
अण इच्छा उत्तपन्न गत सहेजा.
ज्यौं रवितें उत्तपन अपनिरा,
फेरी सोसत गत सहेज सहीरा. ९
दिनकरकु अप उपज न भावु,
सोसत पोसन सहेज सभावु;
मारुतसें तन आभ्र जमाइ,
सुन शकल मल रहत छवाई. १०
विलसत सहेज उपजतही येसे,
मारुत धरन न इच्छ करासें;

बिनु बादल काहु गगनही चोले,
करही प्रले ब्रह्मान्डही डोले. ११

निज भभक शब्द अण इच्छा,
भयेहु आकाश मात विनु वंच्छा;
धरे तेही शब्द शक्त अदभुता,
लोक शकल जुगकीये भये भुता. १२

निज नभ भयेउ अनुकरता,
ईत साम्रथ कृत शब जुग हरता,
त्रीये द्रष्टांत ज्ञान जेही कहेवु,
पुरुष ब्रह्म ते यौं अनुभयेवु. १३

निज उपजन करता हंग मांही,
गगन पवन पावक कीश मांही,
यौं गति ब्रह्म प्रथमांनु भावा,
उपजे निरंजन सहेज स्वभावा. १४

आभ्र नाद अप कृत हर्त तंतु,
पुरुष प्राक्रम ब्रह्मान्ड अनंतु,
उपज खपज गत करन नखेदु,
रहत सदा पद ब्रह्म अछेदु. १५

ब्रह्म सनातन अगाध सर्वंनु,
कोटी कल्प जुग अनंत अरचनु;
शकल चराचर व्यापक पदरी
वेद वचन वदीत महरीषीरी, १६

ओरु आनंद सहीत पद भरलु,
लहतमरम कोइ कोईक जगर लु
अखंड डंडम द्वैतवित सभरा,
चौं दशोदश ठस खच धर सभरा १७

इंद्रि अगोचर स्वरूप महादु,
त्रीगुणा तित जेही अगाध अनादु,
ब्रह्म लक्ष एही सकल सरावा,
निगम नेति नहि भाव अरावा, १८

ताहीते निरंजन केही विधी उपाना,
जक्त सहीत जाकेबत स्वप्ना,
सोहीं मम मर्म कहेवु मज सुता,
सुन हो पंडित समजुता, १९

बिनु अंकुर बिज उगहीनां अवनी,
देखो विलोक वांक भव भवनी,
अनंत कोट जुग घन अपरलये,
बिनहु बिजग धरा कबहु न पलये. २०

सोही बिजके जुगमां कुण करता,
जुवो पंडित ज्ञानी धरी सुरता,
लोक चतुर दश पिंड ब्रह्मान्डा,
सक्ति सहीत बिजगत न इंडा. २१

वाहीते आम रहे बिज करनारा,
पंडित ज्ञानीं मन कर हो विचारा,
सोही बिजक निरंजन हीसें निकरे,
इंड कटाक्ष पोमी परही बिखरे, २२

अवनीं शकल अंकुर जव भयेउ,
विविधी भात्य वन खंड निपयेउ,
एक एकपे अनो अन्यही अनंता,
झरी झरी बिज भयेहु नहि अंता. २३

त्रीये द्रष्टांत कहेहु जेही आगु,
त्यौं चोथा बिजग अनुरागु,
शुन्य शब्द आभ्रण रचि निरू,
बिनु बचन जौं धरत सरीरू. २४

त्यौं बिजग अवनी परब उरे,
आपही आप अचानक फूरें,
अवनी तोय नहि इच्छ उपजकी,
सहेज स्वभाव निपज रज तजकी. २५

त्यौं निज ब्रह्म भोमी गत भावु,
करतव करन इच्छ नहि चाहावु,
जड नहि अवन ब्रह्म नहि जड ही,
पण नहि उपज शक्ति सड भडही. २६

ज्यौं त्रिजग निरंजन निरमयेउ,
लोक शकल जड तन कत भयेऊ,
त्यौं चईतन त्रिजग जीव अंशु,
ब्रह्म भोम ऊदितव जुग वंशु. २७

जड चैतन उभये त्रिज मरमु.
एककी जांमण जभी एककूहे ब्रह्मु;
ब्रह्म भोम चैतन त्रिज जामे.
जड त्रिजग अवनी ब्रह्म पांमे. २८

जड त्रिजग निरंजनहीसें भयेवु,
जीव चैतन त्रिज कीने निरमयेवु;
काजी पंडित ओरु संत समेतु,
करो एही खोज जवितो बड वेतु. २९

चैतन अंश जीव अंकुरा,
न भये ब्रह्मसे आप निज नुरा;
सोही नुरके नुरी अकल अभेदा,
लहतन मरम शास्त्र चांवेदा. ३०

सहु ओरले पद रह्रे अटकाइ,
शक्ति निरंजन गुनजस गाई;
निज करता गत कोहु न कहेतु,
जीने करीया जीव त्रिजग सचेतु. ३१

सर्व सीद्धांत सार गत अंतु,
बरनेहु ब्रह्म निराल अचंतु,
बिनहु चेतन सृष्टि क्यौं करी सरजी,
कहो पंडित ज्ञानी गुन धरजी. ३२

जेही हम ब्रह्म अवन कर ठाना,
सोहु तुमने सीद्धांत बखाना;
पादु पांण बिनु करम अजापु,
अंतःकरण ईंद्री बिनु थापु, ३३

पंच तत्व गुण रहीत अकरता,
सोहु क्यौं करी भये जक्तके करता;
त्रीये द्रष्टांत सहेज उत्तपनका,
आभ्र निर रवि शब्द गगनका. ३४

कहुं तिनके करता पुनी सोइ,
सुंनहो संत सरोताहुं सबकोई;
गगन शब्द निरंजनके हकारा,
बोलत पुरुष ज्यौं देवल मकारा. ३५

समदम पवन चरल गति वांमे,
तप्त तेज आभ्रण पुनी जांमे;
ज्यौं ग्रथ सीत संबंध गत जेसे,
त्यौं ग्रथ पवन तप्त सीत तेसे. ३६

धरत रजोगुन रविकर जबही,
झरत निर व्रज वत गत तबही;
त्रीयाही भोम भगवत व्रज ग्राहाये,
खाण चतुर तन उर उपजाये. ३७

उपजत गुन तमो दिनकर घोरा,
शोसतही अपकीनी करी जोरा;
ओरु खट रुतु पुनी याहीतें उपानी,
त्रीगुन धारनसें सो कलहुनिदांनी. ३८

रजो ओरु सत्व संजुक्तही आदिता,
व्रतत शकल मांही रुतु जबि सीता,
रहत सतो गुन क्रत रजु छीमा;
जाहीसें जगत मांही रजु गति हीमा. ३९

रजो ओरु तमो सुर मीलीत संजोगा,
रुतु वसंतही जबि खीलत अमोगा;
विसरत गुन रजो तमो रहे जवही,
ग्रीषम काल रुतु लगत हे तबही. ४०

तजी तमोगुन रजोगुन सूर घरही,
रतु ग्रष्या लगत जगत जळ भरही,
याही रजो मांही तमो कतही प्रवेशा,
रूतुसरद म्रदुल व्रतत सर्वदेशा. ४१

कबहुक गुनतमो व्रतत ग्रख्या काला,
महा भयंकर पोमी परत दकाला;
स्वप्ने रजोगुन ऊपजत भाना;
बिन रूतु ग्रपत जे घनही निदांना. ४२

सीत ओरु हीम बसत गुन हरदये,
रहत लिंग स्थान ग्रष्याई रुतु श्रदये;
नयन निवास सुरके गुन करही,
रुतु वसंतहीं ओरु ग्रिषम समरही. ४३

रहत गलित त्रीतियेहु गुनजेही,
व्रतत आवंत्रही शकल घट तेही;
याहीके सफुरविना रुतु ग्रष्या काला,
परत अचानक विश्वही दकाला. ४४

एही खट रुतु गुन सुरके समागु,
सहेज होत कहत कीये सो विभागु;
अवनीतोय कंचन ओरु खंडा,
दीये द्रष्टांत लहेरी नंग भंडा. ४५

तेसेही ब्रह्म वेदांत बखांना,
चौद लोक नंग भंड उतपांना;
भंड कुलाल ल्हेरी अप पवनां,
नंग सोनार कीयेहु क्रत सउनां. ४६

बिनु करता नंग उपजत नांही,
अवनी तोय कंचन खंड मांही;
त्यौं अप अवन कनक ब्रह्मतेसे,
विनु करता जुग उत्तपन केशे. ४७

समशक्ति सचराचर सर्वमे,
अवनी तोय कंचन पंडवमे;
आद्य शक्ति विनु उ जे न घाटा,
त्यौं सम ब्रह्मसे क्यौं भयेहे वेराटा. ४८

ताहीते खोज पंडित करो संतु,
क्यौं अटकेहु ब्रह्म ज्ञान अंतु.
बिन तंतु तन तुम क्यौं पावा,
पंच तत्व गुन क्यांसे लावा. ४९

इंद्री साज अंत:करण डरा,
जोति शक्ति ल्यौं तंत सफुरा,
तंत शकल एही कीनहु बनाये,
तुमहीतो ब्रह्म निराकारही गाये. ५०

निराकार ब्रह्म सम सरभरही;
अधीक सामृथ करता शब करही;
सोही निज करता कारण पद परम,
बेद कतेब न जांनत मरम. ५१

जेही करता कीये तंत एही सरभी,
आप ततु विना तंत सगार्भे;
सोही करता कुनहु नहि चिना,
सहु ओरले पदारथ ब्रह्मभीना. ५२

निज पदारथ निरंजन म्हामाया,
अन्यो अन्य तिनु जुग उपजाया;
सोही त्रिजग निरंजन हम गाये,
ब्रह्म भोम उपजन बहु पाये. ५३

जोति त्रिजग अवनी आकारा,
तुम जन जांनो एही निज कीरतारा;
अहो पंडित ज्ञानी घर सोधो,
बिनु जांने क्यों जग परमोधो. ५४

तुम नहि चिनत आध्य तुम्हारा,
तोकेसे चिनो निज पति कीरतारा;
आध्य तुम्हारी शक्ति ओरु जोति,
ब्रह्म क्षेत्र मही भयेउध्योति. ५५

एही शब्र करता सोनिज पद नांही,
तुमतो शकल भुले उनहूकी मांही,
भुलेहु आप ओरनकु भुलावो,
जक्त शकलमां करिकरि दावो. ५६
सगुन निरगुन दोहू पक्ष द्रडवाइ,
करत बोध बुद्ध के ॰त ठाई;
सगुन सक्त गुन जोत समेतु,
निगुन ब्रह्म न्हेकरमही नेतु. ५७
वेद पुराण सास्त्र मत एही,
तिनहूकी पर पद परम सदेही;
अपरम पार पार तिनु पारी,
पुरूष अजोन सूषम सूभकारी. ५८
सगर्भ सुद्ध सनातन तनही
अटल सदापद सधर सदनही;
सदचिद आनंद कंदपर पोते,
सरल सत्ता जीनु शकल उद्योते. ५९
रहत शुन्य अजरायल अरसु,
जहां ब्राजही कैवल निजपरसु;
अगम भोम तेही अकथ कथाना,
सदा सदोदित सर्व तित स्थाना. ६०
सर्व उत्तकष्ट शिखर घर सोइ,
बिनु कैवल करता नहीं कोइ;

सोही कैवल पद आध्य अनादु,
ब्रह्म जोत शक्ति गुन आदु. ६१
तेही करता म्हाद अखंड उजासा,
व्यापक ब्रह्म जेहेनुं तेज प्रकाशा;
जीव अंश त्रिजग पूनी तिनके,
कैवल आध्य सनातन जीनके. ६२
प्रथम त्रिजग निरंजन ही अंकुरा,
अणी अग्रे वत भयेहू सफुरा,
तिलक भाल निरंजन गत जोती,
तेज पुंज अणी अग्र उध्योति. ६३
ओर शकल जीव त्रीगुन समेता,
अणी अग्रेव लख उपज सहेता;
थिथर स्थावर अगम हम बरने,
अणी अग्रेव तन शब बन बरने. ६४

तिलक उत्तपत्ति विषे

स्थावर वरणन पुरुं करतां जंगम वरणन शरु थाय छे.

अब जंगम गत मत कहु सारा,
अणी अग्रेव भव शकल पसारा;
त्रीगुण शक्ति सुरलोक समेतु,
अणी अग्रेव तन शकल केतु. ६५

पादु पांण अंगुरी अनी वेसा,
श्रवण नेन अनि डसन विशेषा;
ओरु नासा लिंगस अनि रुपा;
रोम शकल अनि अग्र अनुपा. ६६

निख सिख कुचन सहीत अति राजे,
रसना रसीक अनि अग्र बिराजे;
पंच तत्व अब कहु समजाइ,
तिलक भाल वत सब ताइ. ६७

श्रवण व्योम रसना अप सारा,
नयन तेज अवनि गंध ठारा;
पवन त्वचा स्पर्श सतन सारु,
रोम रोम अणी अग्र आकारु. ६८

पंच तत्व इंद्री मुख एही,
भाल तिलक अनि अग्र सनेही;
बानि चतुर अनि अग्र बखानु,
परा पश्यंति मध्यमाही वैखरानु. ६९

पराही शुन्य श्रवण अनिवारे,
पश्यति ॐकार अनिरेख सिरधारे;
घडन घाट मध्यमा अनिडरा,
वैखरिद्वार अनि स्वरही सफुरा. ७०

घडन घाट मध्यमा अनि केशे,
भयेहु अक्षर अनि गत ताइशे;
त्रीगुन तंत अनि अग्र समेती,
सुनहो संत जीनु समझ सचेती. ७१

प्रथम रजो संबंधही जेही साध,
नेन कटाक्ष अनि अग्र सनांध;
द्वितिये सतोगुन सखसुखपुरी,
गलित वचन अनि दोहु कर जोरी. ७२

त्रीतिये तमोही अहंकार उध्योति
तेही गति अग्र ज्वाल अनि जोति;
तिलक भाल सम त्रीगुन सनातु
ताहीते शकल तन भये अणीयातु. ७३

अंत.करण चतुर अणि भेषा
करन बोध गति जुग उपदेशा,
चित चितवन संकल्प मन सारा
घडत घाट बूद्ध तोलत अहंकारा. ७४

कहहू ताय अणि अग्र बखानी
जेही जाहीकी गत मति अनि छानी
शकल वस्त रज अज लगी जेही
प्रोइ मन वृत्ति अणि अग्र सनेही. ७५

श्रीविधी ःहर समलिता ठस वेदा;
गडयोहु अग्र होइ लेइ बुद्ध भेद्देदा
सोइ निज भेद कहेहु संलाया
खटही शास्त्र मत पुरान अठारा. ७६

चित चितवन तन रहतही घेरा,
छणतसार अगी अंग नमेरा;
द्रढ मजबूत हर्दयेही अहकारा,
कढेहु तोल कंटहिक संसारा. ७७

सोही कंटव अनी अग्र सरेखु,
कहेहु अहंकार हम जवी अनी वेखु;
शरीर सोवन सर्वे एही अंनुकर्मु,
तिलक भालवत रस्वगतीमर्मू. ७८

दश अवतार विष्णूके धरे जेही,
अणी अग्रेव तन सकल सचेही;
कोहुके पादू पाण कोहु पुछ मुखा,
बिनहु अग्र अनी नहि तन रूखा. ७९

शेष सकल सृष्टही शीरधारु,
याहीके पुछ फनी अनीही आकारु.
जीव लक्ष बावीश भप जाति,
अनी अग्रेव तन सकल विजाती. ८०

पंच चतुर कुल नाग नरेशू
मुछ पुछे अनी अग्र सरेशु;
पर्वत कुल अष्टांग अनुपा,
भाल तिलक अनी अग्र नीरूपा ८१

पशू पंखी ओरु कीट पतंगा,
अनी अग्रेव तन सकल उतंगा;
कोहुकी चंच पर काहु कर पादु,
कोहु सिंघ पुछ अनी अग्र अनादु. ८२

रुद्रही बाण एकादश लींगु,
भाल तिलक अनी अग्र उतंगु;
शक्ति सकल संसार सरूपी,
अणी अलंकार शीरभर सांनी. ८३

भ्रगुटी नेन नासा अनी अग्रु,
वेधे सकल कामीकुल नगरु;
देव सकलके देवल अवनीके,
भाल तिलकवत अग्र अनीके. ८४

शास्त्र सकल बहू विधी मतमतके,
कीरखी राज क्षत्री नरपतके;
अनी अग्रेव कर सकल धरनकु,
तुम बंधु अनी करन धरनकु. ८५

देव सकल शशी सुर उडघनही,
अनी अग्रेव कीरणी सर्व तनही;
निगम चतुर चुर स्वर सुरति,
अणी अग्रेव व्याकरण रुचा फुरति. ८६

प्रणवचाप रसना करठानी,
निगम वाण अणी कर्ण वेधानी;
एही अभिप्राय कहेहु सुनो संतु,
सकल जीव क्यौं भये अणी तंतु. ८७

निज कैवलसे सकल जग्र भयेउ,
अणि अग्रेव अंकुर उतपयेउ;
अनी अंकुर आयेहु इत घरसे,
फेरी अनी करत जावन उत घरसे. ८८

विश्व सकल तन सर्व अणीआसे,
निज चैतनगत सहज प्रकासे;
कैवल पद सरभर ठसदेसा,
भयेहू अग्र तांही करन प्रवेसा. ८९

ज्यौं नरपत द्वारेही सर्व दीना,
जोडही पाण अणी अग्र आवीना;
त्यौं कैवल नरपतहीं जीवनकु,
अणी अग्रेव स्तुति सर्व तनकु. ९०

जेसेही भोम्य सजड संलारी,
गडत खील अणी अग्र आकारी;
यौं कैवलही पोमीपुरा,
गडत आस जीव अणी अंकुरा. ९१

आपही आप गडही नहि खीला,
त्यौं जीव मोक्षही लहतन एकीला;
गाडेहु कील पुरूष जभी गडही,
यौं सतगुरुसे कवल जीव भडही. ९२

ताहीत्ये सकल सतगुरु करो खोजा,
बीनहू मोक्ष वृथा क्यौं खुवो रोजा;
हो सतगुरु साम्रथ जगमांही,
तेहु तोलनां सरभर कोहु नांही. ९३

कैवलपद अदअद अजमाली,
पावतही जेही गुरु करत दलाली;
कैवल पद सतगुरु नहि भिनु,
सलंग सुतर सरभर लोहलीनु. ९४

एकमेक अद्वैत गमगलही,
मीले सतगुरु कैवल पद पतही;
कैवल पद करुणामय रहेउ,
अणी अमेव सर्व भव उतपयेउ. ९५

भाळ तिलक चिन सर्व तनु जाये,
सकल जीव चर अचर जनावे;
निज चैतन देह आद अधिकारु,
तीलक भाल तन सब उरधारु. ९६
एही परकार सार सर्व खोजु,
अणी अग्रेव तन सकल सरोजु;
याही अनुभव पंडित मम संतु,
खट दर्शन सुनो भेख अनंतु. ९७
तिलक भाल हम जबी नीरमावा,
सकल जीव आसेही भरपावा;
असंख्य लोक गति कीयेहु नमेरा,
तिलक भाल चकवे पतिमेरा. ९८
ओर सकल करतव उप जुगती,
तिलक भाल गत बिनु नहि मुक्ति;
भाल तिलक लक्ष निज पद पाहु,
अये जेही गति इतवाही गति जाहु. ९९
द्वैत रमण नाम रुप गुण वेशा,
आवन जावन अणी अग्र प्रवेशा;
निज चैतन तन कछुना सह्यावे,
जेही चैनन जड द्रष्ट नां आवे. १००
सोही चैतन जबी भये दर्शरुपा,
तिलक भालवत सकल सरुपा;

निज चैतनके तिलक सर्व देहु,
सोही नमुने हम कीये उपले हु. १०१
याहीत्ये सकल खोज कीयेहु नीहोरा,
तिलक भाल सबके शीर मोरा;
पंथ पक्ष जत मत ज्यौं त्यौं वेशा,
खट दर्शन ओरु द्वादश भेषा. १०२
भाल तिलक तीनुमांही सरदारा,
कर्योंहु लक्ष तनु आद विचारा;
निज पद लक्ष पक्ष नहि पाती,
सोही पद अटलही आद्य सनाती. १०३
पक्ष पंथ मत विविधी विचारा,
द्वैतभाव ओरल्या उपचारा;
सोही मम सकल नकलवत वेशा,
तिलक भाल उपचार विशेषा. १०४
जेही उपचार आद्य अनुसुता,
तेही उपचार सकल संजुता;
निज उपचार सार तन देही,
भाल तिलकवत सर्व सजेही. १०५
पसरण पुष्ट संकीरण संखेतु,
भाल तिलक दोनु अग्र सहेतु;
ताहीत्ये तिलक हम भाल भविता,
ताहीके आकार सकल तन केता. १०६

नची प्रपंच लखोन मत भुरी,
आदी मम ज्ञान तिलक जुग भुरी;
ज्ञान द्रष्टि जुवो सकल विलोकी,
द्वी द्रष्टि करी लक्ष अलोकी १०७
द्रष्ट अलोक आत्म अनुभवनु भवकी,
सोही गतिलहत लोक वित सर्वकी;
याही निज द्रष्ट लक्ष मम न्यालो,
भाल तिलक पख वदीत विसालो. १०८
अणी अलंकार सकल तन धज ही,
ताहीत्ये तिलक भाल भवडीग वजही;
अहो मम सज्जन संत सुनो सरही,
तिलक भाल जाहर जुग घर ही १०९
तिलक भाल नविन नहि नुगता,
आद्य अंत तन प्रसंग संजुक्ता;
सकल जीव मम पद पखदक्षु,
तिलक भाल अनी सब शीरलक्षु. ११०
निज कैवल पदके जीव अंशा,
भाल तिलक उपासीक हंशा;
जब कैवल पदसे द्वैत पावा,
भाल तिलक अंक वहांसे लावा. १११
सरजी सृष्ट उतकृष्ट तबनका,
तिलक भाल शिका आद्य कैवलका;

निज कर्तार उपासजो करहो,
तिलक भाल छापा उर धरहो. ११२
और सकल उपासन वरता,
अधिक विभूति देख कीये कर्ता;
ताहीके उपासक कर्तव शरीरा,
निज चैतन नहि प्रसव परीरा, ११३
कर्तवके आप कर्तवही इष्ट थापा,
कर्तवके जाप कर्तवहीके छापा;
कैवल पद सद चिद पर नेता,
याही नहि कोहु ताही पद वेत्ता, ११४
तव तीनु तिलक अलख क्यौं लखही,
रची पची रहे प्रपंच कीच पखही;
तिलक भाल कैवल मीछ पदमी,
धरही लेलाट पावही पद कदमी. ११५
कैवल मोक्ष इच्छ जीनु भक्ति,
धरही तिलक अणी अग्र संजुक्ति;
भाल तिलक शीर जेही जन करही,
सोही नमुने निज पद संचरही. ११६
जो कोहु अरथ गुपत मत घेहेरु,
लहतन मर्म रूठ बुध वेरु;
करत सुरत आणी अग्र आकारा,
समझत सकउ अकल सुविचारा. ११७

अणी अमेव लक्ष तिलक सोभाला,
मीठे भव फरनजो धरही सकाला;
तिलक भाल ओलखाण अगमकी,
अणी अंकुर उत्पन्न जीव जनकी. ११८

ओर छाप गुण इश ओरल्यांनी.
तिलक भाल घर ठेठ निशानी;
तिलक भाल तेहुते चक्रवर्ति,
अनंत ब्रह्मांड द्वीप सत धरती. ११९

भाल तिलक ओरु भजन कैवलका,
जम जुथ कुल नहि डरप अमलका;
तिलक भाल अनुभव एही नीरणु,
महिमा अतुल गतिकाहा मम बर्नु. १२०

जाहीते सबंध निज पद अनुरागा,
क्यौं न करही तेही तिलक अभागा;
निज पद लक्ष कैवल सद सोइ,
ताहीके तिलक भाल कहेहु जे मोइ. १२१

कहुंजीनु बरण तिलक रंग वेषा,
रक्त श्वेत उभये अणी रेषा;
अब तुम संत सकल मम दासु,
धरो एही तिलक निःशंक निस्वासु. १२२

अति द्रढ अडंग मते मस्ताने,
फरो फंद फरकत रक जग जाने;
निडर निहंग सिंह सम साधु,
रहो उत्कृष्ट सृष्ट मही बाधु. १२३
एही विधि विचरत नर ओरु नारी,
सोही जन कैवल पद अधिकारी;
तेही अधिकार सार श्रुति अंतु,
याहीत्ये अधिक नहि पद परमंतु. १२४

दोहा.

एही निज तिलक निरुपण, खुद घरका शीर तोर;
तेही तजी ओरु तन अरपही, निज पतिनके अति चोर. १२५
अच्युत सचीत चित विमलही, समल सजेहु जेही साज;
कहे कुवेर सो प्रभावनकी, सुनहु नारण गति राज १२६



अथ चतुर्थो निज पति परम प्रभाव कंद ४.

कैवल पद प्रचंड प्रमेतु,
सकल जीववनु सुखद सदखेतु;
सर्व सिद्धांत सार सद एही,
अजर अमर अविगत पति जेही. १

करम काल बिनु सरम ममेवा,
आद्य अंत मध्य तंत सदेवा,
मचल मजोन व्योम गत सहे जा,
सदा ही सर्वदा चकवे पद पेजा. २

आवन जावन गमन बिनुजेही,
ज्यौं कात्यौं अद्वैत वित तेही;
अक्षर आसन तीत तखत सधामा,
निज पति दरसत प्रसिद्ध बहु नामा. ३

महीनत हंश वंशजग जीनके,
सुनहो सकल उत्पन्न पुनी तीनके;
निज कैवल पद परम आदिता,
व्यापक ब्रह्म जेहेनु तेज सदीता. ४

महा अंकुर पुनी प्रसव भयेउ,
जोती सरूप नारायण दरसयेउ,
असंख्य काल जोती झगमगही,
ब्रह्म तेज व्यापक लग पगही, ५

भयेहु इच्छा पील पुरुश निरंजनु,
कारण अंकुर उपजेहु माया अंजनु;
महामाया कारण अंकुरही,
केतेक काल तपी ब्रह्म [illegible]ंकुर ही. ६

तत्व चतुर पुनी ताही ते उपाने,

प्रथक प्रथक कहुं जबी जुग जाने;
आनंद तत्व महातत्व तनु तेही,
ताहीत्ये प्रकृति तत्व धनंजे सजेही. ७
प्रकृति उच्छा चाह जबी भयेउ,
त्रीगुन अंकुर सुक्ष्म नीरभयेउ;
त्रीगुन तपत कही जुगही जमावा,
ब्रह्मतेज संजुक्त शुद्ध पावा. ८

भइ शुद्ध सचेत सुगम गति चाहाइ,
थुल अंकुर अनुकुल उपजाइ;
तपे बहुकाल तत्व पंचभुता,
ब्रह्मभास तेजु पके भजभुता. ९

चतुर प्रकार विभूति वियानी,
भई परिपूरण हिरण्यगर्भ भवानी;
निज अंकुर निरंजन विभू पुरे,
तपोतप चतुर तंत त्यौं स्फुरे. १०

सुक्ष्म स्थुल कारण महाकारण,
भये ए चतुर पंचमुं परम कारण;
परम कारण परिब्रह्म अरुपा,
व्यापक सकल सम सत्व सरुपा. ११
एही पंच भोग्य कारण द्वैत भयेउ,
सम दम सचर अचर अजर रहेउ;

हलन चलन विनु गवन गंभीरा,
उपजन प्रसव खेतवत शीरा. १२
निज कैवल वृक्ष वत पद जासे,
जीव अंकुर बिज अनंत उपासे;
सोही अंकुर बीज विखरे विदेशा,
ब्रह्म भोमी कीये प्रथम प्रवेशा. १३
निज बीज अंश संच बीनु सेषु,
प्रणव तंत ब्रह्महीसे भयेवेषु;
प्रणव तंत ब्रह्महीसे जब लहेवु,
फेरी निरंजन भोममें गरकीयेउ. १४
पुरुष निरंजन सो आद नरेहा,
पके तांही बीजग प्रणव तनु देहा,
बोहोरु निरंजनसे अंश भये भिन्ना,
अकल तेज तनु उनहुसे लीना. १५
अकल तेज तनु निकलंक देही,
धरत ध्यान जोगी दर्शत हे तेही,
सोही निःकलंक तनु तत्वही उपासा,
शक्ति भोम पुनी कीयेहु निवासा. १६
कीयेहु निवास शक्ति भोम जबही,
चंचल वृत्ति मति लीये तन तबही,
प्रणव तेज मीली एकरस भयेहु,
प्रकृति अंश पुनी बीज हीरणवयेहु. १७

अद्रष्ट विभुति त्रीये नुतन पावा,
निज चैतन पुठल लपटावा;
लपटत लीन तद्वत मांही भयेउ,
निज चैतन आप रुप करी लयेउ. १८
वाहीमांही ओही ओही वाहीमांही भीजु,
चिष् गलतान सगर्भि भये बीजु;
भये विभुतिवान जबी निज अंशु,
उद्भव आक्रंत ह्वी सहेज आकंशु, १९
प्रकृति प्रेरक बीज विलसभयाना,
खटगुण घणमांही कीयेहु पीयाना;
जेही खटगुण घण मीली अपअवनी,
प्रसिद्ध प्रभाव ठावकहु गत्य सउनी. २०
प्रथम अवन्य अहंकार घण ठाई,
स्वकाश पोगर अचंत कठणाई;
एहीत्रीये घण मीली अन्य स्थाना,
त्रीगुण नीररस्व सहीर मेळाना. २१
रजोगुण अप सतोगुण शीतलाइ,
तात्वर गुण तमो पाण बतलाइ,
त्रीघण भोम्य अप त्रीगुण समेता,
एही खटगुण घण मीलीत सखेता. २२
एही विधि गुण अप अवन्य रेळामे,
चहीतन बीज बोहोरु वाही खेत जामे;

जामत बीज त्रीये गुण अप भीजे,
सहीर सत्वे नव तत्व तनुहीजे. २३
सोही नव तत्व तनु सुक्ष्म शरीरा,
त्रीगुण भोम्य मुळ गडेहु सधीरा;
षकर पोषी मुळ जब रजुराये,
पंच तत्व थुल प्रगट देखाये. २४
सुक्ष्म स्थुल तनु प्रगट प्रसीना,
खटगुण घणसे जुगल एही लीना;
सुक्ष्म स्थुळ कारण महाजेही,
परम कारण पंचमो तनु तेही. २५
भयेहु पंच परम कारण समेता,
सकळ साहाज कीये आत्म सचेता;
खट गुण घण पंच पचिश प्रकरणु,
दश ईंद्री ओरु अंतसकरणु. २६
रोम रोम रग रग नीख शीखही,
औठहाथ माप सुगम सवेखही;
सकल सोज संपूरण शरीरा,
भयेहु रमण जबी प्रणव समीरा. २७
हलन चलन इतिहास भई मुरती,
जब चहीतन अविकाश पाये फुरती;
भये चहीतन अविकाश निज आपु,
सकळ शरीर हीरजीनु जेही व्यापु. २८

एकदम अमल राज सर्व वेहु,
करन लगे कैवल अंश जेहु;
चर्म सचेत वेत होई चाले,
जहां जेवी विभुत युंगत तेहु महाले. २९
एही परकार सकल चर अचरा,
निज चहीतन खेले घट सचरा;
खेलत खेल खलकही खेलारी,
पाण चतुर मही आप विसारी. ३०
शरीर संबंधी इंद्रि रस भोगा,
पांच पचीस संजुक्त संजोगा;
याहीके संघ मीली भये याही रुपा,
वीसर गये निज सरुप अनुपा. ३१
भुलेहु आप अहंग निज अंशा,
पद कैवलसे आयेहु जेही हंसा;
पंच शरीर कीरवश भयेऊ,
निज गति गवन प्रोक्ष पर रहेउ. ३२
सहेज अचेत साक्षीवत सबके,
ज्यौं लीलपीत काच मांही भास रबके;
निज अजमाल हालमति चलही,
प्रकृति प्रभाव चाहाव हलमलही. ३३
परबश प्रोक्ष परेहु परमाता,
अहंग गम कहत बर नया तयाता;

विषियानंदन भयेहु भव भावी,
निज लक्ष तजी भजी हुये जड दावी. ३४
जडहीके लीगत जडहीके सभावा,
जौं अजा संग गति सिंह दुरावा;
आप अव्यक्त व्यक्त वश बंधु,
तजे [illegible] गति वृत्ति शरीर सबंधु. ३५
यौं [illegible] तांही वरत्येहु ज्यम त्यमही,
प्रथक् प्रथक् भिन भिन गति गमही;
एही विधि सर्व निज आप भूलाना,
निज कैवल अंश रहेहु न ज्ञाना. ३६
वीसरेहु ज्ञान अगम जबी आपु,
भयेहु अल्प जीव तपे त्रीये तापु;
तपतही ताप आप बिनु चिना,
फरत काल वश रहत आधीना. ३७
जन्म मरण भये भव विकराला,
लीयेहु शीर होइ करमी कराला;
भ्रमीतम चेत वेत गति टारी,
विधिकर भये जड अधिकारी. ३८
थये अति सकल विकल एही भावा,
अंध परमपरा बहे परमावा;
एहु अज्ञान घोर गत पेखी,
निज कर्ता पद दीयेहु उवेखी. ३९

जद्यपि जीव मति करत विलापा,
तन करता करता करी थापा;
त्रीगुण शक्ति ओरु जोत सरुपा,
ताहीके परह्या ब्रह्म अकल अरुपा. ४०

एही कर्त्ता तनके पंच गावा,
सकल शास्त्र मत एही फुरमावा;
निज कर्ता गत काहु नहि पाई,
सर्व ओरल्ये पद रहेहु डेहेकाइ. ४१

पंच शरीर आप होइ बेठा,
लह्याहु न मर्म आप अंश ठेटा;
बिनु निज मर्म आप रहे अजही,
तन करता तीनकु तन भजही ४२

रहेहु आप निज अंश अयाना,
निज कर्ता क्यौं जायही पहेचांना;
निज कर्ता कैवल पद सोइ,
जाहीके अंश आपना आप ओई. ४३

तेही कर्ता जीनु अंश आप निजु,
पंच भोम्य परसेही जेही बीजु;
परसत भोम्य पायेहु तन एही,
जाहीके संगत्य अंश भूलहु सदेही. ४४

भुलत सदेह घेह नहि पावा,
जाही घरषे प्रथमही अंश आवा;
सोही घर पावन चहीये कोहु आपु,
निज सतगुरु संग करही मेलापू. ४५
सरल मुमुक्षू होइ शुद्ध चहीतन,
करही अरपन चरने तन मन;
अहो कर्ता कहीए दोहु कर जोरी,
आयेहु सरन स्वामी जूवो मम ओरी ४६
कोमल वचन शीतल समुदामी,
पाही पाही गुरु तुम परणामी;
जयेती जयेती गुरु परम निदानु,
मेटो मम त्रास पास अज्ञानु. ४७
सकल देव देवनके हो देवा,
परम कृपाल दयाल समेत्रा;
तुम बीनु सहाय करन कोहु नांही,
लोक चतुर्दश उत इत माही. ४८
निज मम स्वरुप पंच तनु पारी,
सोही दरसावो गुरु करुणा पसारी;
ओरु निज घर कर्ता तुम गावा,
ताही लखवावो जाहीसे हम आवा. ४९
एही परकार करही स्तुति,
गुरुपद प्रेम धरही मज भुती;

रीझे गुरु जबही अगम गत दाता,
देही सर्व लक्ष करही सुख साता. ५०
अब तेही बचन सूनो हो सतगुरुका,
सकल सिद्धांत सार निज घरका;
निज घर लक्ष पक्ष जेही जेतु,
सहित उपास कहत गुरु तेतु. ५१
कैवल पद निज घरके उपासी,
चीहीन चलन तीनु कहुं परकाशी;
अति गति अगम सूगम नहि गाइ'
त्रीगुन शक्त नहि जोत अटकाई. ५२
क्षुद्र देवही उपासना जेती,
अल्पज्ञान जानत सब तेती;
ओरू प्रपंच पंच तनु देहा,
जाहीत्ये अंश सघी आप अहंमेहा ५३
निज कैवल कर्ता अंश आपु,
ताहीकु समझ उर करही समापु;
तेही लक्ष जेही सतगुरू लखवावो,
जो गुरु चरन कमल जेही आवो. ५४
तेही लक्ष जपत जपत जन जेही,
पावही कैवल पद नहि संदेही;
छाप तिलक तीनु कहुं समझाइ,
जेही कैवल पद लक्ष अनुराइ. ५५

तिलक भाऊ तनु अकल अनुपा,
सोही हम अगम कलोउ जे नीरूपा;
निज अंकुर अणी रूपगति आवा,
ताहीते तिलक अणी अग्र बनावा. ५६

कैवल पद भक्ति जीनु जानी,
तिलक भाल तनू अंक निशानी;
द्रढ एही तिलक सलख कहुं भेदा,
रहे जेही लक्ष पक्ष बिनु वेदा. ५७

अलग उदार रहत जग सेती,
हृदये ध्यान निज पद परमेती;
धरत ध्यान अलमस्त भवितु,
रहत सकल मही तगन अतीतु. ५८

निज कैवल जन लक्ष एही गाइ,
चीन सकल उपलेहु लखाई;
गति अंतर ओरु परम अगाढु,
निज कैवल जन सरल अगाधु. ५९

लक्ष पक्ष बिनु रहित समारा,
आप निज अंश केवल एकतारा;
जगत जूगन तेही सह तन मर्मा,
निज पद ध्यान धरनजे निःकर्मा. ६०

अति गति गुपत जपन तेही जापु,
एक रस सलंग चलंग नहि मापु;
एही लक्ष अलख खलक नहि पाइ,
जाने सतगुरु जीने दीया हे बनाइ. ६१
गुप्त प्रगट गति गम कही जेही,
निज कैवल पद जनकी सबेही;
एही गति रेहेस संतोकी सद कहेउ,
निज कैवलके उपासी जेही भयेउ. ६२
आरुढ मति गत कही हम जीनकी,
तजी एही खलक अलग रहे तीनकी;
अलीत रहत जगमांही जन जेही,
प्रभु पद प्रेम नेम कहुं तेही. ६३
काम क्रोध मन क्रोध न धरना,
सहेज स्वभाव साव नीस तना,
रहत सदा संग जगत समीपा,
ज्यौं कमला जल मींही ओरु छीपा. ६४
सकल वहेवार वर्ततही जगतका,
उर अंतर दृढ कैवल मतका;
स्वप्न समान जानी जग हेता,
रहत उदास तासही हमेता. ६५
जौं कोहु पुरुष पकरेहु बेगारी,
वहेतीनु बोज अंतर नहियारी;

त्यौं निज जन भुगतही भव पारा,
उपले ही मन नहि अंतर विकारा. ६६
रेण दिवस रस बस भरपुरा,
प्रेम अनंग अंग चकचुरा,
हर्ष शोक नहि करत मेलापु,
त्रिविधी ताप नहि तपतनतापु. ६७
सुचीत कर्म अति परम पवितु,
वर्ते एही जुगतमे वगत सहीतु;
अंतर जत मत कीरतिही भिना,
जाने कोहु सज्जन जन एहु झीना. ६८
प्रगट जाप कैवल मुख जपही,
गुप्त मंत्र गुरु ध्यान धरपही;
अर्णि एही विगत जगतमे जे जनकी,
एही विधि रहत रेहेस तन मनकी. ६९
सोही निज जन कैवल पद प्रानही,
रहे जांही अचल बोहरु नहि आवही;
धर्म अनेक जगत मही जेता,
आप आपनेही देवनकेजु हेता. ७०
जेही जाकु जजत भजत तांही जावे;
कैवल पद गत कोहु नहि पावे;
जेही पद श्रेष्ट सकलमे आन नथी,
लहे कोहु संत कैवल निज पंथी. ७१

केवल पंथ कायम निज आदु,
कीयेहू प्रगट हम हुता जे अनादु;
सोही केवल पद इच्छत कोई,
लेहोसत नेम लखावु जबी मोइ. ७१

सकल जीवनकी केवलपद आशी,
गुप्त उपास प्रगट नहि प्रकाशी;
कहुं जेही गुप्त उपासना सबकी,
अणी अप्रेव तनु भये जीव जबकी. ७२

गुप्त भाव सर्व कही उर आसे,
निज घरसे छैत भये जबी जासे;
याहीसे सकल तनु अप्र अनीका,
जेही नमुना घर ठेठ धनीका. ७४

तेही नमुने हम तिलक बनाये,
हुती गति अगमसो सुगम जनाये;
ओरु सर्व तिलक जगतमांही जेता,
मन मुखीयंगत कीयेहु सब तेता. ७५

आद्य अंत कोउ नाहीनां विचारी,
आप मतकी गति लियेहु समारी;
जौं कोई पुरुष जंखनी जपे जाई,
होइ गई सोइ बात कहत सुनाइ. ७६.

होनेकी अगम अब सोही नहि जाने,
जद्पी कहत तेही जग सत माने;
यौं सिद्धि बल जने जगत जगावे,
देखाई सामर्थ पीछु कर्तव द्रढाये. ७७

कर्तव पंथ गुन भजन जननके,
प्रकृति पुरुष ब्रह्म अधिक तीननके;
गही मत सकल विकल कीये जगकु,
फंदे सर्व जीवही रोकेहु निज मगकु. ७८

ताहीते खलक घर अलख मपेखु,
रहेहु ठगही वट पड धरी भेखु;
जेही घर अलख खलक कुल पंथु,
आयेहु वांहीसें सर्व भुले इत पंथु. ७९

आयेहु जेहीनां गति रहेहु कोई,
विविधी भाव्य वर्तत कहुं सोई;
जीवही सकल अंश एकही सरीनु,
अधिक नुन्य तत्व निश्चे भये भिनु. ८०

तेही गति अकल सकलमही रहेवु,
सुनो ताही मर्म अवही कहेवु;
अवनी तोय तप गगन समीर,
रहेहू जीव ताके तेहुसे शरीरा. ८१

सोही विधि बिगत जुगत तत्वनकी,
विभुती विभाग भिन्न कहुं तीनकी;
भाल जुगल अष्ट अवनी समेहु,
तत्वनी चतुरके जुगलही मीलेहु. ८२

भयेहु शरीर भाग मीली तन येते,
रहेहु स्थावर तरवर भार जेते;
भाग चतुर देही अवनी विभागा,
चतुर तत्वके चतुर मही पागा. ८३

एही दशु तत्व भये जीनु तन सारा,
होही थलचर रहे अवन्य आधारा;
बिभाग चतुर द्वैही अपके अमीता,
ओरु चतुरके चहु मीलेही समीता. ८४

एही दशु भाग मीलेहु तन जीनका,
सदाही विलास तोय मही तीनका;
तेज तत्वके लीयेहु खट भागा,
चतुरके चतुर मेलाये अनुरागा. ८५

एही खट चतुर भयेहु तन भेसा,
करत जीव तेही अगन्य प्रवेसा;
करहु जीव ताही प्रगट नीहोरा,
भखत अगन्य होई मगन चकोरा. ८६

भाग खष्ट पुनी पवन पर्मेती,
चतुरके चतुर वैभाग समेती;
भये तन ताही खग गगन पसारा,
उडही उडही फेरी अवन्य आधारा. ८७

व्योम विभाग अमल खट होई,
चतुरके चतुर लीयेहु मांही सोई;
मीलीत भाग एही भये तनु जेहा,
रहत वास करी सुन्य स्नेहा. ८८

प्रसत न पोम्य व्योम रहे जेही,
अनल हुमाहु आद्य खग तेही;
कारण तत्व चौ गुण घण भागा,
लीयेहु सकल सम करी अनुरागा. ८९

एतेही तत्व मीलीत तन देवा,
तेत्रीस करोड आद्य अहंमेवा;
पंच तत्व महाभूत विभागा,
अब तेही कहुं सुनो धरी अनुरागा. ९०

विभाग चतुर पंच अवन्यही आयु,
ओरु चतुरने मीली एक समायु;
मीली एते भाग अवन्य निज आदु,
त्रीगुन स्वाथ जेही भयेहे अनादु. ९१

पुनी अपके खट त्रीभाग मेळतु,
ओरु चतुरके मली एकही तंतु;
एतेही विभाग मीलत तन तोइ,
रहत अमीत सदा शीतल समोइ. १२

भाग चतुर पंच अग्नि विशेषु,
चतुरके मीली एकताहीमे मीलेषु;
एही दशु भाग मीलीत तन तेजु,
रहत प्रकाश सदा तपत हमेजु. १३

विभाग मारुत नीजु नव परमाना,
ओरु चतुरके मीली एक मेलाना;
भयेहु पवन एत्ये तत्वहीसे ताइ,
रहत सर्व सचर गगन पसाइ. १४

व्योम खष्ट पुनी त्रीयेहु विभागा,
ओरु चतुरके एक मीले अनुरागा;
भये ताही सुन्य तत्व मीली एते,
अधर अव्यक्त व्यक्त कहुं केते. १५

बार पार विनु अमर सनादी,
चतुर तत्व न कीजे आद अनादी;
एही प्रकार विभाग पंचभुता,
भयेहु वैराट ताइ अति अद्भुता. १६

बोहोरु तीनकी अवस्ता पुनी सोइ,
अंत:करण सहित कहुं जोइ;
जाग्रत अवन्य स्वप्न अपसेती,
ससोप्ती अगन्य पवन तुर्येती. ९७

उनमुनी सुन्य सदाइ समदमही,
कहेहु अवस्ता पंच तत्वनकी गमही.
अंत:करण रहेउ तेही तीनमे,
सुनहो मर्म अब कहुं जेही जीनमे. ९८

मनोमय अवन्य बुद्धि अप हीरा,
अगन्य अहंकार चित रहत समीरा;
व्योम तत्व पंचमो सर्व शेषा,
अंत:करण ताइमे चिद तेसा. ९९

जाही तुम कहत सकल चिद ब्रह्म,
ताही हम लहत अंतकरण मर्म;
अंत:करण अवस्ता कही जेही,
मोक्ष मोक्ष पंच तत्वनकी तेही. १००

आन्य अवस्ता अंत:करण ओरु.
रहेहु सुक्ष्म अंतर सर्व ठोरु;
पंच अवस्ता पंच तत्वनकी मांही,
जेही विधि वर्तत कहहुं बताही. १०१

जाग्रत अवन्य बीजग अंकुरा,
करत सकल तीनु उदीत स्फुरा;
जाग्रत अवस्था अवन्य कही जबही,
हिरण्य अंकुर बीज जगावत तबही. १०२
स्वप्न अवस्था नीरही निरमयेवु,
प्रसव बीजग उदवीत गति भयेवु;
सुसुप्ति अग्र रहेहु कही जेही,
करही परले पद द्रष्टे सवेही. १०३
तुरी पद पवन रहन निज भेदा,
साक्षी सकलनो विमल अकलेदा;
उनसुनी सुन्य सदोदित उदारी,
ब्रह्मविदभाव साव अविकारी. १०४
तत्वनी अवस्ता कीयेहु सर्व सेती,
विभुति विभाव लावजीनु जेती,
एही अनुकर्म कहेहु द्वैतनके,
तत्व पंच सप्त जीव विधि तनके. १०५
भयेहु उपाध विभ्रांती भातिएहु,
याही विचरणे अंश आप भूलेहु;
सजाति विजाति भर्ये भर्म अनेका,
रहेहुनां लक्ष निज आद्य घर छेहेका १०६
विनाहु निज लक्ष पक्ष न पागा,
जांही तांही उत इत जीत तीत लागा.

अंधा धुंधईयु सकल बीहाये,
रहीना समृद्धि जेही घरसेजु आये. १०७
एते हीं भर्म परेहु जीव घोरा,
छूटन न पाव ही आप मति जोरा;
ताहीत्ये कहत हम बारंवारु;
ग्रहो सतगुरु संग करे भव पारु. १०८
अगम बोध अनुभव गति आपा,
दर्शावही निज आद्य अद्यापा;
सोही आपा अविगत निज हंसा,
जेही कैवलसे आयेहु बीज अंशा. १०९
तेही बीजग निज स्वरुप सबनका,
चढेहु पडल इत पंच तत्वनका;
सोही पडलनके वेदक गुरु देवा,
काढे तरतकाल सुझ ही मर्व भेवा. ११०
अगम निगम ओरु आद्य अंतनकी,
निज कैवल पद अंश आप तनकी;
परही सुझ एही विधि जबी आदु,
करही बोध गुरु करुणा सनादु. १११
सुनत बोय सतगुरु मुख बानी,
जेही आप जकलसो कलही नीदानी;
कलेहु आप अविगत निज सोइ,
स्वयंग स्वरुप केवल अंश मोइ, ११२

भयेहु मोय सोही अनुभव जागे,
निज कैवल पद जबी लक्ष लागे;
लागत लक्ष चक्ष द्रीपाइ,
कैवल पद आप अंश एकताइ. ११३
सकल सजात भात मम भेसा,
दरस परही धर मर्म सदेसा;
एक अनेक अनंत अपारा,
मम स्फुरनसे भये हु विस्तारा. ११४
सकल सायुज संजुक्तही समेवा,
सोही समझन हंग आपम मेवा;
तेई हंग आप व्याप जेही वस्तु,
समझ सरुप कैवल अंश मस्तु. ११५
मस्तु ममेती जाण तन निजु,
जेही कैवलसे उदीत व्रज बीजु;
सोही व्रज बीजुके जाण जीनु अंगा,
ताही जाननके तन ही असी हंगा. ११६
स्वजाण सरुप कर्ता हीसो अयापा,
जाही अंश जाण ईत सर्वनका आपा;
सोही तनु जाण आपनपु जेही बुजे,
कर्तव्य सकल ही कर्ताहीनका सुजे. ११७
तेही आप अकल सकलमे समयेवु,
बीजु सतगुरु पक्ष प्रखवम पयेवु;

ताहीते कहत सतगुरु किरतारा;
आद्य अंत मध्य सरजनहारा. ११८
चौदेई लोक ब्रह्मांड अनंता,
कुल चकवे पत सतगुरु माहंता;
सजाण स्वरूप कर्ताही जेही गाये,
सोही सतगुरु तनु जुग दरशाये. ११९
रचेहु सृष्टजीने विविधी विभावा,
सोही खुद खावन देखन बोहोरु आवा;
बिछरेहु अंश जबी शेम बीज जगता,
भयहु विसरजन आप बीज वगता. १२०
ताहीते सकल सर्व फरत बेहाला,
आपनी युगत विधिनी खेद नीकाला;
खट नय चतुर कथेहु जे अठारी,
बके बुझ बीनु सर्व आपन वीसारी. १२१
कोहु निराकार सुन्य निगुनही ठाना,
कोहु पंच तत्वगुन सगुन वखाना;
याही विधि सकल नकल कृत ठावा,
कुल कर्ता काहु समझन ..वा. १२२
सगुननीगुनके जानन जाण पदही,
रहयुं सर्व मध्य चीने वीनु अदवदही;

देखीत सकल जुग फरत अचेता,
जबी कर्तार सतगुरु तन लेता. १२३
धरी तन सुगम जुगमे जशवंतु,
दर्शावही निज आप रहे जे सचंतु;
सचेत स्वरुप आप दर्स करही,
बोहोरु निज घरही प्रसावे जेही घरही. १२४
घर धर सधर अधरही अनुपा,
स्वमेव सनात जेही स्वजाण सरुपा;
सोही कैवल पति पुरुष पुरंजना,
स्वजन सकलके अकल कर कंजना. १२५
अजर अरस पर तखत बिछाना,
नि:सत्व खग मध्य अटल अस्ताना;
थकीत लखत गीरा तखत समानही,
निजपति परम कैवल तहां बीराजही. १२६
कैवलनां उताही काहीं हुसें भयेवु,
सुनहो मरम जीन भरम उपयेवु;
विनुबल वटपट प्रसिद्ध प्रमोघ,
नवलजहां कवल सो कैवल अमोघा. १२७
एही निजपति गत विगत विसालु,
कीयेहु आरोपनांउ कैवल भ्रमालु;
कुनहीके दुलहावा कुन दुलहांनी,
जाहीकी कैवलतां उमाल पेहेलवानी. १२८

याहीकी जाण अंश उलट सुलीटा,
फानीनां उमाल भइ गरक समीटा;
जबी दुलादुलनी सबीज करे जोगा,
तांहीन परत कछु बरमाल परोगा. १२९

तीहु दुलहानी जाण स्वजाण समानी,
रहे ईतनांउ तीत रवि नीरबानी;
नीरबांनी नीराल नेतीपर परनेती,
पावहीसो पद सद सतगुरु सेती. १३०

जबी सतगुरु कीयें सरजनहारा,
सरजेहु जांहीसे जांही समावनहारा;
अहो काहा कहुं सतगुरु उपमाइ,
नहि सरभर कोमे मुजकी दुहाई. १३१

अब सतगुरु कर्तारनकी वानी,
सुनहो कहत विधी जुग उतपानी;
रचेहु सकल जेही विधी करतारा,
अनंत भात गत मति विस्तारा १३२

ताही विधी विगत जुगत जेही जीनकी,
कहे सतगुरु नाम रूप गुन तीनकी;
श्राता सन्मुख चित्त रखो मम बचनां,
कहत कुबेर अविगत पति रचनां. १३३

दोहा.

निज कैवल सदोदित सद, अखील एक अनुकर्म;
उपजेहु मोज मोदीत तीनु, द्वैत रमण जीनु मर्म. १३४
प्रथम कीनेहु निजवृत्तिखट, रचेहु विश्व जीनु आद्य,
आप अलग गति सलंगही, केहं कुवेर रही स्वाद्य. १३५



अथ पंचमो कर्तावृत्ति केद. ५

चोपाई.

जेही अविगत पति अगम अपारा,
सजाण स्वरूप सो कैवल किरतारा;
सोही करता रहु करन जुगठानी,
वृत्ति खट प्रसिद्ध प्रथम उतरानी. १
अगम प्रकाश ब्रह्म पुनीत उठाइ,
वृत्तिये संजम भोग वृत्ति उपजाइ;
क्रिया चतुर रति गति करन विभागा,
कीये सर्व विश्व घट बीज अनुरागा. २
पंचमी चेतन वृत्ति उपजी उमेदा,
रची रोउ रोउ वृद्धि करन कलेदा;
एही वृत्ति पंच सजेहु सर्व साजा,
रहे जौं अचेत चेत बीनु दामा. ३

वृत्ति अष्टमी कर्ता अंश उपासे,
आप अंश होइ सब घट बासे;
एही सट वृत्ति कृत कीयेहु अपारा,
अनंत भात विधीतत्व विस्तारा. ४
सोही तत्व तनकु वीगते सुत साखी,
सरजी क्रिया वृत्ये घट भिन उपाखी,
जेही तत्व युगत्ये कीयेहु चराचरही,
सुनंहो सकल विधी सोही बिस्तरही ५
निज पति परम पुरुष सो सुजाना,
कुलकर्तासो कैवल जे निदाना;
तेही निज पतिकू भयेहुजो हुल्लासा,
उपजी मौज जबी करन बिलासा. ६
वृत्ति खट तुरत प्रेरक करी जांहांना,
शुद्ध संकल्प निश्च करणा निदाना;
जेही वृतिसेही स्फुरेहु तत्व जेता,
पृथक पृथक भिन भिन कहुं तेता. ७
प्रथम प्रकाश ब्रह्म वृत्तिके बिभागा,
उपजे महातत्व तीन तत्व अनुरागा;
कहहु नाम तीनकेहु पुनी जेही,
विकाश कुंभस्त अविकाश तीनु तेही. ८
द्वीतीये संजम भोग वृत्ति बिस्तयेवु,
पंच सत्व तीन ताहीहुसे भयेवु;

अनंग चक्ष सत्व चक्ष वर्गज्ञानु,
त्रीतीयुं कालचक्ष सत्व अभिरानु ९
वृत्ति त्रीतीयेहु इच्छा असक उपाइ,
तत्व स्फुरण बोहोतेर भये ताई;
वृत्ति किया चतुर्थी विभाग बिचवनी,
उलट खुलट भइ कर्ता तनु भंवनी. १०
उलट खुलट तंत त्रिभाग मेलाइ,
अनंत कोट तनु बीज उपजांइ;
वृति पंचमी चहीतन चित पेरी,
वृत्ति कियाकृत बीज वृद्धि कीयेघेरी. ११
एही वृत्तिपंच संच जुग सारा,
अकेकी विभाग जेते भइ कही सारा;
वृति अष्टमी कर्ता अंश स्फरा,
त्राजे सर्व घट त्रउ हाल हजुरा. १२
भयेहु अंश कर्ता एही बिधी पोते,
करत रमण पण गणीतन जोते;
अरव अनेक खरवही अनंता,
अगणीत पद्म शंख नहि अंता. १३
येसेही अंशा हुयेहु अनुसारा,
खुदं खावन्द केवल किरतारा;
जेही केवल बीनु वृति कृत कंदना,
सोही स्फूरेहु होइ विश्ववृति भंदना. १४

दोहा.

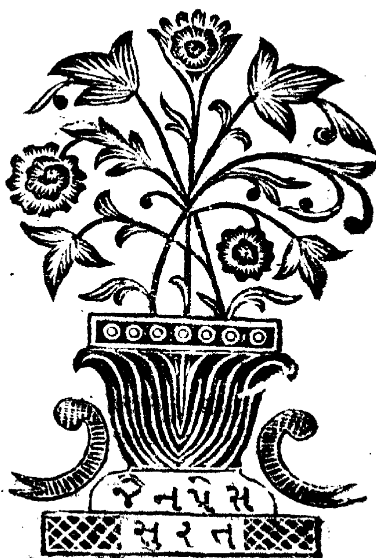
वृति पंच पसरन करी, कीयेहू सकल जहांन,
छट्ठी कर्ता अंश वृति होइ, आप निवासेहू आन. १५

एही खटवृत्ति प्रथु मूलसे, भयेहु सकल विस्तार;
विविधी भात भिन भिन भव कहु मम कृत अनुधार. १६

श्रोता सकल सुनहो मम भव उत्पन्न भल भेद;
जेही कर्ता गत्ये कुल रच्या, सोही गति लहत न वेद. १७

तेही गति सकल सुनावहु, लोक चतुरदश साज;
स्थावर जंगम जल थल सुर तनु सहित समाज. १८

इति पंचमो कंद समाप्त.



"कुवेर स्वामीजीनुं स्तवन"

समर्थ सदगुरु देव, देवाधिदेव दयालम्;
महा मंगलमय मुरत, मुरत सुखरुप रसालम्. १
दिव्य तनु घनश्याम हाम, हद सब ही पेलायत;
प्रसिद्ध प्रौढ पति महाद, अंश सब तांही मेलायत. २
एसे ही परम गुरु महाद, शांत सदरुप अनोपम;
सकत अंश सेवित, विभूति करन निरुपम. ३
शोडष चिह्न संजुक्त. तनु धर तेज अपरबल;
विभूति सोल संजुक्त, कला खट दश जीनु कल. ४
ऐश्वर्ये जीनु महाद, मनोरथ पूरे मनका;
करन जुग जणवेस, प्रगट कीये ज्ञानका डंका. ५
भोवन त्रीये टहंकार, ज्ञान गम गर्जत अदभुत;
अनंत अंश विस्तरेहु, मीलन पति ताय करन जुथ. ६
उपजावन आनंद करुणामय करता;
शरणे लह सब अंश, अनंत जन्म अघ हरता. ७
कीये निर्मल तनु अंश, वंशमे ताय मेलायत;
एसे केतु न्हेकर्म, कर्म सब ताय छोडायत. ८
एसे परम गुरु प्रगट, सज्जन सुखकाज तनुधर;
श्रीमद् कुवेर सर्वज्ञ, गति परसेहु अचरचर. ९

ज्हां ज्हां परम गुरु प्रगट, समीप नारण्य निजदासा;
जुग जगमां जणवित करन, विज्ञान प्रकाशा. १०

तत्वोनी उतपत्ति.

कंद ६ ट्ठो.



हवे निज सजाण स्वरूप कैवल कर्ताने द्वैत रमण करवाने उमंग थयो, ज्यारे त्यारे छ व्रतिओए करीने विश्व उत्पन्न कर्युं. प्रथम प्रकाश ब्रह्म-वृत्ति, ए वृत्तिथी त्रण महातत्व उत्पन्न थयां, (१) अविकाश महातत्व (२) विकाश महातत्व (३) कुंभस्थ महातत्व.

त्यारपछी कर्ताए संजम भोगव्रति उत्पन्न करी, एथी त्रण चक्षसत्व (१) वर्गज्ञान चक्षसत्व (२) अनंग चक्षसत्व अने (३) कालचक्षसत्व थयां. त्यारपछी इच्छाव्रति उत्पन्न करी एथी बोतेर तंत विस्तर्यां छे, ते बोतेरमां प्रथम निरंजन तंत एथी अव्याकृत तंत थयु. ए अव्याकृत तंतथी बे कारणतत्व (१) महातत्वकारण (२) अनद तत्वकारण थयां. ए बंने कारण तत्व पैकी दरेकमांथी चोत्रीश चोत्रीस

तत्व स्फुर्यां छे. आनंदतत्व कारणथी प्रकृतितत्वकारण उत्पन्न थयुं. एथी त्रण गुण (१) रजोगुण (२) तमो गुण अने (३) सत्वगुण थया. एमां

तमो गुणथी दशकाल उत्पन्न थया. रजोगुणथी दश आकांक्षा उत्पन्न थइ.

(१) स्वभावकाल.	(१) श्रवण आकांक्षा.
(२) कामनाकाल.	(२) सुगंध आकांक्षा.
(३) आक्रंतकाल,	(३) निरीक्षण आकांक्षा.
(४) आश्चर्यकाल.	(४) क्षुधा पीपासा आकांक्षा.
(५) पृथक्काल.	(५) उचार आकांक्षा.
(६) विपरीतकाल.	(६) शीत उष्ण आकांक्षा.
(७) अज्ञानकाल.	(७) ग्रहण आकांक्षा.
(८) राजसकाल.	(८) विषय आकांक्षा.
(९) द्वेषकाल.	(९) मल विसर्जन आकांसा.
(१०) वृद्धिअंतकाल.	(१०) गवन आकांक्षा.

सतोगुणथी पांच अवस्था (१) जाग्रत (२) स्वप्न (३) शुसुप्ति (४) तुर्य अने (५) उनमुनी तथा पांच अंतःकरण (१) मन (२) बुद्धि (३) चित्त (४) अहंकार अने (५) चिद् उत्पन्न थयां छे.

ए चोत्रीस, आनंद तत्वकारणथी उत्पन्न थयां छे.

हवे महातत्व कारणनो विस्तार कहेवामां आवे छे.

महातत्व कारणथी घनंजे तत्व थयुं. एथी त्रण घणो

(१) अहंकारघण (२) अचंतघण अने (३) स्वकाशघण थया.

अहंकारघणथी पंचभूत अने पंच मात्रा थयां.

पंचभूत	पंचमात्रा
(१) पृथ्वी	(१) शब्द
(२) आप	(२) स्पर्श
(३) तेज	(३) रुप
(४) वायु	(४) रस
(५) आकाश	(५) गंध

स्वकाशघणथी पांच विवस्था अने पांच संभमकरण थयां.

विवस्थाओ.	संभसकरणो.
(१) स्थिति	(१) शान्त
(२) उदार	(२) शील
(३) गलीत	(३) सहेज
(४) कुभ	(४) सतोष
(५) सामान्य	(५) समता

अचंतघणथी दश भावनाओ थइ छे.

(१) अहम भावना	(६) अचेत भावना
(२) संभ भावना	(७) उचाट भावना
(३) विसर्जन भावना	(८) अभाव भावना
(४) निद्रा भावना	(९) मुन्य भावना
(५) अंधतम भावना	असामथ भावना

ए प्रमाणे महातत्वनो विस्तार पुरो थयो.

ओतेरतंत इच्छाप्रत्तिथी विस्तार पार पामी गयो.

हवे त्यारपछी कर्ताए क्रियाप्रत्ति उत्पन्न करी ए वृत्तिए सर्व तंतुना विभाग वहेंचण करीने पिंड ब्रह्मांडनी आश लइने ब्रह्मा विश्नु महेश्वर अने कुर्म, मिंडक, शेष पर्यंत स्थावर जंगम कीट पतंग देव तनु सहित चोराशी लक्ष प्रकारनां तनु उत्पन्न कर्यां पण ते तनुं जडवत रह्यां अने वृद्धि पाम्यां नहि त्यारे कर्ताए सजीवन वृत्ति प्रेरक करी. ए वृत्तिथी सर्व तंतु पोतपोताना माप प्रमाणे वृद्धि पामी रह्यां; पण हलण चलण विना जडवत वृद्धि पाम्या, त्यारे कर्ताए छठी कर्ता अंश वृत्तिए पोताना अंश प्रेरक कर्या ते कर्ताना अंशो सर्व तनमां प्रेरक थया तेथी जे तनुमां जेटला विभाग पोपेला ते ते प्रमाणे हलण चलण करवा लाग्यां.

दोहा.

कर्ता उमंग खटवृत्ति कृत, कीयेहु सकल विस्तार;
बोहोरु विविधी भिन भिन तनु कीये जीनु कहुं अनुसार १
उलट सुलट तत्व उतईत, कीये क्रिया वृत्ति मेलाय;
नारण्यदास सुणो भाव गति, देतही कुवेर लखाय. २



क्रियावृत्तिनुं कार्य.

हवे केवल कर्ताए क्रियावृत्तिथी तत्वनी वहेंचणी करीने ब्रह्मांडनी आद्य लईने सर्व स्थावर, जंगम, कीट, पतंग, देव तनु सहित उत्पन्न कर्यां छे, तेनी हकीकत कहेवामां आवे छे.

प्रथम ब्रह्मांडनी आद्य लइने सप्त महाद् देव तनु रच्यां छे, तेमां वैराट तनुनं बंधारण नीचे मुजब-

अहंकारघणथी उत्पन्न थएला पंचभूतोनी क्रिया.

(१) पृथ्वी तत्वना ९ भाग लइने अने चतुर तत्वनो पा पा भाग मूकीने ए दश भाग वैराट तनुने पोष्या.

(२) जल तत्वना ९ भाग लइने अने चतुर भूतोना पा पा भाग मूकीने ए दश भाग वैराट तनुने पोष्या.

(३) तेज तत्वना ९ भाग लइने अने बीजा चतुर भूतोना पा पा भाग मूकीने, ए दश भाग वैराट तनुने पोष्या.

(४) वायु तत्वना ९ भाग लइने अने तेमां बीजा चतुर भूतोना पा पा भाग मूकीने, ए दश भाग वैराट तनुने पोष्या.

(५) आकाश तत्वना ९ भाग लइने, तेमां बीजा चतुर

तत्वना पा पा भाग मूकीने, ए दश भाग वैराट तनुने पोष्या.

६ हवे रजोगुणनी दश आकांक्षा पैकी पांच आकांक्षा ना दरेकना पांच पांच भागमां बीजी पांच आकांक्षानो दरेकनो एक भाग तेमां मूक्यो ते नीचे प्रमाणे.

(१) प्रथम सुगंध आकांक्षाना पंच भागने विषे एक भाग मल विसर्जन आकांक्षानो मुकीने.

(२) क्षुधा पीपासा आकांक्षाना पंच भागने विषे एक भाग विषय आकांक्षानो मूकीने.

(३) निरीक्षण आकांक्षाना पंच भागने विषे एक भाग गवन आकांक्षानो मूकीने.

(४) शीत उष्ण आकांक्षाना पंच भागने विषे एक भाग ग्रहण आकांक्षानो मूकीने.

(५) श्रवण आकांक्षना पंच भागने विषे एक भाग उच्चार आकांक्षानो मूकीने वैराट तनुने पोष्या.

अने अहंकारघणना पंचभूतने पंच मात्रामांथी चार चार भाग लइने, रजोगुणनी दश आकांक्षा पैकी पंचमां ⁂ छ भागने विषे मूक्या तेः—

(१) सूगंध आकांक्षाना छ भागमां गंध मात्राना चार भाग मूकीने.

(२) क्षुधा पीपासा आकांक्षाना छ भागमां रस मात्रना चार भाग मूकीने.

(३) निरीक्षण आकांक्षाना छ भागमां रूप मात्राना चार भाग मूकीने.

(४) शीत उष्ण आकांक्षाना छ भागमां स्पर्शमात्राना चार भाग मूकीने.

(५) श्रवण आकांक्षाना छ भागमां शब्दमात्राना चार भाग मूकीने ए दश दश भागो पंच प्रकारे पचाश लइने वैराट तनुने पोष्या.

हवे स्वकाशघणना पंच संभसकरणना दरेकना नव नव भागने विषे कइ कइ अवस्थानो एक भाग मूक्यो ते-

(१) शांति संभसकरणना नव भागमां मन अंत करण-नो एक भाग मूकीने. (२) सहेज संभसकरणना नव भागमां बुद्धि अंतःकरणनो एक भाग मूकीने. (३) शील संभसकरणना नव भागमां अहंकार अंतःकरणनो एक भाग मूकीने (४) संतोष संभसकरणना नव भागमां चित्त अंतः-करणनो एक भाग मूकीने. (५) समता संभसकरणना नव भागमां नचित्त अंतःकरणनो एक भाग मूकीने ए दश दश भाग पंच प्रकारे पचाश भाग लइने वैराट तनुने पोष्या.

विवस्था अने अवस्थानुं मिश्रण:-

(१) स्थिति विवस्थाना नव भागमां जाग्रत अवस्थानो एक भाग मूकीने. (२) उदार विवस्थाना नव भागमां स्वप्न अवस्थानो एक भाग मुकीने. (३) गलीत विवस्थाना नव भागमां शुसुप्ति अवस्थानो एक भाग मुकीने. (४) कुंभ विवस्थाना नव भागमां तुर्य अवस्थानो एक भाग मुकीने (५) सामान्य विवस्थाना नव भागमां उनमुनी अवस्थानो एक भाग मुकीने ए दश दश भाग पंच प्रकारे पचाश भाग लईने वैराट तनुने पोष्या.

अचतघणनी दश भावना अने तमोगुणना दशकाळनुं मिश्रण:-

(१)अहम् भावनाना नव भागमां कामना कालनो एक भागमुकीने

(२) संभ भावनाना ,,	,,	पृथ्थक् कालनो	,,	,,
(३) विसर्जनभावनाना,,	,,	अज्ञान कालनो	,,	,,
(४) निद्रा भावनाना ,,	,,	स्वभाव कालनो	,,	,,
(५) अंधतमभावनाना ,,	,,	द्वैष कालनो	,,	,,
(६) अचेत भावनाना ,,	,,	आक्रंत कालनो	,,	,,
(७) उचाट भावनाना ,,	,,	आश्चर्य कालनो	,,	,,
(८) अभाव भावनाना ,,	,,	राजस कालनो	,,	,,
(९) मुन्य भावनाना ,,	,,	विपरीत कालनो	,,	,,
(१०) असामथभावनाना,,	,,	वृद्धि अंतकालनो	,,	,,

ए दश दश भाग दश प्रकारे सो भाग लईने वैराट तनुने पोष्या.

गुण घणनुं मिश्रणः–

(१) अहंकार घणना नव भागने विषे एक भाग रजो गुणनो मुकीने (२) स्वकाश घणना नव भागने विषे एक भाग सतोगुणनो मुकीने (३) अचंत घणना नव भागने विषे एक भाग तमोगुणनो मूकीने ए दश दश भाग लइ वैराट तनुने पोष्या.

चार तत्व कारणनुं मिश्रणः–

(१) महातत्व कारणना नव भागने विषे एक भाग आनंद तत्वकारणनो मूकीने (२) धनंजे तत्वकारणना नव भागने विषे एक भाग प्रकृति तत्वकारणनो मूकीने ए दश दश भाग लइने वैराट तनुने पोष्या.

निरंजन अने अव्याकृतनुं मिश्रणः–

(१) निरंजन तंतना पंच भागमां अव्याकृत तंतना पंच भाग मूकीने वैराट तनुने पोष्या.

संजम भोगवृत्तिना त्रण चक्षसत्वोनुं मिश्रणः–

(१) त्रण भाग अनंग चक्ष सत्वना लईने अने त्रण भाग वर्तमान चक्षसत्वना लइने तथा चार भाग कालचक्ष सत्वना तेमां मूकीने, वैराट तनुने पोष्या.

प्रकाश ब्रह्मवृत्तिनां त्रण महातत्वनुं मिश्रणः—

(१) अविकाश महातत्वना अष्ट भागमां एक भाग विकाश महातत्व अने एक भाग कुंभस्थ महातत्वनो मूकीने

(२) बिकाश महातत्वना अष्ट भागमां एक भाग अविकाश महातत्व अने एक भाग कुंभस्थ महातत्वनो मुकीने.

(३) कुंभस्थ महातत्वना अष्ट भागमां एक भाग अविकाश महातत्व अने एक भाग विकाश महातत्वनो मुकीने. ए दश दश महाद भाग वैराट प्रमाणे लइने, वैराट तनुने पोष्या.

इति वैराटतनु बंधारण तत्व संयुक्त क्रिया.

खट महाद देवतनु बंधारणः—

गुणघणनुं मिश्रणः—

(१) रजोगुणना पंच भागमां बाकीना गुणघणना दरेकना एक एक मली पांच भाग थया ते मुकीने.

(२) तमोगुणना पंच भागमां बाकीना गुणघणना दरेकना एक एक मली पांच भाग थया ते मूकीने.

(३) सतोगुणना पंच भागमां बाकीना गुणघणना दरेकना एक एक मली पंच भाग थया ते मुकीने.

(४) स्वकाश घणना पच भागमां बाकीना गुणघणना दरेकना एक एक प्रमाणे पांच भाग थया ते मुकीने.

(५) अचंत घणना पंच भागमां बाकीना गुणघणना दरेकना एक एक प्रमाणे पांच भाग थया ते मुकीने.

(६) अहंकार घणना पंच भागमां बाकीना गुणघणना दरेकना एक एक प्रमाणे पांच भाग थया ते मुकीने.

ए दश दश भाग मुकी खटमहाद देवतनुने पोष्या.

चार तत्वकारणनुं मिश्रणः—

(१) धनंजे तत्वकारणना पंच भागमां, पंच भाग प्रकृति तत्वकारणना मुकीने.

(२) महातत्व कारणना पंच भागमां पंच भाग आनंद तत्वकारणना मुकीने .

ए दश भाग खट महाद देव तनुने पोष्या.

(१) निरंजनना अष्ट भागमां बे भाग अव्याकृतना मुकीने.

(२) अव्याकृतना अष्ट भागमां बे भाग निरंजनना मुकीने.

ए दश भाग खट महाददेव तनुने पोष्या.

(१) अनंग चक्ष सत्वना त्रण भागमां त्रण भाग वर्णज्ञान चक्षसत्वना अने चार भाग कालचक्ष सत्वना मुकीने ए दश भाग खट महाद देवतनुने पोष्या.

(१) अविकाश महातत्वना अष्ट भागमां एक भाग विकाश महातत्वनो अने एक भाग कुंभस्थ महातत्वनो मुकीने.

(६) विकाश महातत्वना अष्ट भागमां एक भाग अविकाश महातत्वनो अने एक भाग कुंभस्थ महातत्वनो मुकीने.

(३) कुंभस्थ महातत्वना अष्ट भागमां एक भाग अविकाश महातत्वनो अने एक भाग विकाश महातत्वनो मुकीने.

ए दश भाग स्वठ महाद् देवतनुने पोष्या.

(१) तमोगुणना दशकालना दरेकना पांच पांच प्रमाणे लेतां पचाश भाग थया तेमां अचंतघणनी दश भावनाओमांथी एक एक प्रमाणे लेतां ए दश भाग, सतोगुणनां पांच अंतःकरण अने पांच अवस्थामांथी एक एक भाग लेतां ए दश भाग स्वकाशघणना पांच संभसकरण अने पांच विवस्ताए दरेकमांथी एक एक भाग लेतां ए दश भाग, रजोगुणनी दश आकांक्षाना दरेकना एक प्रमाणे जे दश भाग थया ते अहंकारघणना पांचभूत अने पांच मात्राना दरेकना एक प्रमाणे जे दश भाग थया ते मुकीने ए सो भाग स्वट महाद् देव तनुने पोष्या.

(२) रजोगुणनी दश आकांक्षाना दरेकना पांच पांच प्रमाणे लेतां पचाश भाग थया तेमां अचंतघणनी दश भावनाओमांथी एक एक प्रमाणे लेतां ए दश भाग, सतो गुणनां पांच अंतःकरण अने पांच अवस्थामांथी एक एक भाग लेतां ए दश भाग, स्वकाशघणना पांच संभसकरण

अने पांच विवस्ता ए दरेकमांथी एक एक प्रमाणे जे दश भाग थया ते, अहंकारघणना पांच भूत अने पांचमात्राना दरेकना एक प्रमाणे जे दश भाग थया ते तमोगुणना दश कालमांथी दरेकना एक एक प्रमाणे दश भाग थया ते, मुकीने एसो भाग खट महाद देव तनुने पोष्या.

(३) सतोगुणनी पंच अवस्था अने पंच अंतःकरणना दरेकना पंच पंच प्रमाणे पचाश भाग थया, तेमां रजोगुणनी दश आकांक्षाना दरेकना एकप्रमाणे दश भाग, तमोगुणना दश कालना दरेकना एक प्रमाणे दश भाग. अहंकारघणना पचभूत अने पंच मात्राना दश भाग, स्वकाश घणना पंच संभसकरण अने पंच विवस्थाना दश भाग अचंतघणनी दश भावनाओना दश भाग थया ते, मुकीने एसो भाग खट महाद देव तनुने पोष्या.

(४) अहंकारघणना पंचभूत अने पंच मात्राना दरेकना पांच प्रमाणे पचाश भाग थया एमां स्वकाशघणनी पंच विवस्था अने पंच संभसकरणना एक एक प्रमाणे दश भाग, अचंतघणनी दश भावनाओना दश भाग तमोगुणना दश कालना दश भाग, रजोगुणनी दश आकांक्षाना दश भाग सतोगुणनी पंच अवस्था अने पंच अंतःकरणना दश भाग थया ते मुकीने ए सो भाग खट महाद देव तनुने पोष्या.

(५) स्वकाशघणनी पंच विवस्था अने पंच संभसकरणना दरेकना पांच प्रमाणे पचास भाग थया एमां अहंकारघणना

पंचभूत अने पंच मात्राना दरेकना एक प्रमाणे दश भाग, अचंतघणनी दश भावनाओना दश भाग, रजोगुणनी दश आकांक्षाना दश भाग सतोगुणनी पंच अवस्था अने पंच अंत:करणना दश भाग थया ते मुकीने, ए सो भाग खट महाद देव तनुने पोष्या.

(६) अचंतघणनी दश भावनाना दरेकना पांच प्रमाणे पचास भाग थया एमां अहंकारघणा पंचभूत अने पंच मात्राना दरेकना एक प्रमाणे दश भाग, स्वकासघणनी पंच विवस्था अने पंच संभसकरणना दश भाग, तमोगुणना दश कालना दश भाग रजोगुणनी दश आकांक्षाना दश भाग, सतोगुणनी पंच अवस्था अने पंच अंत:करणना दश भाग थया ते मुकीने, ए सो भाग खट महाद देव तनुने पोष्या.

सामान्य देव तनु बंधारण.

रजोगुणना पांच भागमां अहंकारघणना पांच भाग मुकीने (१) सतोगुणना पांच भागमां स्वकाशघणना पांच भाग मुकीने. (२) तमोगुणना पांच भागमां अचंतघणना पांच भाग मुकीने. ए दस दश भागे देव तनुने पोष्या.

(१) प्रकृति तत्वना पंच भागमां धनंजे तत्वना पांच भाग मुकीने. (२) आनंद तत्व कारणना पांच भागमां महा तत्व कारणना पांच भाग मुकीने देव तनुने पोष्या.

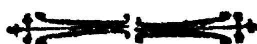
(१) निरंजनना अष्ट भागमां अव्याकृतना बे भाग मुकीने. (२) अव्याकृतना अष्ट भागमां निरंजनना बे भाग मुकीने देवतनुने पोष्या.

(१) अनंगचक्ष सत्वना त्रण भागमां वर्णज्ञान चक्ष सत्वना त्रण भाग अने कालचक्ष सत्वना चार भाग मुकीने देव तनुने पोष्या.

(१) अविकाश महातत्वना अष्ट भागमां विकाश महा तत्वनो एक भाग अने कुंभस्थ महा तत्वनो एक भाग मुकीने (२) विकाश महा तत्वना अष्ट भागमां अविकाश महा तत्वनो एक भाग अने कुंभस्थ महातत्वनो एक भाग मुकीने. (३) कालचक्ष सत्वना अष्ट भागमां अविकाश महातत्वनो एक भाग अने विकाश महातत्वनो एक भाग मुकीने, ए दश दश भाग देव तनुने पोष्या.

तमोगुणना काळनुं मिश्रणः—

(१) स्वभावकाल, कामनाकाल, आक्रंतकाल, आश्चर्यकाल अने द्वेषकाल, ए पंचकालना नव नव भागमां, पृथककाल, विपरीतकाल, अज्ञानकाल, राजसकाल अने वृद्धि अंतकाल ए पंचकालना एक एक भाग मूकीने ए दश भाग देव तनुने पोष्या.



अचंतघणनी भावनाओनुं मिश्रण

(१) अहम भावना, संभभावना, अचंत भावना, उचाट भावना अने मुन्य भावना, ए पंच भावनाना नव नव भागमां विसर्जनभावना, निद्राभावना, अंधतमभावना, अभावभावना, अने असाम्रथभावना, ए पंचभावनाना एक एक भाग मूकीने ए दश भाग देवतनुने पोष्या.

(२) सतोगुणना पंच अंतःकरणना नव नव भागमां पंच अवस्थाना एक एक भाग मूकीने देवतनुने पोष्या.

(३) स्वकाशघणना पंच संभसकरणना नव नव भागमां पंच विवस्थाना एक एक भाग मूकीने देवतनुने पोष्या.

(४) रजोगुणनी पंच आकांक्षाना नव नव भागमां बीजी पंच आकांक्षाना एक एक भाग मूकीने देव तनुने पोष्या, ते नीचे मुजब·

श्रवण, सुगंध, निरीक्षण. विषय अने गवन आकांक्षाना नव नव भागमां, उचार; शीतउष्ण, ग्रहण, मलविसर्जन, अने क्षुधा पीपासा आकांक्षाना एक एक भाग मूकीने देव तनुने पोष्या.

(५) तमोगुणनी पंचमात्राना नव नव भागमां पंचभूतना एक एक भाग मूकीने देवतनुने पोष्या.

आ प्रमाणे क्रियावृत्तिए तत्व संयुक्ते तेत्रीस करोड देवतनु रच्यां, पण जडवत तंतु रह्यां, त्यारे कर्ताए सजी-

वन वृत्ति प्रेरक करी, एथी ते सर्व घाटो वृद्धि पाम्या तथा तत्वना विभागो स्फुरी रह्या, पण कोइ हलण चलणके चेष्टा करवा लाग्या नहि त्यारे निज सजाण स्वरुप किरतारे कर्ताअंश वृत्तिथी अंश प्रेरक कर्या. ते कर्ताना अंश निजजाण स्वरुप जाणवा. निजजाण अंशना प्रेरकपणार्थी कर्तानी प्रकाश ब्रह्मवृत्तिनां तीन महातत्व चैतन थयां त्यारपछी अनुक्रमे कर्तानी संजम भोगवृत्तिनां त्रण चक्ष सत्वने, कर्तानी इच्छावृत्तिनां निरंजन अने अव्याकृत नंतना विभागने चार तत्व कारणने त्रण गुणघणना विभागने एमां सतोगुणनी पंच अवस्था अने अंतःकरणने रजो गुणनी दश आकांक्षाने, तमोगुणना दशकालने, अहंकारपणनी पंचमात्रा अने भूतने, स्वकाशघणना पंच संभासकरण विवस्थाने, अचेतघणनी दश भावनाने चेतन कर्या. आ प्रमाणे अन्योअन्य चैतन थइने पोतपोताना हलण चलण करवा लाग्यां.

दोहा.

देवतत्व तनु पोपक, अदभुत कंद कराल;
खट गुणघण सहीतही जेही, ओरु कह्यो इंड विसाल. १
जेही तनु तत्व वैराटके, पोखेहु वृत्ति पराय;
कहें कुवेर विचरण तीनु, नारण्यदास सुणताय. २



अथ वैराटतनु पंचीकरण कृत देखावननाम सप्तमो कंद.



हवे ते वैराट अने खट महाददेवनी आद्य लइने अन्य सर्व देवने विषे क्यां क्यां तत्वविभागनी वइ वइ चेष्टा थाय छे, ते कहेवामा आवशे·

वैराट तनुने जे विभाग पोष्या हता ते सर्वना वैराटने विषे तनु वंधाइने एक वैराट थयुं छे, वैराटने विषे भिन्न भिन्न तत्वोनी न्यारी न्यारी क्रिया थाय छे ते नीचे प्रमाणे.

अहंकारघणना पंचभूतोनी वहेंचणीनी साबीती.

(१) पृथ्वी तत्वना नव भागमां बाकी रहेला चार तत्वना पा पा भाग पोष्या हता ते विषेः—

पृथ्वी तत्वना नव भाग पोष्या हता तेनो सर्व पर्वत सहवर्तमान मेरु पर्वत थयो. पर्वत जडाकार जतमत वंधाइ रह्यो छे ते जळना एमां रहेला पा विभागने लीधे. दाखला तरीके जो पाषाणने अग्निमां बाळीए तो तेनुं जतमतपणुं

विखराइने छूटी जशे. कारणके एमां रहेलो पाणीनो विभाग के जे पत्थरनां रजकणोने बांधी रह्यो हतो ते अग्निने लीधे वराळ थइ उडी जाय छे. ए कारणथी पत्थरनो चुनो बने छे. पर्वतमां शोषण शक्ति रही छे, तेथी ते जळने शोपी ले छे. ए शोषण शक्तिने एमां रहेलो पा भाग वायुनो जाणवो. पापाणमां छिद्र विषे जळ प्रवेश करे छे. ते आकाश तत्वना विभागथी. एमां रहेला अग्नितत्वना पा विभागने लीधे पाषाण जळनुं शोषण करीने तरत सुकाई जाय छे.

(२) वैराटमां जळ तत्वना नव भागमां बीजा चार तत्वना पा पा भाग पोष्या हता ते विषे:-

जळ तत्वना नव भागनुं वैराटमां अवनी नीचे महाद जळ थयुं छे. परिव्रत राजाना रथना पैंडांना आवरणथी ते महाद जळना सात समुद्र प्रगट थया छे. एमां रहेला पृथ्वी तत्वना पा विभागनी कठणताने लीधे पशु, काष्ट, मनुष्य अने हजारो मण बोजा सहीत नाव जळ उपर तर्या जाय छे. अने डुबतां नथी. एमां अग्नि तत्वनो पा भाग पोष्यो हतो ते एमां वडवानळ अग्नि थइ रह्यो छे, ते निशदिन चोसेठ योजननुं जळ प्रले करे छे. दाखला तरीके प्रभातमां जळनी उपर धुमस नीकळे छे. वैराटमां वायुनो पा भाग पोष्यो हतो तेथी जळने चलपणुं रह्युं छे.

वैराटमां पा भाग आकाश तत्वनो रह्यो छे, तेथी घेरा जळमां नाव चाले छे त्यारे वहाणवटी दुर्बिनथी मच्छ मगर अने समुद्रमां रहेला मोटा पर्वतो जुए छे वळी निर्मळ जळमां अवनीनो आवेश जणाय छे, अने दृष्टि अविकाशपणाने लीधे रोध पामती नथी.

(३) वैराटमां अग्नि तत्वना नव भाग अने तेमां बीजा चार तत्वना पा पा भाग पोष्य हता ते विषे:—

अग्नि तत्वना नव भाग पोष्या हता तेनो वैराटना महादसुन्यना उदरमां महाद अग्नि थइ रह्यो छे. ब्रह्मानां नित प्रलय विषे सुरजनी एक कळा छे, तेमां बीजी पंदर कळा ते महा अग्निमांथी आवि पृथ्वीने त्रांबा वर्णी करी नाखे छे महा अग्निमां रहेला जळना पा विभागने लीधे पृथ्वी त्रांबा वर्णी तप्या पछी महा जळनी वर्षा थइ आखी पृथ्वीने जळमय करी नांखे छे. वैराटमां रहेला वायुना पा विभागने लीधे महा वर्षाना जळने पाछो महा अग्नि शोषण करी ले छे ए महाद अग्निमां रहेला पृथ्वीना पा विभागने लीधे अग्निनी ज्वाळानुं रुप बंधाय छे. अग्निनो पोते लाल रंग छे पण ते ज्वाळानो रंग लालने बदले पीळो देखाय छे. ए पीळो रंग पृथ्वीना विभागने लीधे देखाय छे वळी एथी अग्निनां कळानां जुदां जुदां रुप बंधाय छे. एमां रहेला आकाशना पा विभागने लीधे अग्निना प्रकाशमां अविकाशपणुं रह्युं छे.

(४) वैराटमां वायु तत्वना नव भागमां चारे तत्वना पापा भाग पोष्या हता ते विषे.—

नव भाग वायुना पोष्या हता तेनो वैराटमां महाद वायु थयो छे ए महाद वायुना अंशनुं शपुमार चक्र थयुं छे के जेने आधारे सर्व देश रह्यो छे एमां रहेला पृथ्वीना पा विभागने लीधे शपुमार चक्रना पृथक् पृथक् माळामां रहेला सर्व देवने ते शपुमार चक्र धारण करी रहे छे. आ धारणा शक्तिनेज वायुमां रहेलो पृथविनो विभाग जाणवा ए वायुमां रहेला जळना पा विभागने लीधे उनाळे शियाळे धुमस मेघरवो अने त्रशाण वगेरे वरसे छे. एमां रहेला अग्निना पा विभागने लीधे शुपुमार चक्रने गधन करवाना वेगनी आकृति रही छे एमां रहेला आकाशना पा विभागने लीधे शपुमार चक्रना सर्व माळानां तारा मंडळो आरपार देखाय छे, अने दृष्टिरोध पामती नथी.

(५) वैराटमां आकाश तत्वना नव भागमां बीजा चार तत्वना पा पा भाग पोष्या हता, विषे:—

आकाशना नव भागनुं तो महाद आकाश थयुं छे. महाद् आकाश एटले ओगणपचास वायुनी आद्य लईने द्वादश मेघ मंडळनी उपरांत सुन्य रह्युं छे ते महद् आकाशमां गरुड हंश अने देव विमान वगेरे अद्धर गमन

करे छे. ते आकाशमां रहेला पृथ्वी तत्वना पा विभागने लीधे. एमां रहेला जळना पा विभागने लीधे ज्यारे आकाश निर्मळ आवरण रहीत होय छे त्यारे ओश जामे छे, अने झाकळ पडे छे. एमां रहेला अग्निना पा विभागने लीधे महाद सुन्यमां कोइ वार आकाशवाणी थाय छे; ते आकाश वाणीमां भयंकरपणु होय छे; आ भयंकररूपी तगाजपणुं अग्निना विभागने लीधे थाय छे एमां रहेलो वायुनो पा भाग आकाशना ते भयंकरपणाने नीचो उतारीने सप्त द्वीपना लोकोने श्रवण करावे छे.

(१) वैराटमां रजोगुणनी सुगंध आकांक्षाना पांच भागमां अहंकारपणनी गंध मात्राना चार भाग पोष्या हता तेनी तो मृतिका रुपी पृथ्वी थइ रही छे अने मळ विसर्जन आकांक्षानो एमां एक भाग पोष्यो हतो तेने लीधे अढार भार वनस्पतिनां बी पृथ्वीमांथी उगी नीकळे छे, त्यारे सर्व अंकुरो पीळा रंगनां देखाय छे. दाखला तरीके:-बालक ज्यां सुधी पयपान करी रहे छे त्यां सुधी ते मल विसर्जन पीला रंगनुंज करे छे, तेम पृथ्वी तत्व पण जलनु पान करी रह्या पछी मल विसर्जन पीळा रंगनुज करे छे. एमां रहेला सुगंध आकांक्षाना विभाग अढार भार वनस्पतिनी सुगंधी, पशु, पंखी, अने मनुष्यना देहपात थाय छे, तेथी थती दुर्गंधीने अने वळी मळ विसर्जननी दुर्गंधीने ग्रहण

करी पोतामां मेळवी ले छे. आ प्रमाणे वैराटनी सुगंध आकांक्षानी नासीका जाणवी-

(२) वैराट पिषे रजोगुणनी क्षुधा पिपासा आकांक्षाना पांच भागमां एक भाग विषय आकांक्षानो अने चार भाग अहंकारघणनी रसमात्राना पोष्या हता ते विषे:-वैराटमां क्षुधा पिपासा आकांक्षाना पांच भागनुं आभ्ररुपी वादळ थयुंछे. अहंकारघणनी रसमात्राना चार भागनुं ते आभ्र त्रिषे वर्षारुपी जळ थयुं छे अने एक भाग विषय आकांक्षानो पोष्यो हतो, तेनो कामरुपी विद्युत थयो छे. दाखला तरीके:-कोई स्त्री पुरुषना संभोगनी आद्य प्रथम पुरुषमां काम प्रगट थाय तो ते पुरुष स्त्रीने परिपूर्ण ऋतुदान आपी शके. जो पुरुषनी नाभीनी नीचे जमणी कुखे (कुक्षाए) काम प्रगट थाय तो ते ऋतुदान परिपूर्ण आपे अने ते बींदुनो गर्भ रहे ते परिपूर्ण आरबल भोगवे. जो कदाच पुरुषने अन्य अंगे काम चळकीत थाय, अने ऋतुदान आपे तो ते परिपूर्ण वर्षा नव थाय, अने जो वर्षा होय तो गर्भ नव रहे कदाच गर्भ रहे तो, अल्प आयुष्य भोगवेएज प्रमाणे वैराटमां प्रथम आषाडी पंचमीने दिन पृथ्वीनी आतुरताने वर्षाऋतुनी आद्य कामरुपी विद्युत (वीजळी) चळकीत थाय तो पृथ्वीने परिपूर्ण वर्षा ऋतु दान आपी शके. जेम पुरुषनी नाभीनी नीचे जमणी कुखे काम चळकीत कह्यो हतो तेम अहीं वैराट तनुमां

उत्तर दिशाए अग्नि खुणामां वीजळी चमके तो ते पृथ्वीने पूर्ण वर्षाऋतुदान आपी शके. कदाच अन्य दिशाके खुणामां वीजळी चळकारा करे तो पृथ्वीने पूर्ण ऋतुदान होइ शके नहि. ए प्रकारे वैराटमां विपयाकांक्षानो एक भाग जाणवो.

(३) रजोगुणनी निरीक्षण आकांक्षाना पांच भागमां एक भाग गवन (गमन) आकांक्षानो अने अहंकारघणनी रुप मात्राना चार भाग पोष्या हता ते विषेः- नीरिक्षण आकांक्षाना पांच भाग वैराटमां समदर्शरुपे व्यापक थइ रह्या छे, के जेना किंचित अंशनो चंद्रमा थइने आकाशमां रह्यो छे, रुप मात्राना चार भाग पण काष्ट पापाणना अग्निनी माफक अव्यक्तमान वैराटमां व्यापक रह्या छे के जेना किंचित् (रज) अंशनो सूर्य थइने आकाशमां रह्यो छे. चंद्रसूर्यमां गमन शक्ति रही छे तेने गवन आकांक्षानो विभाग जाणवो.

(४) वैराटमां रजोगुणनी शीत उष्ण आकांक्षाना पांच भागमां एक भाग ग्रहणाकांक्षा अने अहंकारघणनी स्पर्श मात्राना चार भाग पोष्या हता ते विषेः-

शील उष्ण आकांक्षाना पांच भागनी तो वैराट तनुने त्वचा थई छे, के जेनाथी इंड कटाक्ष पडदे विंटाईने गोळाकार जत मत रह्युं छे वैराट शेष, कूर्मने पिंडकनी

पीठने ग्रही असंख्य काळनुं (अडग एक मकान पर) स्थिर रह्युं छे, ते ग्रहण आकांक्षाना एक भागने लीधे. स्पर्श मात्राना चार भाग पोष्या हता ते वैराटमां व्यापक थइ रह्या छे, ते केम जाणीए जे, वैराटमां ओगण पचास शाखा संयुक्त मारुत रह्यो छे.

(५) वैराटमां रजोगुणनी श्रवण आकांक्षाना पांच भागमां एक भाग उच्चार आकांक्षानो अने शब्द मात्राना चार भाग पोष्या हता ते विषेः--

श्रवण आकांक्षाना पांच भागनी वैराटमां दशे दिशा थई छे के जेना अंशना दश दिकपाळ थया छे शब्द मात्राना चार भाग पोष्या हता तेनुं वैराटमां सत्वे शुन्य थयुं छे. ज्यां सुधी द्वादश मेघ मंडळ अने ओगण पचास वायुकारोनुं आवरण रह्युं छे, त्यां सुधी तेने सत्व सुन्य जाणवुं. उच्चार आकांक्षानो एक भाग पोष्यो हतो ते वैराटमां व्यापक थइ रह्यो छे, के जे वर्षाऋतु वखते विद्युतना संयमने विषे गर्जना करी उठे छे (गाजे छे)

(१) शांति संभषकरणना नव भागमां एक भाग मन अंतःकरणनो पोष्यो हतो ते विषेः- शांति संभसकरणना नव भागने लीधे वैराट सदायकाल शांतिवत रह्यु छे. अने वैराटतनुना पृथ्वी तत्वने स्थुळ शरीरने विषे ते नव भाग रह्या छे, तेथी पृथ्वी तत्व पण सदा शांतिवत रहे

छे अने एमां एक भाग मन अंत:करणनो पोष्यो हतो ते नीचे मुजब:--

वैराटने विषे सुक्ष्म संकल्प थयाज जाय छे. वैराटमां उलटा सुलटी पवन पलटाय छे, तेने संकल्प विकल्प जाणवा जेम आपणी (मनुष्य जंगम) जातिमां पंच प्रकारना प्राणायम वायु उलटा सुलटी पलटाये करीने संकल्प विकल्प उठे छे. प्राणायम वायु पलटाये केवी रीतना संकल्प उठे छे ते विषे:—पृथ्वी तत्वनो प्रणायम चाले तो जेटला पदार्थ विभाग होय तेटला पदार्थनाज सर्व संकल्प उठे, कदाच अन्य संकल्प उठतो होय पण ते मोक्ष पदार्थना संकल्पनेज राखीने उठे. जलतत्वनो प्राणायम वायु चालतो होय तोखटरसनी आद्य लइने जेटली रसनी जाति होय तेना स्वादना संकल्प उठे. कदाच अन्य संकल्प उठे पण ते मोक्ष रस स्वादना संकल्पने राखीने उठे अग्नितत्वनो प्राणायम वायु चालतो होय तो लडाइ, वेर (वर्ग)के युद्ध करवानी आद्य लइने जेटला प्रकारना आचरणमां विरोधने परिताप उपजे तेटला प्रकारना संकल्प उठे, कदाच अन्य संकल्प उठता होय पण ते विरोधना संकल्पने मोक्ष राखीने उठे. वायु तत्वनो प्राणायम वायु चालतो होय तो देश परदेशके गाम परगामनी आद्य लइने घेरथी बहार के बहारथी घेर गवन करवाना सर्व संकल्प उठे कदाच

अन्य संकल्प उठता होय तो ते गवन करवाना संकल्पने मोक्ष राखीने उठे, आकाशतत्वनो प्राणायमवायु चालतो होय तो सर्व संकल्प लीन पामी जवाथी सून्यवत थइ जवाय. कदाच ते वखते सून्यवत सूक्ष्म संकल्प उठे तो आलस, निद्राके शयन करवानी आद्य लइने शत्रु मित्रके सगा संबंधीथी हार पाम्याना संकल्प उठे. एज प्रकारे वैराटमां पण पवन पलटाये संकल्प विकल्प उठता जाणवा दक्षिणने पश्चिमनी संधी (नैरुत्य कोण) विषेथी वायु आवतो होय तो ते वैराटना पृथ्वी तत्वनो प्राणायम चालतो जाणवो आ वखते क्षेत्र करसणने घासनी आद्य लइने सर्व वनस्पति जेटली तृण जाति होय तेटलीना पत्रने बीजने वर्षा थोडी मळी होय तोपण ए वायुए करीने पृथ्वीना विभाग रसने पोषीने तेमने पकवी दे छे. ते माटे ते समये वैराटने विषे पण अल्प संकल्प पदार्थ भावनानाज उठता जाणवा. सतोगुणना मन अंतःकरणनो एक भाग एमां पोष्यो हतो तेने लीधे संकल्प विकल्प उठे छे. उत्तरने पूर्वनी संधी (इशान कोण) विषेथी वायु वाय तो वैराट तनुना जळ तत्वनो प्राणायम चालतो जाणवो. ए वखते वैराटमां रस भागना संकल्प उठे छे. पूर्वने दक्षिणनी संधी (अग्नि कोण) विषेथी वायु वाय तो वैराटमां अग्नि तत्वनो प्राणायम चालतो जाणवो. अने ए समये तामस भागना संकल्प वैराटमां ऊठता जाणवा. ऊत्तरने पश्चिमनी संधी

(वायव्य कोण) विषेथी वायु वाये तो ते वखते वैराटं
विषे गवन आकांक्षाना विभागना संकल्प उठता जाणवा
हवे चारे दिशाओना पवन सम दम थइने सुन्य पडी जाय
अने महा सुक्ष्म भागे, तृण हाले नहि एवो वायु वैराटन
मध्य भागने विष धीमे धीमे वाय तो, ते वैराट तनुन
आकाश तत्वनो प्राणायाम जाणवो. ए वखते वैराटमां स
संकल्प समदम थईगएला जाणवा. अने जो कदाच सुक्ष्
संकल्प उठता होय तो ते उदासीना के सुन्यवत होय
मनुष्य जंगम जातिमां प्राणायाम पलटाये संकल्प उत्तमवे
मध्यम थाय छे तेज प्रकारे वैराटमां पण थाय छे. वैराट
मां पृथ्वी तत्वनो प्राणायाम चाले छे ते सर्व वनस्पतिन
पत्र फूलफळनी आश लइने जेटलां तृण जाति होय तेमन
धीरे धीरे पृथ्वीना रसनुं पोषण करीने घाट करी दे
एथी सर्व अनाजनां कण अने घास पाकीने पदार्थ थ
जाय छे, कारणके पृथ्वीना प्राणायाममां पदार्थ भावन
रही छे कठणताने पदार्थ भाग जाणवो. वैराटमां जळ
तत्वनो वायु वाय तो ते रसनी वृद्धि करे छे ज्यारे कोई
अखात्रीजने दिवसे वाव्रतीया वायु जोतां जणाय के वा
ईशान खुणानो वाय छे तो ते (रस जे) जळनी वृद्धि करे
बीज उतरी रह्या पछी अने अखात्रीजनो अमल बेसतां ज
एक मुहूर्त ईशानकोणनोवायु वाय तो एक मासना जेटल
वर्षा थाय. जो ते करतां कमती वाय तो ते प्रमाणे वरसाद

पण कमती (थोडो) थाय. बे मुहुर्तनो वायु वाय तो बे मास, त्रण मुहुर्तनो होय तो त्रण अने चार मुहुर्तनो होय तो चार मास सुधी वरसाद वरसे. फागण महिनानी चौदश उतरतां अने होळीनी पुनम बेसतां, अथवा अषाढ महिनानी चोथ उतरतां अने पांचम बेसतां जो ए बंने वखते अखात्रीजना प्राणायम वायुना संकल्पनी क्रिया कही हती तेम थाय तो परिणाम पण उपर कह्युं तेम आवे. ए क्रियाओ पण रस भागना संकल्पनीज जाणवी.

हवे उपर कह्या ए त्रणे काळमां (होळी पांचमने अखात्रीजमां) अग्नि खुणानो वायु जेटला मुहूर्त सुधी वाय तेटला मास सुधी वरसादनो नाश करे. कारणके अग्नि तत्वना प्राणायमने विषे तामसी संकल्प रह्या छे, तेथी ते तामसे करीने रसनुं मूळ जे वर्षा, तेनो प्रलय करे, एथी दुकाळ पडे के अल्प वरसे. जो अखात्रीज, होळी के अषाडी पंचमीने दिन वायु जोतां जणाय के ते वायव्य कोणनो वाय छे तो सर्व घास, अनाजनो प्रलय करी दे तेथी अन्न वगेरे सर्व मोंघुं वेचाय ते माटे सर्व पदार्थना विभागने ते वायु आ देशथी पेले देश अने ते देशथी आ देश लई लईने गवन करावे, कारणके वायु तत्वना प्राणायामने विषे गवन करवाना संकल्प रह्या छे. जो वैराटमां आकाश तत्वनो प्राणायम चाले तो सर्व संकल्पनी नास्ति

था... ज्यारे सर्व ...भसकरणना न... रणनो पोष्यो हतो ते ... मंद मंद वायु उपर चढे ... ...वनो प्राणायम जाणवो. ज्यारे सूर्य दक्षि... नो उत्तरायण थाय अने उत्तरायणनो दक्षिणायन थाय त्यारे (विषुव दिवसे) आकाश तत्व चालतुं जाणवुं. चैत्र महिने वर्ष बदलाय छे तेनी संक्रांति जे मेष जे काळे बेसे छे ते दिन वैराटने विषे लेता श्वासनुं आकाश होय तो ते प्राणायम वैराटना उदरने विषे जेटला देशमां प्रवेश करे तेटला देशमां सकाळ वृष्टि होय अने जेटला देशमां ते प्राणायम प्रवेश करी शके नहि तेटला देशमां अनावृष्टि होय कदाच वैराट तनुना मुक्ता प्राणायमना वायु वाय तो जे स्थानथी उठयो होय ते स्थानकथी जेटलां स्थान अने जे मुलकने ते वींधी शके तेटला देशमां अनावृष्टि होय अने जेटला देशमां प्रवेश करी शके नहि तेटला देजमां वृष्टि थाय पूर्व पवन जतो होय तेने उलटावीने पश्चिम चलावे त्यारे तेने वैराटनो मूक्तो प्राणायम जाणवो. शुद्ध पश्चिमथी पूर्वने विषे पवन पलटाये तो तेने वैराटनो लेतो श्वास जाणवो ए प्रमाणे शांतिसंभसकरणना नव भागमां एक भाग मन अंतःकरणनो रह्यो छे ते कह्यो.

(२) वैराटने विषे गील संभसकरणना नव भागमां एक भाग बुद्धि अंतःकरणनो पोष्यो हतो ते विषे-

शील संभस ... वैराट स...
शीलवंतज रहे छे. वैराट... ...माणे घाट
घडाय छे जे, साठ संवत्सर अने छ ...ना आध लइने
द्वादश मास तथा असंख्य युग ते सर्वना घाट नाम, रुप,
गुण वगेरे बुद्धि अंतःकरणना एक भागनी क्रिया वडे
थाय छे.

(३) वैराटने विषे सहेज संभसकरणना नव भागमां
एक भाग अहंकार अंतःकरणनो पोष्यो हतो ते विषेः–
ए नव भागने लीधे तो वैराट सदाकाळ सहेज दशावंत
सरखुं जणाय छे. अहंकारनो एक भाग के जे, वैराटने
असंख्य युग थयां तोळी रह्यो छे.

(४) संतोष संभसकरणना नव भागमां एक भाग चित
अंतःकरणनो पोष्यो हतो ते विषेः–संतोष संभसकरणना
नव भागने लीधे तो वैराट सदा संतोषी जेवुंज रहे छे.
कोइ समे वर्षा जास्ती होय वा कमती होय ते प्रमाणे
वैराटने उपजण जास्ती कमती थाय छे, तो पण ते पोकार
नथी करतुं के हुं असंतोषी छुं. अने एक भाग चितनो
ते जेः–मन संकल्प विकल्प करे छे तेनो निश्चय बुद्धि
करे छे अने ते निश्चय करेला घाटने अहंकार तोळी रहे
छे त्यार पछी चित ते घाटनुं चितवन करी साक्षात्कार
पणुं देखाडे छे. ऋतु, संवत्सर अने युग वगेरेनुं द्रश्यपणुं
द्दढ दर्शावे छे तेने साक्षात्कारपणुं जाणवुं.

(५) समता सं... एक भाग नचिंत अंतःक... ...वषः-वैराट सदा सम-दम समतावतज रह छ. एना उदरमां रहेला चौदे लोक तेने खोदे छे खणे छे वगेरे क्रिया करे छे पण तेथी ते कोई प्रत्ये द्वेषी के प्रीतिवाळुं नथी कारण के एनामां समता संभसकरण रहयुं छे. वैराट सदाकाळ नचिंत सरखुंज मालम पडे छे. जाणे कांइ प्रवृत्तिज न होय अने ध्यानाकार जेवुं होय एम लागे छे, तेने नचिंत अंतःकरणनो विभाग जाणवो.

वैराटना क्या क्या तत्वमां पांच संभसकरणना नव नव भाग अने पांच अंतःकरणना एक एक भाग रह्या छे ते नीचे मुजबः-

(१) शांति संभसकरणना नव भाग अने मन अंतः-करणनो एक भाग ए दश भाग पृथ्वी तत्वने स्थुल देहने विषे रह्या छे.

(२) शील संभसकरणना नव भाग अने बुद्धि अंतःक-रणनो एक भाग ए दश भाग, जळतत्वने सुक्ष्म देहने विषे रह्या छे.

(३ सहेज संभषकरणना नव भाग अने अहंकार अंतःकरणनो एक भाग ए दश भाग, अग्नितत्वने कारण देहने विषे रह्या छे.

(४) संतोष संभसकरणना नव भाग अने चित अहंकार अंतःकरणनो एक भाग ए दश भाग, वायुतत्वने महाकारण देहने विषे रह्या छे,

(५) समता संभसकरणना नव भाग अने नाचिंत अंतःकरणनो एक भाग ए दश भाग, आकाशतत्वने परम कारण देहने विषे रह्या छे.

(१) शांति संभसकरणने लीधे पृथ्वी शांतिवत रही छे अने एक भाग मन अंतःकरणने लीधे पृथ्वीमां सर्वनी उपजण रही छे.

(२) जळ शीलवंतज छे ते शील संभसकरणना विभागे करीने अने एक भाग बुद्धि अंतःकरणनो के जे, जळने विषे मधुरता रही छे.

(३) महा सुन्यने विषे महाअग्नि सहेज स्वभावे रहे छे ते सहेज संभसकरणने लीधे कोई काळे प्रलय वखतेज द्रश्यमान थाय छे, अने अहंकार अंतःकरणनो एक भाग ते महाअग्निने तोळी रह्यो छे. के जे अग्निने बधे फेलावा नथी देतो.

(४) ससुमार चक्र सदायकाळ कांइपण भक्षण विना संतोषवानज रहे छे ते संतोष संभसकरणने लीधे ससुमारचक्रने विषे विशेष चलकीतपणु रह्युं छे ते चित अंत करणने लीधे.

(५) समता संभसकरणने लीधे आकाश अति समदम रह्युं छे अने चिद् अंतःकरणनो एक भाग ते जे आकाश सदा चिध्येज रह्युं छे.

(१) स्वकाशघणनीं स्थिति विवस्थाना नव भाग अने एक भाग सतोगुणनी जाग्रत अवस्थानो पोष्यो हतो ते विषेः—ए दशे भाग पृथ्वीतत्वने स्थुल देहने गिषे रह्या छे तेथी पृथ्वी सदा स्थितिवंत रही छे अने जाग्रत अवस्थाना विभागथी तो वैराटने जाग्रत अवस्था थइ रही छे.

(२) उदार विवस्थाना नव भाग अने स्वप्न अवस्थानो एक भाग पोष्यो हतो ते विषेः–ए दशे भाग जळतत्वने सुक्ष्म देहने विषे रह्या छे, एथीज महाजळ सदा अथाह उदारने गंभीरवत रहे छे, अने स्वप्न अवस्थानो एक भाग पोष्यो हतो तेने लीधे तो वैराटने स्वप्न अवस्था थइ रही छे.

(३) गलीत विवस्थाना नव भाग अने शुसुप्ति अवस्थानो एक भाग पोष्यो हतो ते विषेः-ए दश भाग तो वैराटना कारणदेहने अग्नितत्वने विषे रह्या छे. तेथी महा अग्नि काष्टपाषाणनी आद्य लइने सर्व वैराटमां गलीतवानज रह्यो छे, त. अग्नि आपोआप प्रकाशी नथी शकतो, सुसुप्ति अवस्थाना . . ग ने लीधे तो वैराटने सुसुप्ति अवस्था थई छे.

(४) कुंभ विवस्थाना नव भागने विषे एक भाग तुर्यावस्थानो पोष्यो हतो ते विषेः–

ए दश भाग वायु तत्वने महाकारण देहने विषे रह्या छे. तेथी वायु तत्व के जे (ससुमार चक्र) फरे छे खरूं पण कुंभवत सरखुं देखाय छे, कारण के चंद्र सूर्यनी आद्य लइने तारा मंडळ तेने आधारे रह्यां छे, पण चंद्र, सूर्य तेम तारा मंडळ चालतां देखातां नथी ते कुंभ विवस्थाने लीवे तुर्यावस्थानो एक भाग पोष्यो हतो तेने लीधे तो वैराटने तुर्यावस्था थई छे.

(५) सामान्य विवस्थाना नव भागने विषे एक भाग उनमुनी अवस्थाने पोष्यो हतो ते विषेः—

ए दश भाग वराटना परमकारण देहने आकाश तत्वने विषे रह्या छे एथी तो आकाश तत्व सामान्यवतज रहयुं छे. उनमुनी अवस्थानो एक भाग पोष्यो हतो तेने लीधे तो वैराटने उनमुनी अवस्था थई छे.

अवस्थाओनुं वर्तन.

(१) नाग लोक, देवने मनुष्यनी आद्य लइने ते सर्व विषे तो जाग्रत अवस्था श्रेष्ठ वर्ते अने [illegible]ी अन्य चार [illegible]वस्थाओ [illegible] [illegible]रने विषे [illegible] [illegible]णरे छे.

(२) पशु पतंग, कीट स्वप्न अवस्था श्रेष्ठ भोगवे छे

अने बीजी अन्य चार तेमना उदरने विषे वर्तमान करे छे.

(३) तृण जाति वेली जाति अने वृक्ष जाति विषे सुसुप्ति अवस्था श्रेष्ठ वर्ते छे अने अन्य अवस्था तेमना उदरने विषे वर्तमान करे छे.

(४) त्रण गुण अने त्रण घणनी आद्य लईने वैराट विषे तो तुर्यावस्था श्रेष्ठ रही छे. अने बीजी तेमना उदरने विषे भोगवाय छे.

(५) चारे तत्वकारणनी आद्य लइने अव्याकृत निरंजन विषे उनमुनी अवस्था श्रेष्ठ रही छे अने बीजी तेमना उद्-रने विष वर्तमान करे छे.

हवे ए प्रमाणे पंच अवस्थाओ पैकी एक एक अव-स्था पंच जातिने विषे श्रेष्ठ वर्ते छे. पण आपणे तो वैरा-टने विषे तुर्यावस्था श्रेष्ठ कही छे केमके वैराट सदाकाळ सहेज भावे तुर्यावत सरखुंज रहे छे. एना उदरने विषे अन्य अवस्था वर्तमान करे छे ते नीचे मुजब.

(१) प्रथम तुर्याने विषे उनमुनी अवस्था एक मास वसंत ऋतुना अने बे मास ग्रीष्मकाळना दिवसमां वर्ते छे.

(२) तुर्यावस्थाने विषे अषाढ श्रावणने भाद्रमासने विषे जाग्रत अवस्था वर्तती जाणवी.

(३) तुर्याने विषे स्वप्नावस्था एक मास शरद ऋतु (आसो मास) अने शित ऋतुना बे मास विषे वर्ते छे.

(४) तुर्याने विषे हिम ऋतुना बे मासमां अने वसंत ऋतुना एक मासमां सुसुप्ती अवस्था वर्ते छे.

(५) वैराटने विषे तुर्यावस्था सदायकाळ वर्ते छे.

(१) वैराटनी जाग्रत अवस्थामां विद्युत वादळ वरसाद अने गर्जना वगेरे अतिशय उपाधी स्फुरण थाय छे.

(२) शरद् ऋतुना एक मासमां अने शीत ऋतुना बे मासमां स्वप्ना अवस्थाने लीधे वैराटमां अल्प वर्षा, धुमस अने ओश वगेरे सूक्ष्म उपाधी उठे छे. दाखला तरीके:- आपणामां पण जागृत अवस्थाना अंकुर स्वप्नावस्थामां स्फुरे छे (ए प्रमाणे वैराटनी जाग्रत अवस्थामां थती विद्युत) वादळ, वरसाद अने गर्जना वगेरे उपाधीना अंकुरो जे अल्प वरसाद, धुमस तथा ओश वगेरे वैराटना स्वप्ना-वस्थामां स्फुरे छे.

(३) जेम आपणामां स्वप्नावस्थाना सूक्ष्म संकल्प उठे छे. ते करतां घणा सूक्ष्म संकल्प सुसुप्ती अवस्थामां उठे छे के जेमां आळपंपाळ दृश्यमान थाय छे तथा ए संक-ल्पो जाग्रतमां कही शकाता नथी तेम वैराटमां एनी स्वप्नावस्थाना सुक्ष्म विकार (अल्प वर्षा, धुमस ओश अने मेघरवा वगेरे) हिम ऋतुना बे मासमां अने वसंत ऋतुना एक मासमां स्फूरे छे ए वखते वैराटनी सुसुप्ती अवस्था चालती जाणवी.

(४) वैराटमां ग्रीष्म ऋतुना दिवसोमां विद्युत वादळ, धुमस के गर्जना वगेरे कंइ उपाधी देखाती नथी ए वखते वैराटनी उनमुनी अवस्था चालती जाणवी कदाच ए उनमुनीमां मावठु के मेघरवा वगेरे उपाधी थाय तो ए उनमुनीमां फरी जाग्रत अवस्था वर्तती जाणवी.

(५) जाग्रत, स्वप्न सुसुप्ती अने उनमुनी अवस्थाओनी क्रिया वैराटमां थइ थइने रही गया पछी थोडा थोडा दिवसने अंतरे आकाश निर्मळ रहे छ अने कंइ उपाधी थती नथी, ए उपरथी जाणवु के वैराटमां तुर्या अवस्था सदा वर्ते छे कारणके तूर्यामां कांइ उपाधी थवी न जोइए.

वैराटमां अचंतपणनी दश भावना पैकी अहंम्भावनाना नव भागमां तमोगुणनो कामना काळनो एक भाग पोष्यो हतो ते विषेः—अहंम्भावनाने लीधे वैराट असंख्य युगो थयां अहंम्पणेज रह्युं छे अने वृद्धपणानुं अधिक नुन्य, तात्पर्य गणकारतुं नथी एमां पोषेला कामना काळना एक विभागने लीधे वैराटमां मातपिताना संयम विना जळ पृथ्वीना योगे अनेक प्रकारना कीट अने जीव वगेरे चोमासामां उत्पन्न थाय छे.

(२) संभभावनाना नव भागमां पृथक् काळनो एक भाग पोष्यो हतो ते विषेः—वैराट सदा संभाकारमांज रहे छे ते संभभावनाने लीधे वैराटमां कोई कोइ स्थळे सुवर्ण,

चांदी, त्रांबा लोखंडनो आद्य लइने हीरा रत्न पारस तथा खारा मीठा पाणीनी भूमी होय छे, ए सर्व भेदाभेद वैराटमां पृथक् जणाय छे ते पृथक् कालनी क्रिया जाणवी.

(३) विसर्जन भावनाना नव भागमां एक भाग अज्ञानकाळनो पोष्यो हतो ते विषे. वैराटमां गया वर्षनी क्रिया आ वर्षे नहि अने आ वर्षनी क्रिया आवता वर्षे नहि, ते विसर्जन भावनाए करीने थाय छे. पाछलुं विसरेलुं फरी स्मृति थवा दे नहि ते अज्ञानकाळनो विभाग जाणवो.

(४) निद्रा भावनाना नव भागमां एक भाग स्वभावकाळनो पोष्यो हतो ते विषे:—वैराट सदा निद्रावत देखाय छे ते निद्राभावनाने लीधे बीजी अवस्थाओ तेना उदरमां वर्तमान करे छे ते केम जाणीए जे, जेम आपणने निद्रा आवे छे त्यारे स्वप्न, शुसुप्तिनी आद्य लइने बीजी अवस्था फरी तेने विषे पण वर्तमान करे छे ए प्रकारे वैराटमां पण जाणवुं, छ ऋतुनी आद्य लइने वैराटमां जे स्वभाव पडयो छे तेने ते सदा चाल्यो जाय छे, ते स्वभाव काळ जाणवो.

(५) अंधतम भावनाना नव भागमां एक भाग द्वेषकाळनो पोष्यो हतो ते विषे. वैराटना महासुन्यना उदरना भागमां रहेलो महा अग्नि अध सरखोज रह्यो छे के जे

महासुन्यने छोडीने सर्व वैराटने विषे प्रकाशतो नथी ते अंधत्तम भावनाने लीधे ब्रह्माना नित प्रळयने विषे महा अग्निनी सोळ कळा सूर्यने विषे पोषाइने, वैराटना उदरना लोकने (जे थावर जंगमादिकनी) आद्य लइने प्रले करी जाय ते द्वेषकाळनो विभाग जाणवो.

(६) अचेत भावनाना नव भागमां एक भाग आक्रंत काळनो पोष्यो हतो ते विषे चौद लोक वैराटना ऊदरमां खोदे छे, खणे छे ने खुंदे छे पण ते बोलतुं चालतुं नथी अने अचेतने अचेत सरखुंज रहे छे ते अचेत भावनाने लीधे. वैराटने खोदतां के खणतां सदा ते आकृतिने आकृतिवान रहे छे ते आक्रंत काळने लीधे.

(७) उचाट भावनाना नव भागमां एक भाग आश्चर्यकाळनो पोष्यो हतो ते विषे:--ग्रीष्मकाळने उनमुनी अवस्थाने विषे वैराट उचाट जेवुंज रहे छे ते ऊचाट भावनाने लीधे चार अवस्थानी उपाधि जे, आभ्र विद्युत, गर्जनाने ब्रसाण धुमसनी आद्य लईने सर्व क्रिया ते समये सुन्यमां लीन पामी जाय छे, ते आश्चर्यकाळना विभागे लीन थाय छे.

(८) अभाव भावनाना नव भागमां एक भाग राजसकाळनो पोष्यो हतो ते विषे:--अभाव भावनाना नव भाग वैराटना स्पर्श मात्राने विषे रह्या छे (स्पर्श मात्रा

कहेतां जे ओगण पचाश वायु) ते वायु अनंत पदार्थने विषे वैराटमां वाय छे पण कोइ पदार्थमां वळगतो नथी ते अभाव भावनाने लीधे नथी वळगतो एक भाग राजस काळनो तेजे, पवन पुष्पादिक धुप दीपनी वासनानी आश्र लइने सर्वनी उपर वाय छे त्यारे वासनाने ग्रहण करीने लेनो जाय छे.

(९) मुन्य भावनाना नव भागमां एक भाग विपरीत काळनो पोष्यो हतो ते विषः--वैराटना उदरमां देव, मनुष्यने छ गुण घणनी आश्र लइने असंख्य लोको निवास करे छे, एमां केटलाक महा रुडां काम आचरे छे अने केटलाक बुरां काम आचरे छे तोपण ते कोइ प्रत्ये प्यार के द्वेष करतु नथी. पण मुन्य सरखु रहे छे, ते मुन्य भावनाने लीधे.

अतिवृष्टि, मरकीरोग, लुक अग्निनी आश्र लइने वैराटमां व्याधि उत्पन्न थाय छे, तेने विपरीतकाळनो विभाग जाणवो

(१०) असामर्थ भावनाना नव भागमां एक भाग वृद्धि अंतकालनो पोष्यो हतो ते विषेः-वैराटने एना महाद शरीर प्रमाणे महाद शक्ति रही छे छतां ते महाद शक्ति प्रमाणे, असामर्थ भावनाने लीधे ते हाली के चाली शकतु नथी. वृद्धि अंतकाळनो एमां एक भाग पोष्यो हतो ते इंड

कटाक्षना त्वचा भागमां रह्यो छे. वृद्धि अंतकाळनो विभा वैराटना त्वचा भागने वधवा देतो नथी तेथी तेनुं अंत हालपण वृद्धि पामतुं नथी, एटले वैराट फरी वध्या क वाने अशक्तिमान छे. ए हवे वधतुं नथी.

(१) अहंकारघणना नव भागमां एक भाग रजोगुण पोष्यो हतो ते विषे:-ते रजोगुणनो विभाग रसमात्राम रह्यो छे, अने अन्य नव भाग पंचभुत अने चार मात्राम रह्या छे. अहंकारघणनी दृष्टि उंचे गमन करनारी छे अ रजोगुणनी दृष्टि नीचे गमन करे छे रजोगुणनो विभा (रसमात्रा जे) वर्षा ऋतुना जळमां रह्यो छे. तेथी वरसादना जळने नीचे गमन करावे छे. अहंकारघण नव विभाग जेमां रह्या छे तेने तेओ उंचे गमन करावे छे

अहंकारघणना बे भाग पृथ्वीतत्व अने गंधमात्राम रह्या छे तेथी तेओ सर्व पर्वतनी मृतिकाने उंचे वृद्धि पामवा रुपी गमन करावे छे. अग्नितत्व अने रुप मात्राम बे भागमां अहंकारघणना बे भाग रह्या छे, तेओ अग्नि अने रूमात्राने पण उंचे गमन करावे छे, पवन तत्व अ स्पर्श मात्राना बे भागमां अहंकारघणना नव भाग रह छे, तेओ पवन अने स्पर्शमात्राने उंचेज गमन करावे छे तेमने जो कोई रोके तो पृथ्वीमां न प्रवेशतां उपरज जा

आकाशतत्व अने शब्द मात्राना बे भागमां अहंकारघणना विभाग रह्या छे, तेओ महदाकाश अने आवरणाकाशने उंचे गमन करावे छे केमके आकाशनो भाग जे शब्द ते उंचे अविकाशमां जाय छे, अने पृथ्वीमां प्रवेशतो नथी.

अहंकारघणनो एक भाग महादजळमां रह्यो छे. तेथी ते जळ पृथ्वीनी तळीएनी सपाटी उपर समदम अडोल रह्युं छे. तेमज ते भाग पाणीने उपर गमन करावे छे. वळी अहंकारघणने लीधे अवनी तोलाई रही छे.

(२) स्वकाशघणना नव भागमां एक भाग सतोगुणनो पोष्यो हतो ते विषे सत्वगुणनोएक भाग उदार विवस्था अने स्वप्नावस्थामां रह्यो छे, एथी सतोगुणनो स्वभाव (मध्यस्थ) तटस्थ समदम छे अने उदार विवस्था अने स्वप्नावस्थाने जाग्रत करतां वधारे उदारवतज राखे छे, स्वकाशघणना अन्य नव भाग स्वकाशघणना पांच संभासकरण अने चार विवस्थामां रह्या छे, तेथी ए पांच संभास करणो तथा चार अवस्थाओमां स्वकाशपणु रह्युं छे. स्वकाशपणु एटले निर्मळता.

(३) अचंतघणना नव भागमां एक भाग तमोगुणनो षोष्यो हतो ते विषेः-तमोगुणनो एक विभाग अचंतघणनी असाम्रथ भावना अने वृद्धि अंतकाळना

विभागमां रह्यो छे. ते वैराटना वृद्धिपणाने भक्ष करतो रहे छे. तेथी वैराट तेनी आद्य मूकीने वधी शकतुं नथी. अचंतघणना अन्य नव भाग नव भावनामां रहीने वर्ते छे, एथी ए नवे भावनाओमां विशेष अचेत अने अचंतपणुं रहयुं छे.

(४) त्रण गुण अने त्रणघण वैराटमां केवी रीते वर्ते छे ते विषे:-

(१) अहंकारघणना नव भागनो अमल चोमासाना चार मासमां चाले छे. ए अहंकारघणमां रहेलो रजोगुणनो एक विभाग वरसादने उदय करवानी क्रिया करे छे.

(२) स्वकाशघणना नव भागनो अमल शियाळाना चार मास उपर चाले छे. ए स्वकाशघणमां रहेलो सतोगुणनो एक भाग शियाळामां अतिशय ठंडी उपजाववानुं कार्य करे छे.

(३) अचंतघणना नव भाग उनाळाना चार मासमां वर्ते छे. अचंतघणमां रहेलो तमोगुणनो एक भाग अतिसय तामस (गरमी) उत्पन्न करे छे.

(१) महातत्वकारणना नव भागमां एक भाग आनंद तत्व-कारणनो पोष्यो हतो ते विषे:-महातत्व कारणना नव भागनुं

वैराटप्रमाणे वैराटनुं महातत्व कारण थयुं छे. ए महातत्व कारणना नव भाग वैराटना आकाश तत्व (जे शब्द आकृति संयुक्त सुन्य)ना विभागने छोडीने अनादि खगाकार (जे सदा छे छे ने छेज एमां) रह्या छे. महातत्व कारण वैराटना आकाश तत्व अने अनादि खगाकारनी वच्चे रहीने आभ्र, विद्युत, गर्जना अने पवन वगेरेने तेना पोताना स्वरुपमां मेळवीने अरुप करी नांखे छे. महातत्व कारणमां रहेलो आश्चर्यकाळनो एक भाग ते अरुप करी नांखेला उपाधीना अंकुरोने ग्रही राखे छे. ते उपाधीना अंकुरो महातत्वमां बहार नीकळी आवे जेम कोइ हलकी वस्तु पाणीमां डुबावीए त्यां सुधी ते पाणीमां रहे अने तेने छोडी दइए तो पाणी उपर नीकळी आवे.

महातत्वकारणमां रहेलो आनंदतत्वनो एक भाग आभ्र विद्युत वगेरे उपाधीना महातत्व कारणमां रहेला अरुप रूपने रुप धरावीने उदय पमाडे छे.

(२) धनंजे तत्वकारणना नव भागमां प्रकृति तत्व कारणनो एक भाग पोष्यो हतो ते विषेः—ए दशे भाग वैराटनी शब्द मात्रा (सत्वसून्य)मां रह्या, ॐकार वगेरे बावन अक्षर बंधाय छे. जेम कोइ नदीनो प्रवाह बांधवो होय तो तेमां चीकणी माटीनो उपयोग करवो पडे नहि तो ते प्रवाह बांधवानो गोळो वीखराइ जाय तेम आकाश

पण वहेळा जेवुं जाणवुं. तेने बांधवाने माटे धनंजे तत्व कारणरूपी चीकणी माटी जोइए, नहि तो शब्द मात्रा विखराइ जाय. अक्षरमां स्वर रह्या ते प्रकृति तत्वकारणने लीधे. नहि तो स्वर वगर अक्षर बोडाज (व्यंजन) बोलाय. ए प्रमाणे प्रकृति तत्वकारणनो विभाग धनंजे कारण तत्वमां रह्यो छे.

(४) वैराटमां निरंजनना पांच भाग अने अव्याकृतना पांच भाग पोष्या हता ते विषेः- ए बंनेना सरखा भाग पोष्या छे तेथी वैराट नपुंसक थयुं. छे. ए न कहेवाय पुरुष के न कहेवाय स्त्री. (नान्यतर जाति कहेवाय) वळी ए बंन्ने (निरंजन अने अव्याकृत)ना सरखा विभाग पोषेला होवाथी वैराटमां जळ, पृथ्वी, तेज, वायु अने आकाश वगेरेना पोतपोतानां तत्व संयम थवाथी अनेक जीव उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे वैराटमां निरंजन अने अव्याकृतनो अमल चाले छे.

(५) आठ भाग अविकाश महातत्वना लई तमां एक भाग विकाश महातत्वनो अने एकभाग कुंभस्थ महातत्वनो पोष्यो हतो ते विषेः-ए दश भागनो तो वैराटने विषे अहंकार प्राणायम (के जे लेतो श्वास ते) थयो छे. विकाशनो एक भाग पोष्यो हतो तेनो तो ओंकार प्राणायम (के जे मोक्ष भागे रह्यो छे अने वैराटना उदर विषे विकाश करतो जाय छे, त्यारपछी तेनी पाछळ ओहंकार

प्राणायम प्रवेश करे छे ते) थयो अने एक भाग कुंभस्थ महातत्वनो के जे ओंकार ते थयो प्राणायमने विषे व्यापक थइ प्राणायमने धीरे धीरे चालवा दे छे. कुंभस्थ महातत्वने विषे स्थंभन शक्ति रही छे.

(१) आठ भाग विकाश महातत्वना लईने तेमां एक भाग अविकाश महातत्वनो अनो एक भाग कुंभस्थ महातत्वनो पोष्यो हतो ते विषे:—

ए दश भागनो वैराटने विषे सोहम प्राणायम (के जे मुक्तो श्वास ते) थयो छे. अविकाश महातत्वनो एक भाग एना अग्र भागे रह्यो छे तेथी ते प्राणायमना वेग प्रमाणे प्राणायमने चालवा दइने उलटावे छे, कारण के अविकाश महातत्वनी संपट शक्ति छे. कुंभस्थ महातत्वनो विभाग एमां व्यापक रह्यो छे के जे प्राणायमने धीरे धीरे रेचक थवा दे छे. तेथीज वैराटनुं बळ घणुंज पहोंचे छे.

(३) आठ भाग कुंभस्थ महातत्वना लइने तेमां एक भाग अविकाश महातत्वनो अने एक भाग विकाश महातत्वनो पोष्यो हतो ते विषे ए दश भाग वैराटना बंने प्राणायमने विषे कुंभक थइ रह्या छे. कुंभक एटले बंने श्वासनी वच्चे प्राणायम स्थंभन पामे छे ते विकाश महातत्वनो विभाग तो कुंभस्थ महातत्वना उरध मुखने विषे मोक्ष भागे रह्यो छे! ते कुंभकने थोडीक वार राखीने बहार [illegible] दे छे, अने एक भाग अविकाश महातत्वनो कुंभकना

अधोमुखना मोक्ष भागे रह्यो छे. ते कुंभकने वैराटमां पकडी राखे छे,

(१) वर्गज्ञान चक्षसत्वना त्रण भागमां त्रण भाग अनंग चक्षसत्वना अने चार भाग काळचक्षसत्वना पोष्या हता ते विषे:—

वर्गज्ञान चक्षसत्व के जे वैराटनां सर्व तत्वने इंद्रियोनी विभक्ति न्यारी न्यारी राखे छे. (के जेथी आ तत्व इंद्रियोनी क्रिया बीजा तत्व इंद्रियोने विषे ना मळे. अने जे तत्व इंद्रियोनी क्रिया जे समये जोइए ते समये ते तत्व इंद्रियोनी क्रिया जणावे छे.) तेने विषे अनंग चक्षसत्व वर्गज्ञान चक्षसत्वना जणाव्या पाछळ उमंगावीने जेवुं तत्व तेवी क्रिया करावे छे. अनंग चक्षसत्व एटले कामदेव जाणवो ते कामना [illegible]रीने सर्व तत्वनी क्रियाओ थाय छे. अने एमां रहेला चार भाग काळचक्षसत्वना तत्व इंद्रियोनी क्रियाने पाछळथी नाश पमाडतुं जाय छे. ते नाश कहेतां पहेली ऋतुनो नाश थाय छे त्यारे बीजी ऋतु बदलाय छे.

आ प्रमाणे त्रणे तत्वनी उपक्रिया थाय छे हवे मुळमकानी क्रिया नीचे मुजब.

(१) मूळ मकानो ते प्रकाश ब्रह्मवृत्तिनां त्रण महातत्व जांणवां.

(१) अविकाश महातत्वने विषे वर्गज्ञान चक्षसत्व रह्युं छ.

(२) विकाश महातत्वने विषे कालचक्षसत्व रह्युं छे. (३) अने कुंभस्थ महातत्वने विषे अनंगचक्ष सत्व रह्यु छे.

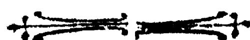
(१) वर्ग ज्ञान चक्षसत्व लेता प्राणायमनी भीतर पुष्टि करे छे. तेथी प्राणायम बहार अतिशय जतो नथी.

(२) अनंग चक्षसत्व कुंभस्थ महातत्वने (जे लेतो श्वास पोरकने) अंदर खेंची राखे छे, तेथी वैराटने विषे प्राणायम थोडोक भराई रहे छे, एथी वैराटने विषे समर्थता रहे छे.

(३) काल चक्षसत्व प्राणायमने बहार रेचक करी नांखे छे, कारणके काळ चक्षसत्वनो एक भाग जास्ती छे जेटलुं अनंग चक्षसत्व निर्बळता पामतुं जाय छे. तेटलोज काळ चक्षसत्व प्राणायमनो नाश करतुं रहे छे. छेवटे अनंग चक्षसत्वने वर्गज्ञान चक्षसत्व नास्ती पामवाथी अने काल चक्षसत्वनो एक भाग वधारे होवाथी कोई काळे वैराट नाश पामे छे.

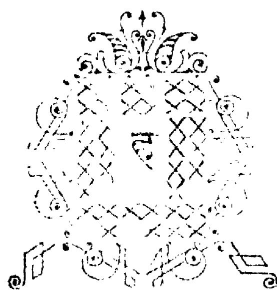
दोहा

अति थीर इंड वैराटके, कीयेहु सकल अनुकर्म;
सचीत, सबुध अधिकारीकु, दर्शावन निज मर्म. १
अब खट गुणवण महादके, नारण्यदास सूण तंत;
पोखेहु वृत्ति क्रिया जेही विधे, कुवेरसो करत विस्तरंत. २



अथः खट महादद्देव तनु पंचीकरण देखावन नाम.

अष्टमो कंद.



ये कर्तानी क्रियावृत्तिये खट महाद देव तनु रच्यां छे ते कहेवामां आवशे.

(१) रजोगुणना पंच भाग लइने अने एमां बीजा गुणपणना एक एक मळी पांच भाग पोय्या हता ते विषेः–

ए दश भाग पोय्या हता तेना तो खट महाद देवने विषे ब्रह्मा थया छे. एने विषे एक भाग सतोगुणनो ते जे ब्रह्माने कोइ समे शांति उपजे छे, अने अहंकारपणनो एक भाग के जे ब्रह्माने कोइ समे अहंकार उपजी जाय छे. एक भाग स्वकाशपणनो ते जे, ब्रह्माने कोइ समे स्वकाशपणुं आवे छे, तेथी सर्व विषयथी तृप्त थइने प्रफुल्लित रहे छे. अचंतपणनो एक भाग ते जे, ब्रह्मा कोई समे अचंत ध्यानाकार थई जाय छे. एक भाग तमोगुणनो ते जे,

ब्रह्माने कोई समे तामसगुण उपजी जाय छे.

(२) पंच भाग सतोगुणना लइने एमां बीजा गुणघणना एक एक मळी पांच भाग पोष्या हता ते विषे.

ए दश भाग पोष्या हता तेना तो विष्नुदेव थया छे. एमां सतोगुणना पांच भाग पोष्या छे तेथी विष्नु अतिशे शांतिवत छे, एने विषे एक भाग रजोगुणनो तेजे, विश्नुने कोइ समे लक्ष्मी उपर मोह उपजे छे. तमोगुणनो एक भाग ते जे, विश्नुने कोइ समे तामस उपजे छे अने अवतार धरीने घणा दैत्यनां छेदन करे छे. एक भाग अहंकार घणनो तेजे, विश्नु सृष्टिनुं पालन करवानुं अभिमान राखे छे. एक भाग स्वकाशघणनो ते जे, विष्णु कोइ समे स्वकाश पदेज रहे छे. एक भाग अचंतघणनो ते जे, विष्णु कोई समे अचंत ध्यानाकारज रहे छे. हवे एने ए प्रकारे छ गुणघणने विषे मोह उपजे ते रजोगुणनो विभाग तामस उपजे ते तमोगुणनो, शांति उपजे ते सतोगुणनो, अहंकार उपजे ते अहंकारघणनो स्वकाशपणुं उपजे ते स्वकाशघणनो अने अचंत भाव उपजे ते अचंतघणनो विभाग जाणवो.

(३) पंच भाग तमोगुणना लइने एमां बीजा गुणघणना दरेकना एक एक मळी पांच भाग पोष्या हता तेना शिव देव थया छे.

(४) पंच भाग अहंकारघणना लइने एमां बीजा गुण

घणना दरेकना एक एक मळी पांच भाग पोष्या हता तेना खट महाद देवतनुने विषे शेषजी थया छे.

(५) पंच भाग स्वकाशघणना लइने एमां बीजा गुण घणना दरेकना एक एक मळी पांच भाग पोष्या हता तेना खट महाद देवतनुने विषे महाद मिंडक देव थया छे.

(६) पंच भाग अचंतघणना लइने एमां बीजा गुणघणना दरेकना एक एक मळी पांच पोष्या हता तेना खट महाद देवतनुने विषे कूर्म देव थया छे.

आ सिवाय खट महाद देवने विषे बीजा तत्वने इंद्रियोना विभाग पोष्या छे तेनी क्रियाओ आगळ बीजा देवोने विषे कहीशु, तेज प्रमाणे एमनी जाणजो.

ए छ मोटा देवो क्यां रह्या छे ते कहेवामां आवे छे.

ए खट महाद देव वैराटना शीखर रुपी अंगने विषे रह्या छे.

वैराट तो अधोमुखे (नीचा मुखे) रहयुं छे अने उर्ध्व मुखे चरणार्विंदने लींग रुपी त्रण शीखर रह्यां छे. तथा अधोमुखे वैराटनुं मस्तक अने कर रह्या छे. वळी एनी पुंठ पूर्व दिशाए छे. वैराटनी पुंठने विश्व पश्चिम दिशाए कहे छे ते बाजुए तो वैराटनु मुख रहयुं छे.

(१) जमणा चरणार्विंद रुपी शीखर उपर विष्णु रह्या छे.

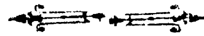
(२) डाबा चरणार्विंद रुपी शीखर उपर शीवजी रह्या छे.

(३) वैराटना लींगरुपी शीखर उपर ब्रह्मा रह्या छे.

(४) मस्तकरूपी शीखरनी तळे शेषजी देव रह्या छे.
(५) डाबा कर रुपी शीखरनी तळे मिंडक देव रह्या छे.
(६) जमणा कररूपी शीखरनी तळे कूर्म देव रह्या छे.

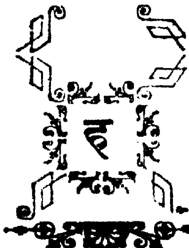
दोहा.

खट गुणघण तनु तत्वके, पंचीकरण प्रभाव;
कहेहु रचना रची जेही विधि, निजकर्ता कृत भाव. १
ओरु इंद्रादिक सुरनके, विपु विलास इतिहास;
नारण्यदास तेही तत्वनकी, कह कुवेर प्रकाश. २



अथः सामान्य देवतनु विवरण पंचीकरण देखावन नाम.

कंद ९ मो.



हवे खट महाद देव तनुनी आद्य लइने सर्व देव तनुना तत्वनी क्रिया कहेवामां आवशे.

(१) देवने विषे पृथ्वी तत्वनो भाग ते जे, देव मूर्तिमान छे. अने रवि चंद्र, तारा मंडळनी आद्य

लइने जे दर्शमान छे ते पृथ्वीना विभागे करीने देखाय छे. ए प्रमाणे देवने विषे सुक्ष्म अवनीनो विभाग रह्यो छे.

(२) देवने विषे जळ तत्वनो विभाग ते जे, देवने विषे अमी रही छे, ते अमी दृष्टिए करीने देव कोइनी सामु भाळे छे तेनी लीला लहेर थाय छे.

(३) देवने विषे तेज तत्वनो विभाग ते जे, देवने विषे प्रकाश रह्यो छे.

(४) देवने विषे वायु तत्वनो विभाग ते जे, देवने हलण चलणपणुं रहयुं छे.

(५) देवने विषे आकाश तत्व ते जे, देवने ग्रही शकाय नहि तेनामां अद्रष्टपणुं रहयुं छे.

देवने विषे दरेक मात्राना नव नव भाग रह्या छे.

(१) गंध मात्राथी देव वासनाए तृप्त थाय छे, तेथी ते सुगंधी घणी ग्रहण करे छे.

(२) रस मात्रा देवनी रसनाए रही छे, तेथी देव रसनाए करीने वचन कहे छे ते फळीभुत थाय छे. रस मात्राना नव भाग रहेला होवाथी वचनमां रस जामी आपेलो वर फळीभुत करे छे.

(३) देवने विषे रुपमात्रा तेजे, देवना चक्षुनी पलक पडती नथी अने दृष्टि घणी पहोंचे छे ए मात्रा चक्षुमां रही छे.

(४) स्पर्शमात्रा तेजे, देव स्पर्शे करीने आनंद पामे छे.

ए मात्रा त्वचाने विषे रही छे, तेथी चंदन लेप वगेरेना लेपोथी ते तृप्ति पामे छे.

(५) देवने विषे शब्द मात्रा तेजे, देवने घंटनाद, शंखनादनी आद्य लइने वाजींत्र प्रिय लागे छे. आ मात्रा देवना कर्णने विषे रही छे.

रजोगुणनी पंच आकांक्षाना पांच पांच भाग अने बीजी पांच दरेकना एक एक भाग देवने विषे पोष्या हता ते विषे.

(१) श्रवण आकांक्षा देवने विषे नव भागे रही छे, एना तो देवने कर्ण थया. एमां शब्द मात्राना नव भाग समाया छे.

(२) सुगंध आकांक्षा देवने विषे नव भागे रही छे एनी तो नासा थइ एमां गंधमात्राना नव भाग समाया छे.

(३) नीरीक्षण आकांक्षा देवने विषे नव भागे रही छे. एनां नेत्र थयां एमां नव भागे रूप मात्रा रही छे.

(४) विषय आकांक्षा देवने विषे नव भागे रही छे. एनी इंद्रि थई ते सदा खडीज रहे छे अने मुंझाती नथी कारणके विषय आकांक्षाना नव भाग पोष्या छे.

(५) गवन (गमन) आकांक्षाना नव भाग देवने विषे रह्या छे तेथी ते एक घडीमां लक्ष कोश जाय छे तोय तेने श्रम लागे नहि ए आकांक्षा चरणने विषे रही छे.

(१) उचार आकांक्षानो देवने विषे एक भाग के जे, देव कोइ समे उच्चार करे छे अने कोइ सेवकने वरदान देवा उचरे छे.

(२) शीत उष्ण आकांक्षानो देवने विषे एक भाग ते जे, सूर्यनी आद्य लईने तेजवंत देपथी बीजानां तेज मुंझाइ जाय छे, अने रात्रीए शीतळता पामीने चंद्र तारानी आद्य लइने प्रफुलित थाय छे.

(३) देवने विषे त्रण आकांक्षाना एक भागथी देवने हस्त थवा छे तेथी पुष्पादिक वस्तुनी आद्य लईने पोतपोतानां सहस्त्र आभुषण ग्रही रहे छे.

(४) देवने विषे मलविसर्जन आकांक्षानो एक भाग ते जे, देव वैभव करीने तृप्ति पाम्या पछी पाछा अतृप्त थइ जाय छे.

(५) क्षुधा पीपासा आकांक्षानो देवने विषे एक भाग रह्यो छे.

देवमां सतोगुणना पंच अंततःकरणना नव नव भाग अने पंच अवस्थानो एक एक भाग पोष्यो हतो ते विषेः—

पंच अवस्थाना पंच भाग ते देवने विषे सामान्य संयुक्त समदम रह्यो छे तेथी सदा पांचे अवस्था अहर्निश वर्तती जणाय छे अने अवस्था पलटाती नथी, ते केम जाणीए जे (१) जाग्रत अवस्था ते, सदाकाळ नेत्रनी टगटगी लागी रहे छे अने (२) स्वप्न अवस्था ते, कंठने विषे

देव अप्राप्तिभोगनी वासना करीने घाट घडया करे छे. (३) सुसुप्ति अवस्था ते, देव सदा समदम भासे छे. (४) तुर्यावस्था ते, देव सदा ध्यानकारज जणाय छे. (५) उनमुनी अवस्था ते, चार अवस्थाओनी जाणनी चासमी लइने आनंद पामीने उदारपणुं देवने विषे सदा दर्शे छे.

ए प्रकारे देवमां पांचे अवस्था संयुक्त वर्ते छे एथी देव कोईज समे निद्रावश थाय छे.

देवने विषे पंच अंतःकरणना नव नव भाग पोष्या हता ते विषे--

(१) मन अंतःकरणना नव भाग ते जे, देवने विषे संकल्प विकल्प रह्या छे. ते केम जाणीए जे, देव कोइने प्रसन्न थईने फळीभुत थाय छे अने कोईने श्राप दइने प्रले करे छे.

(२) बुद्धि अंतःकरणना भाग ते जे, देव बुद्धिथी पोतपोताना वहेवारना घाट घडताज रहे छे.

(३) अहंकार अंतःकरणना भाग ते जे, देवलोकना वहेवार कार्यनो तेओ अहंकार राखी तोल करे छे अने कोई देवनी सेवा करे छे त्यारे देव तेने वरदान आपे छे, ते अहंकार अंतःकरणे करीने तेमने पोताना सामर्थ्यनी मानीनता रहे छे.

(४) चित्त अंतःकरणना विभाग ते जे, देव नाना प्रकारना वैभवनुं चित्वन कर्या जाय छे.

(५) नचित अंतःकरणनो विभाग ते जे, देव चार अंतःकरणना विषयनी चासमी लइने मोदीतपणे रहे छे.

संभसकरणना नव नव भाग अने विवस्थाना एक एक भाग देवने विषे रह्या छे ते विषेः—

(१) शांति संभसकरणने लीधे देव शांतिमां रहे छे ते केम जाणीए जे, देव पोतानुं धाम छोडीने बहु फरता नथी. स्थिति विवस्थानो एक भाग ते जे देव हाले चाले पण स्थितिपणे जणाय छे.

(२) सहेज संभसकरणना विभाग ते जे, देव गमन करतां छतां सहेज स्वभावे जणाय छे अने उदार विवस्थानो एक भाग ते जे, देवने विषे अंतर चाहना, पण उपर उदारपणुं जणाय छे.

(३) शील संभसकरणना विभाग ते जे, देव सदा शीलवंत जणाय छे अने गलीत विवस्थानो एक भाग ते जे, देव कोइने श्राप दे छे त्यारे जो श्राप अपाएलो माणस स्तुति करे तो ते श्राप देव थोडोक खेंची ले छे. कारण के देव स्तुतिथी गलीत थइ जाय छे.

(४) संतोप संभसकरणना विभाग ते जे, देव वासनाए करीने संतोष पामे छे, अने कुंभ विवस्थानो एक भाग ते जे, देव आसन ऊपर होय त्यां सुधी चलायमान जणाय नहि.

(५) समता संभसकरणना विभाग ते जे, देवनी कोइ

निंदा के स्तुति करे त्यारे ते जलदी कोपायमान नथी थतो तेम फळीभुत पण नथी थतो अने सामान्य विवस्थानो एक भाग ते जे, कोई लांबा काळथी सेवा करतो होय अने कोइ टुंक मुदत थयां सेवा करतो होय तो पण ते बंनेने बरावर फळ आपी दे छे, ते सामान्य विवस्थाना अमलमां एवुं करी बेसे छे.

तमो गुणना पंच काळना नव नव भाग देवने पोष्या हता ते विषे—

(१) देवने विषे स्वभाव काळना नव भाग ते जे देवना जे स्वभाव होय ते पलटाय नहि. कामी तो कामीज अने क्रोधी तो क्रोधीज अने शील होयतो शील स्वभावज रहे कोईना बोधथी ए स्वभावो पलटाय नहि.

(२) कामना काल ते जे, देव वैभवने माटे बहु तृष्ण करे छे.

(३) आक्रंतकाल ते जे, देवने विषे आक्रुति वहु रही छे, एथी सर्व लोक देवथी त्रास पामे छे.

(४) आश्चर्यकल ते जे, देवने विषे अंतर्ध्यान अने अदृश्यपणु रह्युं छे.

(५) द्वेषकाळ ते जे, देव कोइनु सारु इच्छे नहि, ते केम जाणीए जे कोइ जप तप करतुं होयतो तेनो जइने भंग करी आवे ए प्रकारे ए पंचकालना नव नव भाग देवने विषे रह्या छे.

तमोगुणना नीचेना पंचकालना एक एक भाग देवने विषे वर्ते छे.

(१) पृथक्कालनो एक भाग ते जे, देव पृथक् पृथक् देखाय छे पोताना धाममां रह्या छतां बीजी जग्यए देखाय छे.

(२) विपरीतकालनो भाग ते जे, देव कोइ समे अयोग्य काम करे छे, त्यारे तेनुं विपरीत थाय छे, ते केम जाणीए जे इंद्रे गौतमनी नार उपर कुदृष्टि करी त्यारे चंद्र सहित तेनु विपरीत थयुं ते आपे *सहस्र भग थयां अने शीवजी ए ब्रह्माना मस्तकने छेद्युं, तेनु ब्रह्मकपाळ थइने वळग्युं; ते विपरीत थयुं कहेवाय.

(३) अज्ञानकालनो भाग ते जे, देव त्रिकालदर्शी छे पण कोइ समे चूकी जाय छे. ते केम जाणीए जे, वळी राजाने घेर वामन जाचवा गया, त्यारे शुक्राचार्य झारीमां पेठा पण जाण्युं नहि के मारूं नेत्र खंडीत थशे, अने प्रभुनो चोर थवाशे, पण एम कोइ समे देवोथी चूकी जवाय छे.

(४) राजसकालनो एक भाग ते जे, देव सेवा करतां कोई कोईनी साथे प्रीति राखे छे.

(५) वृद्धि अंतःकालनो भाग ते जे, देवनुं शरीर घणे काळे वृद्धि पामी रहे छे ने पछी वधतुं नथी.

---

* ए पौराणिक विषयो छे.

देवने विषे अचंतवणनी पांच भावनाना नव नव भाग पोष्या हता ते विषे--

(१) अहम् भावना ते जे देव घणा काळ सुधी वैभव अने आयुष्य भोगवे छे पण गति पलटाती नथी कारण के सदाय अहमपणाने लइ आगेने माटे गतिनो निरोध थाय छे.

(२) संभ भावना ते जे, देव सदाकाळ संभाकारज जणाय छे. हाले चाले पण अंग संभाकारवत दिसे छे.

(३) अचेत भावना तेजे, देव पोतानी हद छोडीने उंची गति पामे नहि.

(४) उचाट भावना तेजे, देवने विषे खेचरी मुद्रा रही छे ते खेचरी मुद्रानो सुन्य स्वभाव ते सुन्य उचाटवत छे, ते माटे देवमां उचाट भावना जाणवी.

(५) सुन्य भावना तेजे, देव सुनीव्रत सरखा देखाय छे अने अतिशे वाणी नथी उचरता.

देवने विषे अचंतवणनी पांच भावनाना एक एक भाग पोष्या हता ते विषे.

(१) विसर्जन भावनानो एक भाग तेजे, देवने अगम निगम सूझे तो पण कोई समे ते असूझनुं काम करे छे.

(२) निद्रा भावनानो एक भाग ते जे देव मंत्र आवाहने करीने प्रगट थाय छे. पण कोई समे मंत्र आवाहन सूणता नथी, त्यारे प्रगट नथी थता ते निद्रा भावनाने लीधे.

(३) अंधतम भावनानो एक भाग तेजे, देवने कोइ समे कामना उठे छे. त्यारे पोताना स्वार्थने काजे अनेक जीवनुं कार्य बगाडे छे ते अंधतम भावनाने लीधे.

(४) अभाव भावनानो एक भाग तेजे, देवनी सेवा करतां कोईनी चूक पडे त्यारे देवने अभाव उपजे छे तेथी देव फळीभुत नथी थता.

(५) असाम्रथ भावना ते, देव चहाय सो करे एटलुं सामर्थ्य पण कोइ करता नथी ते असाम्रथभावनाए करीने गति नथी पहोचतो.

देवने विषे गुणघणना पंच पंच भाग पोष्या हता ते विषे.

(१) रजोगुणना पंच विभाग अहंकारघणना पंच भाग मां मळी रह्या तेथी देवने विषे अभीमान अखंड रह्यो छे. अने विराम पामतो नथी.

(२) अहंकारघणना पंच विभाग रजो गुणना पंच भागमां मळी रह्या छे, तेथी तेमने विषे अभिमान अखंड रहे छे.

(३) सतो गुणना पंच विभाग ते जे देव अनेक प्रकारना वैभव करे छे पण शांतिवत देखाय छे, ते शा माटे जे, स्वकाशघणना पंच भाग ए सतोगुणना पंच भागमां मळी रह्या छे.

(४) स्वकाशघणना पंच विभाग ते जे, देव सदा स्व प्रकाशमान रहे छे कारण के एमां सतोगुणना पांच भाग मळी रह्या छे.

(५) तमोगुणना पंच भाग तेजे, देवने विषे तामसपणुं रह्युं छे तेथी कोइने ते श्राप दे छे ते तमोगुणे दे छे. ते तमोगुण देवने विषे सदा अंतरमां अखंड रहे छे. ते कोइक समे प्रगट देखाय छे पण घणे भागे गुप्त रहे छे कारण के एमां अचेतघणना पंच भाग मळी रह्या छे. तमोगुणना भागमां ते अचेतघणनो भाग अचेतपणाने पमाडे, अचेतपणुं एटले अज्ञान जाणवुं, ए अज्ञाने करीने तामस उपजे छे. एथीज देवने विषे सदा तमोगुण वर्ते छे..

(६) अचेतघणना पंच भाग तेजे, देव अमुक कार्य करे छे त्यारे अकस्मात करी बेसे छे चाहे भलु थाय के बुरु पण वगर विचारे करे छे. कारण के अचेतघणना विभागने विषे तमोगुणना पांच भाग रह्या छे. एथीज देवने विषे सदा अचेतपणुं वर्ते छे.

देवने विषे चार तत्व कारण पांच पांच भाग रहेला छे ते हवे कहेवामां आवे छे. (१) प्रकृति तत्वकारणना पांच भाग देवनी अंदर रहेला होवाथी तेनामां चंचळपणुं घणुं रहे छे. तेमज (२) धनंजे तत्वना पांच भाग देवनी अंदर होवाथी चंद्र सूर्य तारा मंडळनी आश लइने तेओ गमन करे छे. छतां स्थिर जणाय छे. (३) देव पोतानी

स्वजातिमां घणोज आनंद माने छे ते आनंद तत्वना गुणे करीने स्वजातिमां प्रिति राखे छे. (४) देवनी अंदर महत्व मानुभाव रह्यो छे ते महातत्वनो भाग जाणवो देवने विषे निरंजन अने अव्याकृतना विभाग पोष्या हता ते विषे:-

(१) निरंजनना आठ भाग अने अव्याकृतना बे भाग मेळवीने ए दश भाग देव तनुने पोष्या हता एथी देव तनु पुरुषरुपमां कहेवाय छे.

(२) आठ भाग अव्याकृतना अने बे भाग निरंजनना मळीने ए दश भाग देव जातिमां देवांगना (स्त्री रुप) थएली छे.

हवे बे भाग निरंजनना अव्याकृतना आठ भागमां मेळवीने देव तनुने पोषेला होवाथी देवांगना थइ तेने विषे निरंजनना बे भाग ते नीचे मुजबः-

आठ भाग अव्याकृतना हता तेमांथी सात भाग लइ स्त्रीनी सात धातुने विषे मेळवेला होवाथी ते निखाथी शिखापर्यंत स्त्री रुप बनेलो छे तेमां बे भाग निरंजनना अने एक भाग अव्याकृतनो ते हकीकत नीचे मुजब.

आठमांथी शेष रहेलो एक भाग ते स्त्रीने डाबे अंगे इंगळा नाडीमां रह्यो छे.

निरंजनना बे भाग पैकी एक भाग स्त्रीना जमणा अंगे पींगळा नाडीमां रह्यो छे, अने अर्धो भाग भगस्थ इंद्रिये अने अर्धो नेत्र द्वारने विषे रह्यो छे. स्त्रीने नेत्र करीने पुरुष

उपर मोह थाय छे अने भगस्थाने करीने पुरुषनो भोग करे छे, कारण के बंने जग्याए पुरुषना विभाग रह्या छे ते पुरुषनी चाहना करे छे, जेम तेजनो विभाग नेत्रे रह्यो छे ते तेजनुं आकर्षण करे छे, केमके नेत्र बंध करीने स्पर्शे वायु ने पाणी तेमज ग्रहवाथी अवनी अने शब्दे आकाश जणाय पण नेत्र विना तेजनो प्रकाश जणाय नहि. कारण के जे जनो विभाग होय ते तेने ग्रही शके छे. ए प्रमाणे आकाशनो विभाग कर्णे रह्यो छे ते शब्दनुं ग्रहण करे, वायुनो विभाग त्वचाए रह्यो छे, ते वायुनो स्पर्श ग्रहे, नाके पृथ्वीनो विभाग रह्यो छे तेथी ते गंध ग्रहण करे. अने रसनाए उदकनो विभाग होवाथी ते रसने ग्रहण करे.

पुरुषने विषे आठ भाग निरंजनना पोष्या हता तेमांना सात भाग देव पुरुषनी देहनी सप्त धातुमां मळी जइ नीखाथी शीखा पर्यंत पुरुष देह करी दीधो अने एक भाग रह्यो हतो तो जमणे अंगे पींगळा नाडीने विषे वर्त-मान करे छे. अव्याकृतना बे भाग पैकी एक भाग डाबा अंग इंगळा नाडीने विषे रह्यो छे, तथा अर्धो भाग पुरुषना लींग स्थाने अने अर्धो नेत्र स्थाने रह्यो छे. एथी पुरुष नेत्रे करीने स्त्री उपर मोहीत थाय छे अने लींग इंद्रिये करीने स्त्रीनो भोग करे छे.

सुनकादिक शुकदेव, दत्तात्रय, नव जोगीनी आज्ञा लइने ए सर्व, स्त्रीओना त्यागे करीने महायोगी तदाकार

तद्वत थइ गया, तेमज स्त्रीओने विषे करमीती, करमा, मीरांबाइ ने गार्गीनी आद्य लई ए सर्व, पुरुषना त्यागे करीने महा वैरागवान योगीराज तद्वत तदाकार थइ गयां. ए केवे प्रकारे त्यागी थइ योगीराज थयां ते नीचे मुजब.

आगळ कह्युं के जे जेनो विभाग होय ते तेनुं ग्रहण करे ए तो साधारण पक्ष छे. उपर कहेली हकीकतो स्थावर जंगम पर्यंत तत्वना स्वभावे करी जेम जेवी क्रिया पोखाइ छे. तेम तेवी रीते नीकळ्यां जाय छे. पण मनुष्य पुरुषार्थ करे तो ते क्रियाने फेरवी शके, दाखला तरीके मेना पोपट विगेरे पक्षीओना संस्कारमां कांइ मनुष्य भाषा बोलवी ए संस्कार पडया नहता. छतां पुरुष प्रयत्नथी बोली शके छे. मनुष्य पैकीने प्रथम तत्वनुं मिश्रण केवी रीते छे ते जाणवुं जोइए एथी जेना जेवा विभागो तेना तेवा ज्ञाने करी लेवा. जेम पचीस सोना महोरने विषे एक त्रांबानी महोर नांखी सोहागा खार मूकीने अग्निमां तेने तपाववाथी एक रस थइ जाय छे एथी त्रांबा महोरनी जाति पलटाई जई सोनामहोर रुपे जणाय छे पछी तांबाने मोले वेचाय नहि, ए प्रकारे पुरुषना आठ भागने विषे बे भाग स्त्रीना मळेला हता तेमां सतसंग रुपी खार नांखीने वैरागरुपी अग्निने विषे तपाववाथी ए दशे भागो एक रस थइ जाय छे. अव्याकृतना बे भाग निरंजनना आठ भाग

मां मळवाथी पुरुष पुरुषपणाने जाणी एक करी लेवाथी कुल पदार्थ सामान्य रूपमां देखे छे. एटलुंज नहि पण तेओने सदाने माटे महान वैराग उत्पन्न थाय छे मृत्यु-लोकनी स्त्री तो शु पण स्वर्गनी देवांगना आवी खडी होय तोपण यतकिंचित मन चलायमान नथी थतुं माटे सतसंग वैरागने ज्ञान ए त्रणथी जीवनुं कल्याण थाय छे. फक्त ज्ञानथीज जगतना जीव मोक्ष मानता होय अगर अहम्ब्र-ह्मास्मि कही मुक्त समजता होय तो ते केवा जाणवा ? जेम तांबामहोरने चांदीनु अथवा सोनानुं गीलीट चढावे छे पण चांदी अगर सोनाने ठेकाणे वेची शकाय खरुं के ? तेम एकला ज्ञानथी अहंम ब्रह्मास्मि कहेवुं व्यर्थ छे. छतां जो तेओनुं मानवुं होय तो तांबा उपर चांदीना गीलीट जेवुं छे. महापुरुषोनी कथेली कथनीनो अभ्यास करी उंडा विषयनो कर्थ नहि समजी जेम फावे तेवा अर्थो गोखी समजी बेठेला होय तो तेने ज्ञान कहेवामां आवतु नथी, दाखवा तरीके हुं ब्रह्म छुं. हुं इश्वर छुं, हुं मुक्त छुं. ए बधां वचनोनी हाजरी ब्रह्मज्ञानी पासे क्यां सुधी रहे छे के ज्यां सुधी आपत्ति नथी त्यां सुधी आपत्ति आवे सद्-वचन तो शुं पण स्वदेहज्ञान होतुं नथी माटे सतसंग, ज्ञान, भक्ति ने वैराग धारण करो कारण के देवने पण दुर्लभ छे. पण महिंमंड इंडने विषे करी शके तो मनुष्यने सुलभ छे. ना करे तो दुर्लभ छे.

राम, कृष्ण जनक विगेरेनी आद्य लइने अने अहल्या तारा, द्रौपदी, मंदोदरी, सीता, उमीया विगेरे स्त्रीजाति विना त्यागे इश्वररुप कहेवायां. तेओमां स्वसिद्ध सत्ता छे पुरुषार्थथी प्राप्त करेली नथी, कारणके ए सर्व कर्ताना विशेष अंशो छे, ते विशेष अंशनी विशेष सत्ताए करीने अखंड ज्ञाननी स्मृतिना प्रतापे जे जेना विभागनी क्रिया करवा छतां पण नष्ट नथी थतां अने सामान्य अंश तो शुभ क्रिया विना पुरुपार्थ प्राप्त नथी करतो तेम स्मृति पण नथी रहेती.

प्रकाश ब्रह्म वृत्तिना त्रण महातत्व विषे:

(१) देव तनुने विषे प्रकाश ब्रह्मवृत्तिना अविकाश महातत्वना आठ भागमां एक भाग विकाश महातत्वनो अने एक भाग कुंभस्थ महातत्वनो पोष्यो हतो ते विषे:—

ए दश भागनो देवने विषे ओहम् प्राणायम थयो. अविकाश महातत्वने संपटवत जाणवुं, एथी ओहम् प्राणायम पिंडमां खेंचाय छे कारण के पिंड संपटवत छे. एमां एक भाग विकाश महातत्वनो ते जे, ओहम् प्राणायमने मोक्ष मार्गे रह्यो छे ते केम जाणीए जे, ज्यारे ॐकार प्राणायण शरीरमां प्रवेश करे छे त्यारे सर्व नाडीओने आगे आगे विकाश करतो जाय छे. अने एनी पाछळ ओमूकार प्राणायम संचरे छे. कुंभस्थ महातत्वनो एक भाग

ते जे, ए ओम प्राणायमने विषे व्यापक रह्यो छे ते केम जाणीए जे ज्यारे कोइ योगी साधन करे छे त्यारे साधन करतां करतां प्राणायम घणीवार स्तंभन पामे छे.

(२) विकाश महा तत्वना आठ भागमां एक भाग अविकाश महातत्वनो अने एक भाग कुंभस्थ महातत्वनो पोष्यो हतो ते विषेः—

ए दश भागनो तो सोहम् प्राणायम थयो. विकाश महातत्व प्रकाशक जाणवुं, एथी सोहम् प्राणायम बहार सुन्यमां प्रवेश करे छे कारण के सुन्यमां विकाशपणुं रह्युं छ एक भाग अविकाश महातत्वनो ते जे, सोहम् प्राणायमना मोक्ष भागे रह्यो छे. ते केम जाणीए जे द्वादश आंगळ श्वास चालीने स्थंभन पामे छे ते ज्यारे अविकाश महातत्व अटके छे त्यारे प्राणायम पाछो उलटे छे. कुंभस्थ महातत्वनो एक भाग ते जे, सोहम् प्राणायमने विषे व्यापक रह्यो छे तेथी प्राणायमने विषे दृढपणुं रह्युं छे ए दृढपणाने लीधे प्राणायम उतावळो वही जतो नथी.

(३) कुंभस्थ महातत्वना अष्ट भागमां एक भाग अविकाश महातत्वनो अने एक भाग विकाश महातत्वनो पोष्यो हतो ते विषे. कुंभस्थ महातत्वने समदम जाणवुं, एथी कुंभक प्राणायम समदम थाय छे. ओमकार प्राणायमने पिंडमां खेंचतां अने सोहम् प्राणायमने बहार मूकतां

मध्ये श्वास स्थंभन पामे छे ते कुंभस्थ महातत्व जाणवुं एथी देवमां सामर्थ्य रहे छे.

थते कुंभस्थ महातत्वे तो अविकाश महातत्वनो भाग रह्यो छे. अने विखराते कुंभस्थ महातत्वे तो विकाश महातत्वनो भाग रह्यो छे.

संजम भोगवृत्तिना त्रण चक्षसत्व विषे:—

(१) देवने विषे वर्ग ज्ञान चक्षसत्वना त्रण भागमां त्रण भाग अनंग चक्षसत्वना अने चार भाग काल चक्षसत्वना पोष्या हता ते विषे:—

(१) वर्ग ज्ञान चक्षसत्व ते जे, देव पुरुष देवांगनानुं दृष्टिए करीने अवलोकन करे के ध्याने करीने जुवे. अथवा देवांगना दृष्टिए करीनेके ध्याने करीने देव पुरुषनुं अवलोकन करे. स्त्रीने पुरुषना लींगनो संजम थाय ते वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. स्त्रीने विष वर्गज्ञान चक्षसत्वनी प्रगट क्रिया ते जे, स्त्रीना कमळने विषे बिंदुनी वहेचण करीने जे जे तत्व इंद्रीयोनो अरग होय ते तेना तत्व इंद्रीयोनी जग्याए पोषीने घाट घडे.

(२) देवतनुने विषे अनंग चक्ष सत्वनो विभाग ते जे, देव पुरुष देवांगनानुं आलोचन कर्या पछी कामातुर थाय ए प्रमाणे देवांगना पण पुरुषनुं अवलोकन कर्या पछी कामातुर थाय ते अनंग चक्षसत्व जाववुं. संजम कर्या पछी मैथुन

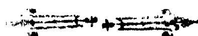
क्रिया करे ते अनंग चक्षसत्व जाणवुं. ज्यारे पुरुष मैथुन करे छे त्यारे स्त्रीना लींगने विषे आनंद उपजावे छे अने पुरुषना बिंदुने खेंचीने स्त्रीना कमळमां पहोचाडे छे ते स्त्रीनो प्रगट अनंग चक्षसत्व जाणवो. पुरुषना बिंदुने नीचे उतारे छे ते पुरुषनो कामचक्षसत्व अने स्त्रीना बिंदुने उंचे चढावे ते स्त्रीनो कामचक्षसत्व जाणवो. कारणके पुरुषने विषे तो अधोमुखे (नीचा मुखे) अनंग चक्षसत्व रह्यो छे अने स्त्रीने विषे तो उर्ध्व (उंचा) मुखे अनंग चक्षसत्व रह्यो छे, तेथी स्त्रीनो अनंग चक्षसत्व बिंदुने उपर खेंचे छे अने मैथुन करतां स्त्री वहेली शांति पामती नथी. पुरुष थोडीवारमां शांति पामे छे कारणके नीचा मुखे अनंग चक्षसत्व रह्यो छे. (३) देव तनुने विषे कालचक्षसत्वनो विभाग ते जे, मैथुन कर्या पछी पंचभुतना अरगने वंकनालमां एकठो कर्यो छे ते. देव पुरुषना पंचभुतने विषे सर्व तत्व इंद्रीयोना विभाग रह्या छे, जेम बीजने विषे वृक्ष रहयुं छे तेम. बिन्दुमां घाढपणुं रहयुं छे पृथ्वीनो विभाग जाणवो अने रसपणुं ते जळनो विभाग, उष्णपणुं ते तेजनो विभाग, अने विकाश पणुं ते आकाशनो विभाग अने वेगपणुं ते वायुनो विभाग जाणवो. ए पंचभुतनो अरग मिश्र थइ रह्यो छे. मैथुन कर्या पछी बिंदुपात थाय छे ते कालचक्षसत्व जाणवुं. देव स्त्रीने विषे कालचक्षसत्वनो विभाग ते जे, स्त्रीना रसबिन्दुने विषे पंचभुतनी आद्य लइने सर्व तत्वनो अरग खेंची

आण्यो छे ते स्त्रीना बिंदुने विषे चिकाशने दुर्गंधपणुं रह्युं छे ते पृथ्वीनो विभाग, अतिशय रसपणुं रह्युं ते जळनो विभाग, उष्णता ते तेजनो विभाग, त्यार पछी स्त्रीना ने पुरुषना बिन्दुनो संजम थाय छे त्यारे पुरुषना बिन्दुने वच्चे घालीने स्त्रीनुं बिन्दु उपर रहे छे ते आकाशनो विभाग अने पुरुषना बिन्दुने आकर्षण करीने स्त्रीनुं बिन्दु पोताना बिन्दुमां मेळवी दे ते छे वायुनो विभाग जाणवो ए प्रमाणे स्त्री पुरुष ते विषे कालचक्षसत्वनी प्रगट क्रिया थाय छे स्त्रीना कमळमां बिन्दुना घाटने परिपक्व करीने कमळथी भिन्न करी नांखे छे, त्यारे बाळक प्रसवे छे ते कालचक्ष सत्व जाणवुं. आ प्रमाणे संजम भोगवृत्तिना त्रण चक्षसत्व देवने विषे वर्ते छे ते अने कर्ताए तेत्रीस करोड प्रकारना देव स्फुरण कर्या ते कह्या.

दोहा.

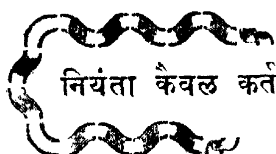
देवतनु नरनारीके, कीये विचरण विविधाय;
भूतभविष्य वर्तमानके, सूणतां ज्ञान समाय. १

अब थावर जंगमजीनु, तीनु तन तत्व अनुसार;
नारण्यदास तेही सुण विधि, कहे कुबेर सो विचार. २



अथः स्थावर जंगम तनु तत्व पोषण.

कंद १० मो.



नियंता केवल कर्तानी क्रियावृत्तिए स्थावर, जंगम, कीट पतंग जे प्रमाणे रच्यां तेनी हकीकत नीचे प्रमाणे.

क्रियावृत्तिथी लइ पांचवृत्ति सुधी तत्वना विभागने उलटा सुलटी संजम करीने चोराशी लक्ष प्रकारनां तनु रचायां छे. आ हकीकत श्रोता अधिकारी प्रत्ये परमगुरु कुबेर स्वामीजी कहे छे.

अहंकारघणना पंचभूतोनी वहेंचणी:—

(१) पृथ्वीतत्वना छ भागमां बीजा चार तत्वना एक एक भाग पोष्या हता तेना तो थळचर पिंड थयां.

ए थळचरपिंड त्रण प्रकारना छे (१) मनुष्य (२) पशु अने (३) कीट जाति. एमां मनुष्य तेरलक्ष प्रकारनां, पशु सप्त लक्ष प्रकारनां अने कीट दशलक्ष प्रकारनां छे.

(२) जळतत्वना छ भागनां बीजा चार तत्वना एक एक भाग पोष्या हता तेना जळचर पिंड थयां.

जळचरतनु बावीशलक्ष प्रकारनां छे. एमां ओगणीस लक्ष प्रकारनां जळमांज विचरण करे छे. ते जळ छोडीने बहार जाय नहि अने त्रण लक्ष प्रकारना जळथी बहार चारो करीने पाछां जळमां आवी रहे छे.

(३) पवन तत्वना छ भागमां बीजा चार तत्वना एक एक भाग पोष्या हता तेनी पतंग जाति थई.

पतंगतनु चौदलक्ष प्रकारनां छे, एमां नवलक्ष प्रकारनां आकाशमां अल्पकाळ वर्ते अने पाछां अवनी उपर आवी रहे.

(४) अग्नितत्वना छ भागमां बीजा चार तत्वना एक एक भाग पोष्या हता, ए योनीवाळा जीवो (पतंग) अग्निमां प्रवेश करे छे.

(५) आकाशतत्वना छ भागमां बीजा चार तत्वना एक एक भाग पोष्या हता, ए योनीवाळा पतंग आकाशमांज रहे छे अने अवनी उपर आवता नथी.

त्रण लक्ष प्रकारनां पतंग अवनी उपर अल्प आवे अने आकाशमांज रहे. बे लक्ष प्रकारनां पतंग आकाशमांज रहे अने अवनी उपर आवेज नहि.

(१) अष्ट भाग अवनी तत्वना अने चार भाग अर्धा अर्धा चार तत्वना पोष्या हता तेनी थावर जाति थई. थावर जाति अढार लक्ष प्रकारनी छे ए जातिना पंच प्रकार छे.

(१) तृण जाति (२) पनडी जाति (३) वेली जाति (४) जळ जाति अने (५) वृक्ष जाति.

(१) बीजना अंकुरमां वायु तत्व रह्युं छे तेनी तृण जाति.

(२) बीजना अंकुरमां आकाश तत्व रह्युं तेनी पनडी जाति.

(३) बीजना अंकुरमां जळतत्व रह्युं छे तेनी वेली जाति.

(४) जळ जातिना बीजना अंकुरमां उर्ध्व भागे जळ रह्युं छे. अने अधो भाग मूळ अंकुरने विषे अग्नि तत्व रह्युं छे, तेथी ए जाति मळमां थाय छे. मूळ भागना अंकुर तरफ अग्नि तत्व रहेलुं होवाथी जे जळ जंतु रहे तो ते मरी जाय.

(५) वृक्ष जातिना पृथ्वी तत्व व्यापक रह्युं छे तेथी वृक्ष अतिशय पुष्ट थाय छे.

गुणघणनुं जोडुं.

(१) रजोगुणने अहंकार घण जोटे जाणवा (२) सतो गुणने स्वकाश घण जोटे जाणवा (३) तमोगुणने अचंत घण जोटे जाणवा.

(१) अचंत घणनी दश भावनामांथी नव नव भाग

लई एमां एक एक भाग तमोगुणना दश काळना, थावर जाति बिजने पोष्या.

(२) तमोगुणना दशकाळमांथी नव नव भाग लइ एमां एक एक भाग अचंत घणनी दश भावनाना जंगम जातिने विषे पोष्या.

(३) सतोगुणना पंच अंतःकरण अने पंच अवस्थाना नव नव भाग लइ एमां एक एक स्वकाश घणना पंच संभसकरण अने पंच विवस्थाना जंगम जातिने विषे पोष्या.

(४) स्वकाशघणना पंच संभसकरण अने पंच विवस्थाना नव नव भाग लइ एमां एक एक भाग सतोगुणना पंच अंतःकरण अने पंच अवस्थाना थावर जाति विषे पोष्या.

(५) रजोगुणनी दश आकांक्षा पैकी गवन, विषय, श्रवण, निरीक्षण, अने उचार आकांक्षाना पंच पंच भागमां, क्षुधा पीपासा, सुगंध शीत उष्ण, मल विसर्जन अने ग्रहण आकांक्षानो एक एक भाग अने अहंकार घणनी पंच मात्राना चार भाग मूकी जंगम जातिने विषे पोष्या.

(६) क्षुधा पीपासा, सुगंध, शीत उष्ण, मलविसर्जन अने ग्रहण आकांक्षाना पंच पंच भागमां गवन, विषय, श्रवण, नीरीक्षण अने उचार आकांक्षानो एक एक भाग, अने पंच मात्राना चार चार भाग मूकी थावर जाति बिजने विषे पोष्या.

(१) त्रणगुणना नव नव भागमां त्रण घणनो एक एक भाग मूकी जंगमजातिने विषे पोष्या.

(२) त्रणघणना नव नव भागमां त्रणगुणनो एक एक भाग मूकी स्थावर जाति बीजने विषे पोष्या.

(१) प्रकृति तत्वकारण अने आनंद तत्वकारणना नव नव भागमां एक एक भाग महातत्वकारण अने धनंजे तत्वकारणनो मुकी जंगम जातिने विषे पोष्या.

(२) महातत्वकारण अने धनंजे तत्व कारणना नव नव भागमां एक एक भाग आनंदतत्व कारण अने प्रकृति तत्व कारणनो मुकीने स्थावर बीजने विषे पोष्या.

(१) निरंजनना पंच भाग अने अव्याकृतना पंच भाग लई स्थावर जाति बिजने विषे पोष्या.

ए भागो स्थावर जातिमां त्रण प्रकारे पोष्या छे.

(१) पंच भाग निरंजनना अने पंच भाग अव्याकृतना वृक्षजातिने विषे पोष्या.

(२) पंच भाग निरंजनना अने पंच अर्धा भाग अव्याकृतना ए दश अर्धा भाग वेली जातिने पोष्या.

(३) पंच भाग निरंजनना अने पंच भाग अव्याकृतना ए दश भाग पनडीजाति, जळजाति अने तृणजातिने विषे पोष्या.

(४) अष्टभाग निरंजनना अने बे भाग अव्याकृतना,

अष्टभाग अव्याकृतना अने बे भाग निरंजनना जंगम अने मनुष्य विषे पोष्या.

(१) अष्ट अर्धा भाग निरंजनना अने बे अर्धा भाग अव्याकृतना अष्ट अर्धा भाग अव्याकृतना अने बे भाग निरंजनना पक्षी जंगम जातिने, अष्ट प्रकारना जलजाति जीवने अने चारलक्ष प्रकारना कीटने तेमज नवलक्ष प्रकारना पतंगने अने सप्तलक्ष प्रकारना पसुने विषे पोष्या.

(२) पंच भाग निरंजनना अने पंच भाग अव्याकृतना ए सरखा भाग छ लक्ष प्रकारना जलजाति जीवने अने पंचलक्ष प्रकारना पतंगने विषे पोष्या. एथी स्त्री पुरुषना संजोग विना ए जाति जळ पृथ्वीना संयोगे उत्पन्न थाय छे.

(१) संजम भोगवृत्तिना अनंग चक्षसत्वना त्रण भागमां त्रण भाग वर्गज्ञान चक्षसत्वना अने चार भाग कालचक्षसत्वना मूकी मनुष्य जंगम जातिने पोष्या.

हवे ते मनुष्य जंगम जातिने पंच विभागे पोष्या छे ते नीचे मुजब: मनुष्य जंगम जातिना पंच शरीर स्थुल, सुक्ष्म, कारण, महाकारण अने परमकारण ए पैकी वर्गज्ञान चक्षसत्वना त्रण भाग अने त्रण भाग अनंग चक्षसत्वना तेमज चार भाग काळचक्ष सत्वना स्थुल शरीरने विषे पोष्या.

त्रण अर्धा भाग वर्गज्ञान चक्षसत्वना त्रण अर्धा भाग अनगचक्षसत्वना अने चार अर्धा भाग कालचक्षसत्वना

लइने जंगमना सुक्ष्म शरीरने विषे पोष्या.

त्रण पा भाग वर्गज्ञान चक्षसत्वना, त्रण पा भाग अनंग चक्षसत्वना, त्रण पा भागना अर्धा त्रण भाग अनंग चक्षसत्वना अने चार पा भागना अर्धा चार भाग काल चक्षसत्वना लइने जंगमना महाकारण शरीरने विषे पोष्या. अने ते महाकारण शरीरना दश पा भागना अर्धो पा भाग जे, तेना दश अर्धा भाग लइने जंगम जातिना परम कारण शरीरने विषे पोष्या.

(२) त्रण अर्धा भाग वर्गज्ञान चक्षसत्वना लइने त्रण अर्धा भाग अनंग चक्षसत्वना लइने अने चार अर्धा भाग कालचक्षसत्वना लइने अष्ठ प्रकारना जल जाति जीवने सप्त लक्ष प्रकारना पशु जंगम जातिने अने चार लक्ष प्रकारना कीट जंगम जातिने तेमज नव लक्ष प्रकारना पतंग जंगम जातिने विष पोष्या हता.

(३) अनंग चक्षसत्वना त्रण पा भागमां त्रण पा भाग वर्गज्ञान चक्षसत्वना अने चार पा भाग कालचक्षसत्वना मूकीने छ लक्ष प्रकारना कीट जंगम जातिने, चौद लक्ष प्रकारना जळ जाति जंगमने अने पंचलक्ष प्रकारना पतंगने पोष्या.

(४) वर्गज्ञान चक्षसत्वना त्रण अर्धा भागमां त्रण अर्धा भाग अनंग चक्षसत्वना अने चार अर्धा भाग कालचक्ष-सत्वना मूकीने वृक्षजाति अने वेलीजातिने विषे पोष्या.

(५) अनंग चक्षसत्वना त्रण पा भागमां एटलाज भाग अनंगचक्ष सत्वना अने चार पा भाग कालचक्षसत्वना मूकीने पनडी जातिने, तृणजातिने, जळ जातिने विषे पोष्या.

(१) प्रकाश ब्रह्मवृत्तिना अविकाश महातत्वना अष्ट भागमां एक भाग विकाश महातत्वनो अने एक भाग कुंभस्थ महातत्वनो मूकीने.

(२) विकाश महातत्वना अष्टभागमां अविकाश महातत्वना एक भाग अने कुंभस्थ महातत्वनो एक भाग मूकीने.

(३) कुंभस्थ महातत्वना अष्ट भागमां अविकाश महातत्वनो एक भाग अने विकाश महातत्वनो एक भाग मूकीने मनुष्य जंगम जातिने विषे पोष्या.

आ त्रणे कोष्टकना विभागो एज प्रमाणमां मनुष्य जंगमना पंचे शरीरमां वर्तमान करे छे.

बीजा जंगम जातिमां थती क्रिया.

(१) अष्ट अर्धा भाग विकाश महातत्वना अने बे अर्धा भाग अविकाश महातत्वने कुंभस्थ महातत्वना लइने जंगमजातिना महा कारण देहने विषे पोष्या.

(२) अष्ट पा भाग विकाश महातत्वना अने बे भाग अविकाश अने कुंभस्थ महातत्वना लइने जंगमना कारण देहने विषे पोष्या.

(३) अष्ट पा भागना अर्धा भाग विकाश महातत्वना लइने अने बे पा भागना अर्धा भाग अविकाश अने कुंभस्थ महातत्वना लइने जंगमना सुक्ष्म शरीरने विषे पोष्या अने ए दश पा भागना अर्धा पा भाग तेना अर्धा दश भाग लइने तो जंगमना स्थुल देहने विषे पोष्या. ए प्रकारे विकाश महातत्वना दश दश भाग जंगमना पंच शरीरने विषे पोष्या.

(४) अष्ट अर्धा भाग अविकाश महातत्वना अने बे अर्धा भाग विकाश अने कुंभस्थ महातत्वना लइने जंगमना परम कारण देहने विषे फरी पोष्य.

(५) अष्ट पा भाग अविकाश महातत्वना अने बे पा भाग विकाश अने कुंभस्थ महातत्वना लइने जंगमना कारण शरीरने पोष्या.

(६) अष्ट पा भागना अर्धा अष्ट भाग अविकाश महातत्वना लईने अने बे पा भागना अर्धा पा भाग विकाश अने कुंभस्थ महातत्वना लइने जंगमना सुक्ष्म शरीरने विषे पोष्या,

(७) अने उपला ए दश पा भागना अर्धा पा भाग तेना दश अर्धा पा भाग लइने जंगमना स्थुल शरीरने विषे पोष्या.

(८) कुंभस्थ महातत्वना अष्ट भागने विषे बे भाग अविकाश महातत्वने विकाश महातत्वना मूकीने जंगमना

महाकारण शरीरने परम कारण शरीरनी संधीने विषे पोष्या हता तेमां पंच भाग तो उर्ध मुखे परमकारण देहने विषे अने अधोमुखे महाकारण देहने विषे पोष्या.

(९) अष्ट पा भाग कुंभस्थ महातत्वना अने बे पा भाग विकाश अने अविकाश महातत्वना मूकीने जंगमना कारण देहने परमकारण देहनी संधीने विषे पोष्या.

(१०) अष्ट पा भागना अर्धा पा भाग कुंभस्थ महातत्वना लइने अने बे पा भागना अर्धा अर्धा पा भाग विकाश महातत्वने अविकाश महातत्वना मूकीने जंगमना सूक्ष्म शरीरने कारण शरीरनी संधीने विषे पोष्या,

(११) ते दश पा भागना अर्धा पा भाग जे तेना दश अर्धा भाग लइने तो जंगमना स्थुल शरीरने सूक्ष्म शरीरनी संधीने विषे पोष्या.

हवे एने ए प्रकारे स्थावर जंगमने विषे जेमां जेटला विभाग तेमां ते प्रमाणे पंच शरीरने विषे विचरण जाणवुं.

(१) अष्ट अर्धा भाग अविकाश महातत्वना लईने अने बे अर्धा भाग विकाशने कुंभस्थ महातत्वना लइने नव लक्ष प्रकारना पंखी जंगम अष्ट लक्ष प्रकारना जलजाति जंगम अने सप्त लक्ष प्रकारनां पशु जंगम जातिने अने चार लक्ष प्रकारना कीट जातिने पोष्या.

(२) अष्ट अर्धा भाग विकाश महातत्वना अने बे

अर्धो भाग अविकाश अने कुंभस्थ महातत्वना लइने नव लक्ष प्रकारना पंखी जंगम जातिने, अष्ट लक्ष प्रकारना जल जाति जंगमने, सप्त लक्ष प्रकारना पशु जाति जंगमने अने चार लक्ष प्रकारना कीट जंगम जातिने पोष्या.

(३) अष्ट पा भाग अविकाश महातत्वना लईने अने बे पा भाग विकाशने कुंभस्थ महातत्वना लइने, चौद लक्ष प्रकारना जळ जाति जंगमने, छ लक्ष प्रकारना कीट जाति जंगमने, पंच लक्ष प्रकारना पतंग जाति जंगमने विषे पोष्या.

(४) अष्ट पा भाग विकाश महातत्वना लइने अने बे पा भाग अविकाश अने कुंभस्थ महातत्वना लइने चौद लक्ष प्रकारना जळ जाति जंगमने, छ लक्ष प्रकारना कीट जंगम जातिने, अने पंच लक्ष प्रकारना पतंग जंगम जातिने विषे पोष्या.

(५) अष्ट पा भाग कुंभस्थ महातत्वना लइने चौद लक्ष प्रकारना जल जाति जंगमने, छ लक्ष प्रकारना कीट जाति जंगमने, अने पंच लक्ष प्रकारना पतंग जाति जंगमने पोष्या.

(६) अष्ट भाग अविकाश महातत्वना लईने अने बे भाग विकाश अने कुंभस्थ महातत्वना लइने स्थावरमां वृक्ष जातिने विषे पोष्या अने जे वेली घणां वर्ष सुधी रहे छे ते वेलीमां पोष्या.

(७) अष्ट भाग विकाश जहातत्वना अने बे: भाग

अविकाश अने कुंभस्थ महातत्वना लईने स्थावरने विषे फरीथी अने जे वेली घणा वर्ष रहे छे तेने विषे पोष्या.

(८) अष्ट भाग कुंभस्थ महातत्वना लई अने बे भाग अविकाश अने विकाश महातत्वना लइने स्थावरमां वृक्ष जातिमां अने जे वेली घणा वर्ष रहे छे तेमां पोष्या.

(९) अष्ट अर्धा भाग अविकाश महातत्वना लईने, बे अर्धा भाग विकाश अने कुंभस्थ महातत्वना लइने स्थावरमां तृण जाति जे घणा वर्ष रहे छे तेमां पोष्या.

(१०) अष्ट अर्धा भाग विकाश महातत्वना लइने अने बे अर्धा भाग अविकाश अने कुंभस्थ महातत्वना लइने स्थावरमां जे तृण जाति घणा वर्ष रहे छे तेमां जळ जाति वेली जे घणा वर्ष सुधी रहे छे तेमां पोष्या.

(११) अष्ट अर्धा भाग कुंभस्थ महातत्वना अने बे अर्धा भाग विकाश अने अविकाश महातत्वना लइने स्थावरमां जे तृण जाति घणा काळ पहोंचे तेमां फरीथी अने जळ जाति वेलीमां जे घणा काळ सुधी रहे तेने विषे पोष्या.

(१२) अष्ट पा भाग अविकाश महातत्वना अने बे पा भाग विकाश अने कुंभस्थ महातत्वना लइने स्थावरमां जे तृणजाति अल्प आयुष्य भोगवे तेने विषे अने जे वेली जाति अल्प आयुष्य भोगवे तेने विषे पोष्या.

(१३) अष्ट पा भाग विकाश महातत्वना लइने अने

बे पा भाग अविकाश अने कुंभस्थ महातत्वना लइने स्थावरमां जे तृण जाति अल्प आयुष्य भोगवे तेमां फरीथी अने जे वेली अल्प आयुष्य भोगवे तेने विषे पोष्या.

(१) अष्ट पा भाग कुंभस्थ महातत्वना अने बे पा भाग अविकाश अने विकाश महातत्वना लइने स्थावरमां जे तृण जाति अल्प आयुष्य भोगवे छे तेमां अने जे वेली जातिमां अल्प आयुष्य भोगवे छे तेमां पोष्या.

हवे ए प्रकारे नां तत्व संयुक्त कर्तानी क्रिया वृत्तिए स्थावर, जंगम, कीट, पतंग, मनुष्य, पशुनां तनु उत्पन्न कर्यां पण सर्व जडवत तंतु रह्यां त्यारे कर्ताए कर्तानी सजीवनवृत्ति सर्व तंतुने विषे प्रेरक करी ए वृत्तिथी सर्व घाट तेमना प्रमाणमां वृद्धि पामी परिपक्व थया. जेम वृक्षने विषे बिज परिपक्व थाय छे, ते जेम जळ पृथ्वीना योग विना जडनां जडज रहे छे. ए प्रमाणे सर्व तंतु रच्यां खरां पण जडनां जड रह्यां ने कोइ हलणचलण वगेरे चेष्टा करवा लाग्यां नहि, त्यारे निज सजाण स्वरुप केवल कर्ताए कर्ता अंशवृत्तिए करीने पोताना अंश प्रेरक कर्या. ते कर्ताना अंश निज जाण स्वरुप जाणवा. ते निज स्वरुप अंश प्रेरक थवाथी कर्त्तानी प्रकाश ब्रह्मवृत्तिनां त्रण महातत्व चैतन कर्यां त्यार पछी कर्त्तानी संजम भोगवृत्तिनां त्रण चक्षसत्व चैतन कर्यां, त्यार बाद निरंजन अने अव्याकृत चैतन कर्यां, एम उत्तरोत्तर सर्व तत्व इद्रियोने चैतन

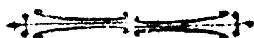
कर्यां एथी जेटला विभागनां तत्व पोष्यां हतां तेटलां पोत पोतानां हलणचलण वगेरे चेष्टा करवा लाग्यां.

दोहा

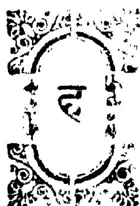
एही विधि स्थावर जंगम, कीन्येहु तत्व जमाव;
अधिक नुन्य विभुतीवग, समरेहु विपु विभाव. १
ता मही प्रथम प्रकाशेहु, स्थिर स्थावर तनु चिन;
नारण्यदास रज तज करी, कहे कुवेर भिन्न भिन्न. २



अथः थावर तनु पंचीकरण क्रिया देखावन नाम.



एकादशमो कंद.



हवे ते स्थावर जंगमना तनुने विषे क्या क्या तत्वना विभागनी कइ कइ चेष्ट थाय छे. ते कहेवामां आवशे.

(१) रजोगुणनी आकांक्षाना स्थावरमां विभाग पोष्या हता ते विषे:-एमां पंच आकांक्षाना पंच पंच भाग अने

पांचना एक एक भाग पोष्या हता.

(१) स्थावरने विषे श्रवण आकांक्षा ते जे, ज्यारे मेघ गर्जना थाय छे त्यारे सर्व वनस्पति खडक (खडी) थइने कटाक्ष मांडे छे.

(२) स्थावरमां सुगंध आकांक्षा ते जे, सारी (फळद्रुप) जमीन अने हलकी जमीननी स्थावर परीक्षा करीने जामे छे फळद्रुप जमीनमां तरुवर अतिशय पुष्टि पामे छे अने निर्बळ भूमिमां ते वृक्ष निर्बळ रहे छे, ते सुगंध आकांक्षाने लीधे.

(३) निरीक्षण आकांक्षानो एक भाग ते जे, सर्व वनस्पतिनां बीज भूमिना उदरमां कोइ बे आंगळ, चार आंगळ, वेंतके हाथभार उंडां गुप्त होय छे छतां ज्यारे वरसादथी अवनी भींजे छे त्यारे सर्व बीजना अंकुर उर्ध्व भागे उगीने उपर आवे छे अने मूळ पाताळे जाय छे. पण जो स्थावरने विषे निरीक्षण आकांक्षा न होय तो अंकुर अवळा सवळा थइ जाय.

(४) क्षुधा पीपासा आकांक्षा ते जे स्थागर जळ पृथ्वीनुं शोषण करे छे, त्यारे वृक्ष व्रद्धि पामे छे.

(५) उच्चार आकांक्षा ते जे स्थावरने विषे मुख रसना विना उच्चार आकांक्षा रुंधन पामी तेथी तेनां अनेक मुळ प्रगट थयां ए प्रमाणे स्थावरमां सूक्ष्म भागे उच्चार आकांक्षा रही छे.

(६) शीत उष्ण आकांक्षा ते जे, ज्यारे हिम पडे छे त्यारे वृक्ष जळी जाय छे ते उष्ण आकांक्षा जाणवी. अने ज्यारे सूर्य अतिशय तपे छे त्यारे वृक्षनां पत्र करमाई जाय छे ते अवसरे स्थावरने शीतनी आकांक्षा थाय छे.

(७) ग्रहण आकांक्षा ते जे, स्थावर पृथ्वीने मुळवती पकडी रहे छे, ते ग्रहण आकांक्षा जाणवी.

(८) विषय आकांक्षा ते जे, स्थावरने द्वादश मासमां फळ फुल आवे छे ते विषय जामांक्षा जाणवी.

(९) मळ विसर्जन आकांक्षा ते जे, वर्षे वर्षे पत्र खरी पडे छे.

(१०) गवन आकांक्षा ते जे गवन आकांक्षा स्थावरनो चरण विना रुंधन पामी तेथी वृक्षने अनेक शाखा थइ, ए प्रमाणे गवन आकांक्षानो सुक्ष्म भाग रह्यो छे.

अहंकारघणना पंचभुत अने पंचमात्रा विषे.

(१) स्थावरने विषे पृथ्वी तत्वना अष्ट भाग अने चार तत्वना अर्धा अर्धा भाग ते जे, स्थावरथी पृथ्वीथी अलग थइ हलण चलण करी शकातुं नथी कारणके एने विषे पृथ्वीना आठ भाग रह्या छे अने अतिशय जडवत तन ते पृथ्वीना विशेष भागे करीने थयुं छे.
अने एमां जळतत्वनो अर्धो भाग ते जे स्थावरना काष्ट भागने विषे अरग रह्यो छे, जे चंदननी आग्र लइने अत्तर उतरे छे. अने अग्निनो विभाग ते जे, स्थावरना काष्ट

भागने विषे अग्नि रह्यो छे. ते काष्टने मथन करे छे त्यारे प्रगट थाय छे. अने पवननो भाग ते जे, स्थावरने विषे जळ संचरे छे ते नाडीओ पवनना अर्धा भागनी थई छे. आकाश तत्वनो भाग ते जे, स्थावरना काष्टने विषे विकाशपणुं रह्युं छे, जेथी करीने काष्ट जळने विषे डुबतुं नथी. वळी कोइ काष्टमां लोखंडनो खीलो मारे छे ते अंदर उतरी जाय छे. छिद्रत्व ते आकाशनो भाग जाणवो.

स्थावरने विषे पंच मात्रा रही छे ते विषः--

(१) शब्द मात्रा ते स्थावरना काष्टने विषे शब्द रह्यो छे, केम जाणीए जे. ढोल, मृदग, डफ ने खंजरीनी आदि लइ काष्टनां वांजीत्र वागे छे ते शब्द मात्राए करीने वागे छे

(२) स्पर्श मात्रा ते, स्थावरने विषे त्वचा भाग सर्व शरीरने विषे रह्यो छे, ते स्पर्श मात्रा जाणवी.

(३) स्थावर विषे रुप मात्रा ते जे स्थावरनां मूळ पृथ्वीना विकाशमां जोइ जोइने प्रवेश करे छे, ते जो देख्या विना चाले तो मूळ कोमळ होवाथी कोइ कठण भागमां ते लागे तो संकोचाइ जवाथी तेनी खराब हालत थाय. माटे ए प्रकारे स्थारमां रुप मात्रा रही छे.

(४) स्थावर विषे रस मात्रा ते जे, स्थारनो कुंपळोने विषे अमी रही छे अने स्थावरना मूळनी अग्रे कोमळता रही छे, ते रस मात्रानी अमीए करीने कोमळता रहे छे. अने वळी पृथ्वीना रसनो स्वाद लइ जाणे छे. ते रस मात्रा जाणवी.

(५) स्थावरमां गंध मात्रा ते जे, स्थावरमां रजो गुणनी सुगंध आकांक्षा (के जे सारी नरमी जमीननी परीक्षा करे छे) मां गंध मात्रा रही छे, एथी ए भूमिनी वास जाणे छे. ए प्रकारे अहंकार घणनी पंच मात्रा स्थावरमां रही छे.

सतो गुणना पंच अंतःकरण अने पंच अवस्थानो एक एक भाग रह्यो छे ते विषे:--

(१) स्थावरने विषे जाग्रत्त अवस्थानो एक भाग ते जे, वृक्ष प्रफुल्लित रहे छे, तेने विषे मन अंतःकरणनो अंश रह्यो छे, ज्यारे रात्रि पडे छे त्यारे वृक्ष निद्रावश थाय छे, ते आगे जाग्रत अवस्था हती त्यारे वृक्षनां पत्र मळी गयां न हतां ते वखते मन अंतःकरणनो अंश लीन पाम्यो नहतो पण रात्रि थतां मन लीन थवाथी स्वप्नावस्था थइ स्थावर निद्रावश थाय छे.

(२) स्वप्न अवस्थामां सर्व जाति पृथ्वी विषेथी जळनुं शोषण करे छे कारण के बुद्धि अंतःकरणनो विभाग एमां रह्यो छे ते पृथ्वीना नीरनुं शोषण करे छे. ए प्रकारे स्वप्नावस्था जाणवी.

(३) स्थावरने विषे शुसुप्ति अवस्थानो एक भाग अने अहंकार अंतःकरणनो अंश रह्यो छे, ज्यारे पृथ्वी विषेथी जळ शोषतुं वृक्ष रही जाय छे त्यारे शुसुप्ति. अवस्था जाणवी. अने जे घडीए व्रक्ष तलभार वृद्धि पामे तो

अवस्था नहि पण अन्य जाणवी कारणके वृक्ष अवर्न
विषेथी जळ शोषे छे ते क्रिया अहंकार अंतःकरणना विभाग
लीधे वंध थइ जाय छे केमके अहंकारनो विभाग समद्
करी नांखे छे तेथी ए वखते वृक्ष वधतुं नथी. वृक्षने
एधाणी राखीने घडी मापीने जोवाथी जणाय के वृ
तलभार वध्युं नथी त्यारे सुषुप्ति अवस्था तेमां वर्तत
जाणवी.

(४) स्थावर विषे तुर्यावस्था ते, ज्यारे शुसुप्ति अ
अहंकार अंतःकरण लीन पामे छे त्यारे तुर्या जाणवी
ज्यारे वृक्षने तेना शरीरनुं भान विसर्जन थइ जाय
त्यारे कोई वृक्ष निद्राने विषे तूटीन खरी पडे छे. ते भा
तुर्यावस्थाने लीधे नथी रहेतुं. कारणके चित्त अंतःकरण
आ अवस्थामां रहेलो विभाग अतिशय सुक्ष्म अने निर्म
होवाथी ते वृक्षने ग्रही शकतो नथी.

(५) ज्यारे वृक्षमां तुर्यावस्था अस्त थाय छे अने जाग्र
अवस्थानो उदय थाय छे त्यारे ए संधीने विषे उनमु
अवस्थाने नचित अंतःकरण जाणवु. जे वखते तुर्यास्वथा
विसर्जनपणुं थइ जवाथी वृक्ष प्रकाशवान थाय छे ते वख
जाग्रत पणानी उपाधी होती नथी.

ए समये उनमुनी अवस्थाने नचित अंतःकरण
अमल जाणवो. ए प्रकारे स्थावरने विषे पंच अवस्थानो अ
पंच अंतःकरणनो एक एक भाग रह्यो छे, अने मनु

विषे नव नव भाग रह्या छे. मनुष्यमां नव नव भाग रह्या छे छतां ते त्रण अवस्थानी गति जाणी शकतुं नथी तो स्थावर के जेने विषे अंतःकरणनो एक एक भाग रह्यो छे ते अवस्थाओनी गति केवी रीते जाणी शके?

स्वकाश घणना पंच संभसकरणना अने पंच विवस्थाना नव नव भाग स्थावरने विषे पोष्या छे ए विषः—

(१) वृक्ष अहर्निश शांतिवत अने स्थितिवान रहे छे कारणके एने विषे शांति संभसकरण अने स्थिति विवस्थाना विभाग रह्या छे.

(२) वृक्ष सदा सहेज स्वभावे अने उदारवत रहे छे, ते बीजा कोइ वृक्षनो संग करतुं नथी, कारणके एने विषे सहेज संभसकरण अने उदार विवस्थाना भाग रह्या छे.

(३) वृक्ष शीलवंत जेवुज रहे छे, अने कोइ तेने कापे तो पण शीलनुं शीलज जणाय छे, वळी ते हमेशां गलीत पणेज रहे छे, ते पोते दुःख सहन करे छे पण बीजा कोइने दुःख देतु नथी, कारणके एने विषे शील संभसकरण अने गलीत विवस्थाना विभाग रह्या छे.

(४) स्थावर एकज स्थाइ जग्याए संतोषमां रहे छे ते संतोष संभासकरणने लीधे अने वळी ते तेनुं स्थळ छोडी शकतु नथी, ते कुंभविवस्थाना विभागने लीधे जाणवुं.

(५) स्थावर सदायकाळ समदम जेवुज रहे छे, ते समता संभसकरणने लीधे. अने ते हमेशां जामान्यज रहे

छे तेने कोइ साथे राग अथवा द्वेष करतुं नथी, ते सामान्य विवस्था जाणवी. ए प्रकारे स्थावरने विषे पंच संभ्रमकरण अने पंच विवस्थानो अमल चाले छे.

स्थावरमां तमोगुणना दशकाळना एक एक भाग रह्यो छे ते विषे.

(१) वृक्ष तेना स्वभाव प्रमाणे उदे अस्त पामे छे, वळी कोइ वृक्षनी आकृतिके छबी बीजा वृक्षने मळती आवती नथी पण दरेकनी न्यारी न्यारी होय छे. एम थवानु कारण तेमनो न्यारो न्यारो स्वभाव छे, तेथी एने विषे स्वभाव काळनो विभाग जाणवो.

(२) ज्यारे स्थावरने फूल फळ आवे छे, त्यारे तेने विषे कामना काळनो विभाग वर्ततो जाणवो.

(३) स्थावर सदा अक्कडपणे रहे छे, कोई तेने छेदे के कापे तो पण अक्कडनुं अक्कडज रहे छे ते आकृतकाळना विभागने लीधे.

(४) स्थावरने विषे निद्रा अने जाग्रत अवस्था थाय छे, तेमज ते नेत्र विना रात्रि दिवसने जाणे छे ते आश्चर्य काळनो विभाग जाणवो. दिवस हतो ने आ रात्रि आवी क्यांथी? एम आश्चर्य पामीने निद्रावश थाय छे. वळी सूर्योदय थतां तेने आश्चर्य थाय छे के, रात्रि हती अने आ प्रकाश शेनो? ए प्रमाणे ए बे अवस्थाने विषे स्थावर मां आश्चर्यकाळनो अंश रह्यो छे.

(५) स्थावरने विषे पत्र, फुल, फळ अने शाखा न्यारां न्यारां अलंकार रुपे छे, तेमां पृथक्‌कालनो अंश वर्ते छे, अने एथी ते अलंकारो एक साथे नहि पण मोडा वहेला खरी पडे छे.

कोई समे स्थावरने अमुक रोग लागु पडे छे के घण (कीडा) खाय छे त्यारे ते सुकाइ जाय छे. ए वखते तेने विषे विपरीत कालनो अमल जाणवो.

(७) अज्ञानकालना विभागने लीधे स्थावर पोताना सिवाय बीजा कोइ अन्यने लहेतुं नथी.

(८) स्थावरने विषे जे क्षुधा पीपासा आकांक्षा रही छे तेने विषे राजसकालनो अंश वर्ते छे. राजकालना विभागने लीधेज वृक्ष पृथ्वीना रसने शोषवानी प्रीति राखे छे.

(९) स्थावरने विषे जे शीत उष्ण आकांक्षानो विभाग रह्यो छे तेने विषे द्वेषकालनो अंश वर्ते छे ज्यारे अतिशय शीत व्यापे छे त्यारे अने ज्यारे उष्णता पुष्कळ होय छे त्यारे ते वृक्ष शीत अने उष्णता उपर द्वेष करे छे; ते केम जाणीए जे, पुष्कळ उष्णता होय छे त्यारे द्वेष करीने कुमळाइ जाय छे तथा शीत पडे छे त्यारे द्वेष काले करीने कृध थाय छे.

(१०) स्थावर तेनी पोतानी हद प्रमाणे वधीने पछी वृद्धि पामतुं नथी, अने घणा काळे फुलीफळीने नाश पामे छे तो पण ते अतिशय आकाशमां वध्युं जतुं नथी, ते

वृद्धि अंतकालना विभागने लीधे.

ए प्रकारे स्थावर विषे तमोगुणना दशकाळ रह्या छे

स्थावरमां अत्यंतघणनी दश भावनाना नव नव भा
रह्या छे ते विषे:-

(१) वृक्षामां अहम्पणुं घणुं छे. कारणके एने वि
सतोगुणना अंतःकरणनो एक एक भाग अने स्वकाशघण
पंच संभासकरना नव नव भाग रह्या छे.

(२) स्थावर सदा संगाकारज रहे छे अने हाल
चालतुं नथी. ते संगभावनाने लीधे.

(३) विसर्जन भावनाने लीधे स्थावरने फुलफळ प्रमवी
खरी पडे छे तेनी तेने जंगमजातिना जेवी स्मृति रहे
नथी. दाखला तरीके जंगम जाति तेना फरजन उपर प्रस
थया पछी स्मृतिने लीधे प्रिति राखे छे, तेम वृक्ष. ते
फरजन (फळ के बीज) खरी पडे छे त्यार पछी तेने ते
स्मृति न रहेती होयाथी प्रीति राखतुं नथी.

(४) स्थावर आठे पहोर अचेत जेवुंज रहे छे.
अचेतपणुं ते निद्रा भावनाना नव भाग जाणवा.

(५) स्थावर अहर्निश अंधाधुंध जेवुं रहे छे, कारण
नेत्र विना तो मनुष्यने अंधारुंज होय छे तेम वृक्षने
विना अंधाधुंध होय एमां नवाइ शी ? ते माटे एने
अंधतम भावनानो विभाग जाणवो.

(६) स्थावर ज्यारे फुलेफळे छे ने नवपल्लव थाय

त्यारे तेने विषे चैतन्यता देखाय छे, नहि तो अचेत जेवुंज रहे छे, ते माटे स्थावर विषे अचेतभावना रही छे.

(७) स्थावर सदा समदम मुन्यवत अने उचाट जेवुंज रहे छे ते उचाट भावनाने लीधे ए स्थितिमां रहे छे.

(८) स्थावर पोतानी मेळे एकाएकी उदारवत रहे छे अने कोइ जाति साथे भाव राखतुं नथी, ते माटे अभाव भावना स्थावर विषे ए प्रकारे रहेली जाणवी.

(९) स्थावर सदायकाळ मुन्यज रहे छे अने कोईनी साथे बोलतुं नथी, माटे एने विषे मुन्य भावना वर्तती जाणवी.

(१०) स्थावरने कोइ कापे के छेदे अथवा एना पुष्प के फळने तोडे तो ते तोडनार प्रति बळ दाखी शकतुं नथी तेम ते नासवाने पण असमर्थ होय छे, कारण के एनामां असामर्थ्य छे. ते माटे एनामां असाम्रथ भावना जाणवी.

ए प्रकारे स्थावरमां अचंत घणनी दश भावनाना नव नव भाग पोषाएला जाणवा.

स्थावरने विषे त्रण गुण घण.

(१) स्थावरनी शाखा, पेढ अने पत्र विषे अकडपणुं रह्युं छे, ते तमोगुणनी महत्ता जाणवी.

(२) स्थावरनां पत्र, फळ अने पुष्प विषे चळकीतपणुं रह्युं छे, एथी वृक्ष शोभायमान देखाय छे, ते रजोगुणनी महत्ता जाणवी.

(३) स्थावरना अंकुर भागने विषे कौमल्यता रही छे ते सतोगुणनी महत्त्ता जाणवी.

(४) स्थावर अक्कडपणे निर्धार रहे छ, ते अहंकार-घणनी महत्त्ता जाणवी.

(५) स्थावरमां विकाशता घणी छे अने शाखाओ न्यारी न्यारी गमन करे छे, ते खकाश घणनी महत्ता जाणवी.

(६) स्थावर सदायकाळ विना चित्वन अचंत जेवुंज रहे छे, ते अचंतघणनी महत्त्ता जाणवी.

(१) स्थावरने विषे प्रकृति तत्वकारणनो एक भाग रह्यो छे, ते केम जाणीए जे, स्थावरमां रजोगुणनी आकांक्षा ओ व्यापकपणे रही छे, तेमनुं विभाज्यपणुं प्रकृति तत्व कारणथी थाय छे. एथी आकांक्षाओ आकृतिवान थाय छे.

(२) स्थावरमां आनंदतत्वकारणनो एक भाग पोष्यो हतो ते केम जाणीए जे, स्थावर सदा प्रफुल्लित रही, एकलुं आनंदमांज जींदगी निर्गमन करे छे अने शोकातुर थइ सुकाइ जतुं नथी.

(३) स्थावरमां धनंजे तत्वकारणना नव भाग रह्या छे एथीज स्थावरना बीजना अंकुर नाना होय छे छतां ते स्फुरीने अतिशय पुष्ट थाय छे.

(४) स्थावरमां महातत्वकारणना नव भाग रह्या छे तेथी एमां मानुभावपणुं विशेप रहयुं छे. वळी एथी वृक्ष

घणा काळ सुधी अधोमुखे (नीचा मुखे) रहे छे छतां तेने श्रम पहोचतो नथी. वृक्षने वर्षे वर्षे ऋतु प्राप्ति थाय छे, छतां अनंत बीजनी वृद्धि थाय छे, ते महातत्व कारणना प्रतापथीज कर्तानी इच्छावृत्तिनी त्रीजी पेढीनुं महातत्व कारण छे तेथी एनामां इच्छत्व विशेष छे. ए कारणे घणा बीजनी उत्पत्ति थाय छे

स्थावरना भिन्न भिन्न अंगोमां गुण, घण, भुत अने चार तत्वकारणनी शी क्रिया थाय छे ते विषे:-

(१) जे स्थावरनी त्वचा विषे स्वकाशघण अने रजोगुण रह्या छे ते स्थावरने फळ अने फूल बंन्न त्वचाए लागे. वळी एज गुणघण बीज गुणघण बीजना अंकुर विषे होय तो फळफुल ते वृक्षना मस्तक उपर डीरना अग्र भागे आवे. जो स्थावरनी त्वचा के अंकुर विषे एकलो रजोगुण होय तो ते स्थावरने विना फूले फळ आवे अने जो एनी त्वचाके अंकुर विषे एकलो स्वकाशघण होय तो तेने फक्त फुलज आवे फळ नहि. अने हवे रजोगुण तेमज स्वकाश घण स्थावरना मूळ विषे रह्या होय तो ते स्थावर फळे के फुले नहि, पण मूळ विषे कंद मूळ थाय. एज गुण अने घण जो स्थावरना काष्ट भागमां होय तो तेने फळफूल नहि आवे तेमज कंदमूळ पण थाय नहि.

(२) जे स्थावरनी त्वचा विषे तमोगुण रह्यो छे ते स्थावरने पत्रे पत्रे कांटा उत्पन्न थाय, अने जो अंकुर विषे

अहंकारघण अने त्वचा विषे तमोगुण होय तो ते स्थावरने मूळथी टोच सुधी पत्र फूलफळने सुद्धां कांटा (शूळ) आवे. जे स्थावरने रक्त रंगनां पुष्प आवे. अने जो स्थावरना रस विषे रसमात्रा होय तो तेने श्वेत रंगनां पुष्प आवे. जो रस विषे गंध मात्रा होय तो पीळा रंगनां, स्पर्शमात्रा होय तो लीला रंगनां, शब्दमात्रा होय तो श्याम रंगनां पुष्प आवे. जो स्थावरना रस विषे रूप अने रस बंने मात्रा होय तो पंचरंगी, शब्द अने स्पर्श बंने मात्रा होय तो उदारंगी, तेज अने गंध मात्रा होय तो नारंगीया रंगी, स्पर्श अने शब्द मात्रा होय तो धुंघलारंगी (जामुडीया रंगी), पंचे मात्रा व्यापक होय तो तेज वृक्षना जे रंगनां पत्र होय ते रंगी, शब्द अने रस मात्रा होय तो भामला (वादळी) रंगी पुष्प आवे. ए प्रमाणे मात्राना उलट सुलट संयोगथी विविधी रंगनां पुष्पो थाय छे.

(३) जो स्थावरनी त्वचा विषे गंध मात्रा विशेष होय तो पीळा रंगनुं, रस मात्रा विशेष होय तो श्वेत रंगी. रूप मात्रा विशेष होय तो लाल रंगी, स्पर्श मात्रा विशेष होय तो, लीला रंगी, शब्द मात्रा विशेष होय तो श्याम रंगी गंध मात्रा अने पृथ्वी तत्व, ए बंनेना विशेष भाग होय तो उपर भीतर गर्भ रस साथे पीत रंगी रस मात्राने जळ तत्वना भाग विशेष होय तो उपर, भीतर गर्भ रस साथे श्वेत रंगी, रूप मात्रा अने अग्नि तत्वना विशेष भाग होय

तो ऊपर, भीतर गर्भ रस साथे रक्त रंगी, स्पर्श मात्राने वायु तत्वना विशेष भाग होय तो उपर तेमज भीतर लीला रंगी शब्द मात्राने आकाश तत्वना विशेष भाग होय तो उपर, भीतर गर्भ रस साथे श्याम रंगी फळ होय.

(४) जो स्थावरना ऋतु (रति के काम) भागने विषे पृथ्वी तत्व अधिक रह्युं होय तो मीष्ट स्वादनां जळ तत्व विशेष होय तो मधुर स्वादनां अग्नि तत्व विशेष होय तो तीखा स्वादनां, वायुतत्व विशेष रह्यु होय तो चरपरा (तुरा) स्वादनां, आकाश तत्व विशेष होय तो फिक्का स्वादनां, तमोगुण विशेष होय तो खाटा स्वादनां रजो गुण विशेष होय तो अतिशय मिष्ट स्वादनां, सतोगुण विशेष होय तो जे खाय तेज जाणे एवा अवर्णीय स्वादनां, अहंकार घण होय तो कडवा स्वादनां, स्वकाशघण होय तो डांसा स्वादनां फळ होय.

(५) जो स्थावर विषे गंध मात्रा, रजोगुण अने पृथ्वी तत्व व्यापक होय तो ते स्थावर फुल, फळ शाखा, वेड (मूळ) सहित मिष्ट होय. शब्द मात्रा, आकाश तत्वने अचंत घण व्यापक होय तो ते स्थावरनो स्वाद नीखथी शीखा परियंत पत्र फुल, फळ, शाखा अने मूळ सहित फिक्को होय. अग्नि तत्व, रूप मात्रा अने तमोगुण व्यापक होय तो ते स्थावर नीखथी शीखा सुधी तीखा स्वादनुं होय. रस मात्रा, जळ तत्व अने सतोगुण व्यापक होय तो

ते आखा स्थावरनो मधुर स्वाद होय. स्पर्श मात्रा, वायु तत्व अने स्वकाशघण व्यापक होय तो ते आखा स्थावरनो स्वाद चरपरो (तुरो) होय.

एकलो तमो गुण होय तो ते आखा स्थावरनो स्वाद खाटो होय एकलो अहंकारघण होय तो ते आखा स्थावरनो स्वाद कडवो होय. स्थारना सर्व फूल फळ विषे तरस (आकर्षण शक्ति) रही छे ते विषे

(६) जे स्थावरना ऋतु (रति के काम) भागने विषे प्रकृति तत्वकारण विशेष रह्युं छे ते स्थावरना फळ विषे रसिक तरस रही छे.

आनंदतत्वकारणनो विशेष भाग रह्यो छे तेना फळमां सुगंध तरस रही छे.

धनंजे तत्वकारणनो विशेष भाग रह्यो छे तेना फळमां अभाव तरस रही छे.

महातत्वकारणनो विभाग विशष रह्यो छे तेना फळमां विभ्रांत तरस रही छे.

ए चार तत्वकारणना फळमां चार प्रकारे तरस रही छे, पण ज्यां जेवुं फळ त्यां तेवी अनंत प्रकारे थइ रही छे तरस चार प्रकारनी जाणवी.

(७) जे स्थावरना ऋतु भाग विषे रजोगुणनी दश आकांक्षाना विभाग विशेष रह्या छे, तेनां फळनुं मनुष्य जातिनी आद्य लई सर्व जीव भक्षण करे.

तमोगुणना दश काळना विभाग विशेष रह्या छे, ते स्थावरना फळनुं पशु पंखी भक्षण करे.

अचंतघणनी दश भावनाना विशेष भाग रह्या छे, ते स्थावरना फळनुं पशुपंखीके मनुष्य कोइ भक्षण करे नहि.

सतोगुणनी पंच अवस्था अने पंच अंतःकरणना विशेष भाग रह्या छे, ते स्थावरनां फळ प्रगट नीराळां पडदा रहित आवे.

स्वकाशघणना पंच संभसकरणना अने पंच विवस्थाना विशेष भाग रह्या छे, ते स्थावरनां फळ संपटवत पडदा सहित श्रीफळ (नारियेळ) नां जेवां थाय.

(८) जो स्थावरना ऋतु भाग अने रसभागनी मध्यमां रजोगुणनी मळ विसर्जन आकांक्षा, तमोगुणनो द्वेषकाळ, वृद्धिअंतकाळ, अचंतघणनी निद्राभावना अने विसर्जन भावना, ए पंच होय तो ते स्थावरनां फळ पाकीने आपो आप खरी (तूटी) पडे.

(९) जो स्थावरना एकला रस भागमां उपलुं पंचक होय तो ते स्थावरनां पांदडां खरी पडे, पण तेनां फळ पाके तोय खरी पडे नहि.

(१०) जो स्थावरमां एज पंचक व्यापक होय तो ते स्थावरनां पत्र अने फळ बीलकुल पाके तोय खरे नहि. कोइ कापीने के तोडीने ले तो लेवाय.

(११) जो स्थावरना ऋतु भाग विषे सतोगुणनुं अहं-

कार अंतःकरण तेमज धनंजे सत्वकारणनो अहंकारघण ए बंनेना विभाग स्थावरना अंकुरमां विशेष रह्या होय तो ते स्थावरने शाखा पल्लव न थाय. ते स्थावर एक दंडामान रहे अने तेने पत्र फूल, फळ थाय पण शाखा नीकळे नहि.

ए प्रकारे अव्याकृतथी उत्पन्न थएलां सीत्तेर तंत स्थावरना तनुमां उलटा सुलटी रह्यां छे, तेथी तेनी अनंत प्रकारनी न्यारी न्यारी विभक्ति थएली जणाय छे

(१) स्थावरने विषे निरंजनना पंच भाग अने अव्याकृतना पंच भाग ए सरखे सरखा भाग पोष्या छे तेथी स्थावरने स्त्री पुरुषना विना संयोगे एकाएकी ऋतु आवे छे. ज्यारे वृक्षमांज ए बंने तंतनो संयोग थाय छे त्यारे वृक्षके स्थावरने ऋतु प्राप्ति थइ फळ फुल आवे छे.

(२) स्थावरमां पांच अर्धा भाग निरंजनना अने पांच अर्धा भाग अव्याकृतना पोष्या हता तेनी तो वेली जाति थइ छे, एनाथी आधार विना चलातुं नथी कारण के निरंजन अने अव्याकृतना एमां अर्धा अर्धा भाग कमती पोष्या हता. एथी ए वृक्षना जेटली स्फूरण पामती नथी.

(३) स्थावरमां नीरंजनना पंच पा पा भाग अने अव्याकृतना पंच पा पा भाग पोष्या हता तेनी तो तृण जाति अने अल्प आयुष्यवान वेली जाति थइ छे, कारण के एमां अव्याकृत अने निरंजनना अल्प अल्प अंश रह्या छे. एथी

तेओ अल्प आयुष्यमां फळी फुलीने विलासी जाय छे.

(४) स्थावर विषे पंच भाग निरंजनना पोष्या हता ते पैकी चार भाग स्थावरमां मळी जइने तेनामां कठणपणुं (काष्टभाग) करी नाख्युं, अने पंच भाग अव्याकृतना स्थावरमां पोष्या हता ते पैकी चार भाग स्थावरमां मळी जइ पत्र, फूल, गर्भ अने त्वचा भाग बनावी नांख्यो. निरंजननो एक भाग बाकी रह्यो हतो तेनी स्थावरने विषे पींगळा नाडी थई, अने एमां ए भाग रह्यो छे. एज प्रमाणे अव्याकृतनो एक भाग रह्यो हतो तेनी इंगळा नाडी थइ, अने एमां ए भाग रह्यो छे. हवे ए बंने नाडीओनो संयोग थवाथी सूक्ष्मणा नाडी थइ. ज्यारे सर्व वनस्पतिनां बी वर्षा ऋतुकाळे पृथ्वीमांथी उदय पामे छे त्यारे सर्वने बब्बे पत्र होय छे, कारणके वृक्षनुं मूख अधो (नीचु) छे. ते वृक्ष उंधा मस्तके पींगळा नाडीए पृथ्वीनो रस शोषे छे तेनुं बहार स्थावरने जमणा अंगे पत्र थयुं, अने इंगळा नाडीए पृथ्वीनो रस शोषे छे तेनु तेने डाबा अंगे पत्र थयुं, तथा सुक्ष्मणा नाडीए करीने पृथ्वीनो रस शोषे छे तेनो डीरभाग (कुंपळ) उत्पन्न थयो. ए प्रकारे स्थावर विषे निरंजन अने अव्याकृतना विभाग रह्या छे.

(१) अष्ट भाग अविकाश महातत्वना अने बे भाग बे महातत्वना स्थावर विषे पोष्या हता, तेमांथी अविकाश महातत्वना अष्ट भागनो स्थावरमां अधो (नीचा) मुखे

मूळमां ओहंकार प्राणायम थइ रह्यो छे. स्थावरना मूळमां ॐकार प्राणायम खेंचाय छे तेनी संगे पृथ्वीमांथी जळ खेंचाइने व्रक्षमां सींचाय छे, ए प्रमाणे स्थावरमां अविकाश महातत्वनो ओम्कार प्राणायम थई रह्यो छे, एमां कुंभस्थ महातत्वनो एक भाग पोष्यो हतो ते ओम्कार प्राणायममां व्यापक थइ रह्यो छे, एथी ते प्राणायम शांत अने घाढपणे रहे छे तेथी ते धीमे खेंचाइ छे अने एथी वृक्ष बळवान रहे छे, ओमकार प्राणायमना मोक्ष भागे विकाश महातत्वनो एक भाग रह्यो छे ते वृक्षमां विकाश करे छे त्यारे पाछळथी ओमकार प्रवेश करे छे. एथी वृक्ष पोषाय छे.

(२) अष्ट भाग विकाश महातत्वना अने बे भाग बे महातत्वना स्थावर त्रिप पोष्या हता, तेमांथी विकाश महातत्वना त्रिभागनो अधोमुखे मूळ विषे सोहम् प्राणायम थइ रह्यो छे. ए सोहम प्राणायम पृथ्वीने विकाशीने मूळने आगळ दोरे छे. एमां कुंभस्थ महातत्वनो एक भाग पोष्यो हतो ते सोहम प्राणायममां व्यापक थइ रह्यो छे, एथी ए प्राणायम शांत अने घाढ छे ते माटे वृक्ष गणा काळ सुधी पहोंचे छे. एमां अविकाश महातत्वनो एक भाग पोष्यो हतो ते सोहम् प्राणायमना मोक्ष भागे रह्यो छे, ते केम जाणीए जे, सोहम् प्राणायम मूळने पृथ्वीमां प्रेरे छे, अने रस शोषतो जाय छे, त्यार पछी मूळने अटकावीने मापसर राखे छे.

ए अटकाववानी क्रिया सोहम् प्राणायममां रहेलो अविकाश महातत्वनो भाग करे छे.

(३) अष्ट भाग कुंभस्थ महातत्वना अने बे भाग बे महातत्वना स्थावरमां पोष्या हता तेमां कुंभस्थ महातत्वना आठ भागने तो कुंभक प्राणायम थयो छे. ओमकार प्राणायमने पोरक करी रहेतां अने सोहम् प्राणायमने बहार मूकी रहेतां थोडीवार प्राणायाम तेनी मधे स्थंभन पामे छे. ते कुंभक प्राणायम जाणवो कुंभकना अग्र भागे अविकाश महातत्वनो एक भाग रह्यो छे, ते कुंभकने खेंची राखे छे. अने छूटता कुंभकना अग्र भागे विकाश महातत्वनो एक भाग रह्यो छे, ते कुंभकना द्वारने विकाशी नांखे छे. तेथी कुंभक प्राणायम थोडीवारमां छूटी जाय छे.

ओमकार प्राणायम, सोहंकार प्राणायम अने कुंभक प्राणायम स्थावरमां नीचे प्रमाणे प्रगट जणाववामां आवे छे.

ज्यारे स्थावरमां ओमकार प्राणायम खेंचाय छे त्यारे वृक्ष रसपल्लव थई कुंपळ काढी वृद्धि पामतुं जाय छे.

ज्यारे स्थावरमां सोहम् प्राणायम चाले छे त्यारे वृक्षमां कुंपळ फुटवानी क्रिया तेम वधवानी क्रिया बंध थाय छे.

ज्यारे स्थावरमां कुंभक प्राणायम थाय त्यारे वृक्षनां पांदडां पाकीने खरी पडे छे.

(४) स्थावरमां त्रण महातत्वना दश अर्धा अर्धा भाग

अने दश दश पा पा भाग पोष्या हता तेमां पण उपर मुजब प्राणायमोनी सुक्ष्म क्रिया थती जाणवी.

संजम भोगवृत्तिना चक्षसत्वोनी क्रिया.

(१) अनंग चक्षसत्वना त्रण अर्धा भागमां एटलाज भाग वर्ग ज्ञान चक्षसत्वना अने चार अर्धा भाग काल चक्ष सत्वना पोष्या हता ते विषेः—

स्थावरमां पांच भाग निरंजनना अने पांच भाग अव्य कृतना पोष्या हता, तेमां नीरंजनना पांच भाग स्थावरन मूळमां अधोमुखे रह्या छे; तेनो स्थावर विषे पुरुषातन भाग थइ रह्यो छे एथी स्थावरनु पेढ (थड) एकडंडायमान थयुं छे अव्याकृतना भागो स्थावर विषे उर्ध्व भागे रह्या छे, तेनुं स्थावरमां स्त्री लींग थयुं छे अने ते स्त्री लींग भाग तरफथी शाखाओ उत्पन्न थाय छे कारण के स्त्री द्वैत विलासणी छे. हवे उपला त्रण चक्षसत्वना दश अर्ध भागमांथी अर्धा एटले दश पा भाग स्थावरना स्त्री लींग भागमां अने बाकीना एटलाज भागो पुरुष लींग भागम रह्या छे.

आ प्रमाणे स्थावरमां स्त्री तत्वना अने पुरुष तत्वन विभाग उलट सुलट रह्या छे, जे एक उर्द्धव मुखे अने बीजो अधोमुखे अने तेथी एमनो संयोग थवो अशक्य छे पण ज्यारे प्रकाश ब्रह्मवृत्तिना कुंभस्थ महातत्वनो कुंभक प्राणायम थाय छे त्यारे एमनो संजम थाय छे.

ते संयोग थवानी क्रिया नीचे मुजब.

ज्यारे स्थावरमां कुंभक प्राणायम थाय छे त्यारे त्रण चक्षसत्वना दश पा भाग रह्या छे ते पैकी वर्गज्ञान चक्षसत्वना विभाग के जे स्त्री लींग विभाग विषे रह्यो छे ते स्त्रीना उर्ध्वमुख विभागने अधो (नीचा) मुखे करे छे अने तेज वखते एज चक्षसत्व पुरुषना अधोमुख विभागने उर्ध्वमुखे करे छे. आ वखते स्त्री पुरुषना विभाग सामसामे एक बीजानी सन्मुख थाय छे एथी स्त्री विभागमां रहेलो अनंग चक्ष सत्वनो भाग विरह उत्पन्न करे छे तेम पुरुष विभागमां रहेलो अनंग पण विरह उत्पन्न करे छे. आ प्रमाणे बंनेने विरह थवाथी बंनेनो संजम थाय छे. संयम थया पछी स्थावरमां स्त्रीना विभाग विषे कालचक्षसत्वनो विभाग रह्यो छे ते स्त्रीना विभागनां पंचभूतनां रस बिंदु उत्पन्न करे छे एज प्रमाणे पुरुष विभागमां रहेलो कालचक्षसत्व पंचभूतनां अरग बिन्दु उत्पन्न करे छे कालचक्षसत्व ए प्रमाणे बिंदु उत्पन्न करी रहे छे त्यार पछी पुरुष विभागनु वर्गज्ञान चक्षसत्व ते बिन्दुने स्त्री विभागना कमळमां पहोचाडे छे. स्थावरनी शाखा पल्वने तेना स्त्री विभागनुं कमळ जाणवुं स्त्री विभागनुं वर्गज्ञान चक्षसत्व स्त्रीना पंच भुतना रस बिन्दुने स्त्रीना शाखा कमळमा पहोचाडे छे. हवे पुरुष बिन्दु अने स्त्री बिन्दुना कमळमां

संयोग थया पछी स्त्री विभागनुं अनंग चक्षसत्व ते स्थावरनी शाखा विषे पुष्प उत्पन्न करे छे अने पुरुष विभागनु अनंग चक्षसत्व ते पुष्पमां फळना अंकुरनो उदय करे छे. त्यारपछी पुरुषना विभागनुं कालचक्षसत्व ते फळने वृद्धि पमाडे छे, ते फळनी वृद्धि थइ रह्या पछी स्त्री विभागनु कालचक्षसत्व ते फळने पकवीने वृक्षथी गेरवी पाडे छे (भिन्न करे छे) पुरुषना विभागना बिंदुमां पंचभूतनो अरग केम जाणीए जे, फळमां बी थाय छे ते पुरुषना विभागना बिंदुनुं पृथ्वी तत्व जाणवुं. बी विषे अंकुरमां चीकाशवाळो रस भाग रह्यो छे तेने पुरुषना विभागना बिंदुनु जळतत्व जाणवुं. बी विषे शोषण शक्ति रही छे (ज्यारे वरसाद पडे छे त्यारे ते बी पृथ्वीना जळनु शोषण करीने उगे छे) तेने पुरुषना विभागना बिंदुनुं वायुतत्व जाणवु, जे खेंचाएला जळने बीमां पचावीने घाढ करे छे तेने पुरुष विभागना बिंदुनु अग्नितत्व जाणवुं. बी विषे विकाशपणुं होय छे तेने पुरुष विभागना बिंदुनुं आकाश तत्व जाणवुं.

फळ विषे स्त्री विभागना बिंदुनां पंचभुतो केम जाणीए जे, फळमां गर्भ भाग रह्यो छे तेने स्त्री विभागना बिंदुनुं पृथ्वी तत्व जाणवुं गर्भ विषे रस रह्यो छे, तेने जळ तत्व जाणवुं. फळनी उपर त्वचा भाग रह्यो छे तेने वायुतत्व

जाणवुं. गर्भ भाग अने छाल (त्वचा) भागनी वच्चे विकाश रह्यो छे तेने आकाश तत्व जाणवुं. फळना गर्भमां कठणता होय छे तेने पकवीने नरम करे छे ते अग्नि तत्व जाणवुं. ए पंच तत्व फळमां स्त्री विभाग बिन्दुनां जाणवां.

संयम भोगवृत्तिना त्रण चक्षसत्वोनां मूळ मकानो विषे:—

(१) स्थावरमां कर्तानी प्रकाश ब्रह्मवृत्तिनां त्रण महा तत्व रह्यां छे (१) विकाश महातत्व (२) अविकाश महा-तत्व (३) कुंभस्थ महातत्व मूक्ता प्राणायमने विकाश महातत्व जाणवुं, एने विषे कालचक्षसत्व रहयुं छे, लेता प्राणायमने अविकाश महातत्व जाणवुं; एने विषे वर्गज्ञान चक्षसत्व रहयुं छे, एने कुंभक प्राणायमने विषे अनंग चक्षसत्व जाणवुं.

(२) त्रणचक्षसत्वना दश पा पा भाग पोष्या हता ते विषे.

स्थावर विषे अल्प आयुष्यनी वेलीजाति, अल्प आयुष्य नी पंदडी जाति, तृणजाति, अल्प आयुष्यवंती जळजाति अने स्थावरमां जेटली अल्प आयुष्यवंती वेलीओ छे, तेने विषे ते दश पा भाग पोष्या छे, तेने विषे ते प्रकारे सुक्ष्म भागे त्रण चक्षसत्वनी क्रिया थती जाणवी.

स्थावर विषे जे जातिमां जेटले दिवसे कुंभक प्राणायाम थाय ते जातिमां तेटले दिवसे फळ उत्पन्न थाय जे स्थावरने घणे दिवसे कुंभक प्राणायम थाय ते स्थावरने घणे दिवसे फुल फल उत्पन्न थाय एज प्रमाणे जे स्थावरने थोडे दिवसे कुंभक प्राणायम थाय, ते स्थावरने थोडा दिवसोमां फूल फळ आवे.

ए प्रकारे कर्तानी क्रियावृत्तिए विभूति संयुक्त स्थावर जाति उत्पन्न करी छे.

दोहा

थिर थावर गति बरनेहु, पात फूल फल कंद;
जेही जेतने तनु तत्वके, तेहु करी कीये नीकंद. १
अब जंगम गति गावहु, पावहु परम हुलास;
कहे कुवेर कृत्य कृत्य करु, सुनहो नारण्य निजदास. २





जंगम विपु विलास देखाडन पंचीकरण नाम।

कंद १२ मो.

जंगम जातिमां जे तत्वना विभाग पोष्या छे तेज तत्वना विभागनी क्रिया कहेवामां आवशे.

(१) जंगम जाति कर्ण करीने शब्द श्रवण करे छे, ते श्रवण आकांक्षा जाणवी.

(२) जंगम नासिकाथी सुगंधी ले छे, ते सुगंध आकांक्षा जाणवी.

(३) जंगम नेत्रवडे नीरखे छे, ते नीरीक्षण आकांक्षा जाणवी.

(४) जंगम अन्नजळनुं भक्षण करे छे, ते क्षुधा पिपासा आकांक्षा जाणवी.

(५) जंगम रसनाथी उच्चार करे छे, ते उच्चार आकांक्षा जाणवी.

(६) जंगमनी त्वचाने विषे शीत उष्ण लागे छे, ते शीत उष्ण आकांक्षा जाणवी.

(७) जंगम हाथवडे वस्तुने ग्रहण करे छे, ते ग्रहण आकांक्षा जाणवी.

(८) जंगमनी भोग इंद्रिने विषे विषय उत्पन्न थाय छे, ते विषय आकांक्षा जाणवी.

(९) जंगम मळ द्वारे मळनो त्याग करे छे ते मळ विसर्जन आकांक्षा जाणवी.

(१०) जंगम चरण वडे हाली चाली शके छे. ते गवन आकांक्षा जाणवी.

ए दश आकांक्षा पैकी पंच आकांक्षा पंच पंच भागे अने बीजी पंच एक एक भागे रही छे.

अहंकार घणनी पांच मात्रा अने पांच भुत जंगममां पोष्या हता ते विषे:—

(१) जंगममां छ भाग पृथ्वी तत्वना अने चार भाग चार तत्वना रहेला होवाथी जंगममांथी अवनी छोडीने अंदर चलाय नहि कारण के पृथ्वी तत्वना विभागमां काठिण्य अने भारत्व रहयुं छे. ए दश भागो मानवी, पशु अने कीट जातिमां रह्या छे तेथी ए त्रणे जाति अवनी छोडीने अद्धर चाली शके नहि. एमां एक भाग अग्नि

तत्वनो पोष्यो हतो, ते जंगमना उदरमां जठरा रूपे रही भोजनने पचावे छे. जंगमना शरीरमां लोही रह्युं छे ते जळनो विभाग जाणवो. शरीरनी सर्व नाडीओने चलायमान करीने धडकावे छे. ते वायुतत्वनो विभाग जाणवो. जंगमना शरीरमां उदर वगेरेमां विकाश रह्यो छे. ते आकाश तत्व जाणवुं.

(१) जंगम श्रवण वडे शब्दनुं श्रवण करे छे, ते शब्द मात्रा जाणवी.

(२) जंगमना नेत्रमां निरीक्षणपणुं रह्युं छे, ते रूप मात्रा जाणवी.

(३) जंगमनी नासा विषे सुगंध लेवापणुं रह्युं छे, ते गंध मात्रा जाणवी.

(४) जंगमनी रसनामां अमी रही छे, ते रस मात्रा जाणवी.

(५) जंगमनी त्वचा विषे स्पर्शपणुं रह्युं छे ते स्पर्श मात्रा जाणवी. जळ जाति अने पतंग जाति जंगममां पांचे मात्रा मनुष्य, पशु अने कीटना सरखीज रही छे पण पांच तत्व अधिक नुन्य रह्यां छे.

(१) जळ जाति जंगममां छ भाग जळ तत्वना रह्या छे, अने अन्य चार तत्वनो एक एक भाग रह्यो छे, तेथी जळ जाति जीवो जळमां विचरी शके छे, अने रुंधन पामता नथी.

(२) पक्षी जंगम जातिमां त्रण प्रकारे तत्वना विभाग रह्या छे (१) जे पक्षीमां छ भाग वायु तत्वना अने अन्य चतुर तत्वना चार भाग रह्या छे, ते विहंगम आकाशमां अल्प गमन करीने पाछुं पृथ्वी उपर आवी रहे (२) जे पक्षीमां छ भाग अग्नि तत्वना अने चार भाग चार तत्वना रह्या छे, ते विहंगम चकोर वगेरे अग्निमां प्रवेश करे पण तेमनुं शरीर दग्ध पामे नहि. ए विहंगम पण आकाशमां अल्प घर्तीने पाछुं अवनी उपर आवी रहे (३) जे पक्षीमां छ भाग आकाश तत्वना अने चार भाग चार तत्वना रह्या छे, ते पक्षी सदायकाळ आकाशमां रहे अने अवनी उपर आवेज नहि.

जंगममां सतोगुणना पांच अंतःकरण अने पांच अवस्थाना नव नव भाग रह्या छे, ते विषेः—

(१) संकल्प विकल्प थाय छे, ते मन अंतःकरण जाणवुं.

(२) जे विचार उठे छे, तेना घाट घडाय छे ते बुद्धि अंतःकरण जाणवुं.

(३) बुद्धिना घाटनो तोल करीने जे दृढ राखे छे ते अहंकार अंतःकरण जाणवुं.

(४) अंतरमां सूक्ष्म चितवन थया करे छे, ते चित अंतःकरण जाणवुं

(५) ज्यारे अंतःकरणनो संतोष थाय, त्यारे नचित अंतःकरण वर्ते छे जेम कोइ मनुष्य कहे छे के, भाइ हमणा अमारे नचंत आवी छे. एवुं कहे त्यारे तेनामां नचित अंतःकरणनुं सुख वर्ततुं जाणवुं.

(१) जंगमने नेत्र वडे सर्व देखाय छे अने दृष्ट पदार्थनी स्मृति थाय छे, ते जाग्रत अवस्था जाणवी.

(२) जंगमने निद्रामां स्वप्न स्फुरे छे, अने मिथ्या भास जणाय छे, ते स्वप्नावस्था जाणवी.

(३) जे मात्र किंचित स्वप्न देखाइने विलाइ जाय छे. अने जाग्या पछी तेनी स्मृति न रहे, ते सुसुप्ती अवस्था जाणवी.

(१) स्थुळ देहमां जाग्रत अवस्था रही छे, (२) सुक्ष्म देहमां स्वप्नावस्था रही छे (३) कारण देहमां सुसुप्ती अवस्था रही छे (४) महाकारणमां तुर्यावस्था अने (५) परम कारण देहमां उनमुनी अवस्था रही छे, महाकारण अने परमकारण देह कोने कहेवा ते नीचे मुजबः—

ते देह प्राणायम अजंपाने विषे जाणवा. जे प्राणायममां ओम्‌कार शब्द रह्यो छे ते महाकारण देह जाणवो. अने जे प्राणायममां सोहमकार शब्द रह्यो छे ते परमकारण देह जाणवो. जंगमना महाकारण देहमां तुर्यावस्था ओम्‌कार प्राणायमना लेवाता श्वासमां जाणवी. ए अवस्थामां सुसुप्तीनुं अल्प स्वप्न दर्शपणुं विलय पामे छे ज्यारे लेवातो

श्वास (ओमकार प्राणायम) नासाने विषे अवाज (घोर) करतो प्रवेश थाय, अने मुकातो प्राणायम श्वास घोर करे नहि, त्यारे तुर्यावस्था जाणवी. जेम जाग्रत अवस्थामां स्थुल देह चेतन थाय छे. तेम तुर्यावस्थामां तुर्याअवस्थानो देह ओमकार प्राणायम चेतन थाय छे, अने घोर करे छे.

ज्यारे लेवातो प्राणायम (ओंमकार) घोर करतो समी जइने सामान्य चाले अने मुकातो सोहम प्राणायम चेतन थइने किंचित शोर करतो नीकळे, त्यारे उन मुनी अवस्था जाणवी. ते वखते चार देहनी क्रिया समदम सून्यवत थइ जाय छे.

ए पंच अवस्था अने पंच देह पंचतत्वमां रह्या छे. अने पांच अंतःकरण पण तेमांज रह्यां छे. ते नीचे मुजबः-

(१) पृथ्थीतत्व स्थुळदेह, जाग्रत अवस्था अने मन अंतःकरणनी चतुर्पुटीए स्थुळ देह जाणवो.

(२) जाठतत्व, सूक्ष्म देह, स्वप्नावस्था अने बुद्धि अंतः-करणनी चतुर्पुटीए सूक्ष्मदेह जाणवो.

(३) अग्नितत्व, कारण देह, सुसुप्ती अवस्था अने अहं कार अंतःकरणनी चतुर्पुटीए कारणदेह जाणवो.

(४) वायुतत्व महाकारणदेह, तुर्यावस्था अने चित अंतःकरणनी चतुर्पुटीए महाकारण देह जाणवो.

(५) आकाशतत्व, परमकारण देह. उनमुनी अवस्था

अने चिद् अंत करणनी चतुर्पुटीए परमकारण देह जाणवो.

ए प्रकारे जंगममां सत्वगुणना पांच अंतःकरण अने पांच अवस्था रही छे.

जंगममां स्वकाशघणनां पांच संभसकरण अने पांच विवस्थाना एक एक भाग पोष्यो हतो ते विषेः—

(१) स्वकाशघणना शांति संभसकरणनो एक भाग, जंगमनी उनमुनी अवस्था नचिंत अंतःकरण, आकाशतत्व अने परमकारण देहमां रह्यो छे, ते केम जाणीए जे, उन मुनीमां सदा शांति रहे छे, अने बीजी अवस्थामां तो कोइ समे अल्प शांति वर्ते छे.

स्वकाशघणनी स्थिति विवस्थानो एक भाग उनमुनी अवस्थामां रह्यो छे तेथी उनमुनीमां सदायकाळ स्थितिपणुं रहयुं छे.

(२) स्वकाशघणना सहेज संभसकरण अने उदार विवस्थानो एक भाग जंगमनी तुर्यावस्थामां रह्यो छे. ते केम जाणीए जे, तुर्यामां सहेजपणुं अने उदारपणुं रहयुं छे.

(३) शील संभसकरणनो एक भाग अने गलीत विवस्थानो एक भाग जंगममां पोष्यो हतो ते विषेः–ए बंने भाग जंगमनी सुसुप्ती अवस्थामां रह्या छे ते केम जाणीए जे, ते वखते त्यां उपाधी होती नथी, तेथी त्यां शीलपणुं रहयुं छे. वळी सूसूप्तीनी अर्ध मात्रा स्वप्नां उठतां संकल्पने गेळ्ळीने विलय करे छे, ते गलीत अवस्था जाणवी.

(४) जंगममां संतोष संभसकरणनो एक भाग अने कुंभ विवस्थानो एक भाग रह्यो छे ते विषे:–ए बंने भाग जंगमनी स्वप्न अवस्थामां रह्या छे, ते केम जाणीए जे, स्वप्नमां मिथ्या पदार्थनी प्राप्ती थइने संतोष थाय छे. ते संतोष संभसकरणनो विभाग जाणवो. स्वप्नमां स्वप्ननी क्रियामां सूरति बंधकोश थइने वर्ते छे. पण जाग्रतना स्थाननी स्मृतिने विषे सूरतिए जवातुं नथी अने स्वप्नमां ज्यां होय त्यांने त्यांज स्वप्ननी स्मृति कुंभक थइ रहे छे, कुंभकविस्थाना विभागने लीधे.

(५) समता संभसकरनो एक भाग सामान्य विवस्थानो एक भाग जंगममां रह्या छे ते विषे:–बंने भाग जंगमनी जाग्रत अवस्थामां रह्या छे. जाग्रतमां कोइ कोइवार समता वर्ते छे, ते समता संभसकरणनो विभाग जाणवो अने कोइ कोइवार सामान्य दृष्टि भाव थाय छे. ते सामान्य विवस्थानो विभाग जाणवो.

ए प्रमाणे स्वकाशघणना पंच संभसकरणना अने पांच विवस्थाना विभाग जंगमनी पांच अवस्थामां रह्या छे, पण ए विभागो अरसपरस उलटा सुलटी जंगमना पांचे अवस्थामां वर्ते छे छतां ए एमनां मूळ मकानो तो उपर समजवां.

(१) पांचे अवस्थामां शांति वर्ते ते शांति संभसकरणनो विभाग जाणवो.

(२) जंगमनी पांचे अवस्थामां कोइ समे सहेजपणुं वर्ते छे, ते सहेज संभसकरणनो विभाग जाणवो.

(३) जंगममां कोइ समे शीलपणुं वर्ते ते शील संभसकरणनो विभाग जाणवो.

(४) जंगममां कोइ समे संतोषपणुं वर्ते ते संतोष संभसकरणनो विभाग जाणवो.

(५) जंगममां कोइ समे समतापणुं वर्ते ते समता संभसकरणनो विभाग जाणवो.

(१) जंगममां कोइ समे स्थिति पमाय ते स्थिति विवस्थानो विभाग जाणवो. उदारपणुं वर्ते ते उदार विवस्थानो विभाग जाणवो. कोइ समे गलीतपणुं वर्ते ते गलीत विवस्थानो विभाग जाणवो. कुंभकपणुं वर्ते ते कुंभ विवस्थानो विभाग जाणवो कुंभकपणुं एटले संभाकार थई जवाय ते. कोइ वार सामान्य भाव वर्ते ते सामान्य विवस्थानो विभाग जाणवो.

जंगममां तमोगुणना दश कालना नव नव भाग रह्या छे ते विषे:--

स्वभावकाळना नव भागने लीधे अंतःकरण अने इंद्रियो पोताना स्वभाव प्रमाणे वर्ते छे. जेवो स्वभाव पडयो तेवोज सदा चाल्यो जाय छे.

(२) कामना काळना विभागने लीधे सकळ इंद्रियोमां स्वभाविक कामना रही छे.

(३) आक्रंतकाळना विभागने लीधे सकळ इंद्रियो अने अंतःकरण विषे आकृति रही छे.

(४) आश्चर्यकाळना विभागने लीधे पोतपोताने कोइ लहेतुं नथी अने पोताना देहनी शुद्धि पण होती नथी.

पृथक काळना विभागने लीधे जंगमने स्वप्नामां जाग्रतनी शुद्धि रहेती नथी. सुसप्तीमां स्वप्ननी शुद्धि रहेती नथी, अने तुर्यामां सुसुप्तीनी शुद्धि रहेती नथी. तेमज उन मुनीमां तुर्याने शुद्धि रहेती नथी.

(६) जंगम विषे विपरीत काळना विभागने लीधे अकाळ मृत्यु, देवकोप, नरपति कोप, पशु पिचास कोप, अने अद्यात्म ताप शरीरमां उपजे छे, एटला भय विपरीत काळना विभागने लीधे रह्या छे.

(७) अज्ञान काळना विभागने लीधे जंगम जाति पोतपोताना वर्णाश्रम जातिमां मस्त रहे छे, अने वर्णाश्रमना आचार गमे तेवा होय तोपण तेमां प्रीति राखे छे, तथा क्षोभ भय थतो नथी. वळी न करवानुं काम करीने पसतावो करे छे. कोई संत शिखामण आपे तो माने नहि, वळी देहना वर्तमान आगळथी कोइ जाणतुं नथी.

(८) राजसकाळना विभागने लीधे एकबीजाने अन्यो अन्य प्रीति थाय छे.

(९) द्वेषकाळना विभागने लीधे, जंगम एक बीजा पर

द्वेष करे छे अने कोइ कोई वस्तु उपर सहेज स्वभावे द्वेष राखे छे.

(१०) वृद्धि अंतकाळना विभागने लीधे पशु, पंखी, कीट, पतंग अने मनुष्य वगेरे पोतपोताना देहना प्रमाण होय तेथी वधारे वृद्धि पामता नथी.

जंगममां अचंतघणनी दश भावनाना दश भाग रह्या छे ते विषेः—

(१) अहंम भावनाने लीधे जंगम अनेक वातो सूणे पण कंठे आवे नहि कोई कोइनी कळा कोइ बीजाने आपी शके नहि, जे जे वस्तु देखे अथवा सांभळे तेमांनी केटलीक वस्तु आवडे नहि.

(२) समभावनाने लीधे अंतःकरणमां मदपणुं रह्युं छे, के जेथी कोइवार थोडुं काम करतां पण वखत घणो लागे छे.

(३) विसर्जन भावनाने लीधे नाना प्रकारना भोग अने अनेक प्रकारनुं दुःख भोगवे छे ते भोगव्या पछी याददास्तमां रहेतुं नथी, अने जाणे सुख दुःख भोगव्यांज नहि होय, एम लागे छे.

(४) निद्रा भावनाने लीधे महेनत करतां जंगमने श्रम पहोचे छे, त्यारे आळस थाय छे. आळस थया पछी तेने कंइ कार्य सूझतु नथी.

(५) जंगममां अंधतम भावनाने लीधे वगर विचारे

रोष करीने बोले छे, अने उंघमां बबडया करे छे. जो कोइ कहे के केम बबडे छे, तो ते जागीने कहे के हुं नहतो बबडतो.

(६) अचेत भावनाने लीधे ब्रह्मादि वगेरेना शिर उपर मृत्यु काळ भमे छे पण तेने कोइ त्रास के भय व्यापतो नथी, अने सो वरस सुधी नाचिंत रहे छे, तेमज क्यांथी आव्यो ने क्यां जवानो तेनी शोध करतुं नथी. वळी कोई वार शरीरमां अचेतपणुं थइ जाय छे.

(७) उचाट भावनाने लीधे कोइ कोइ वार शरीरमां उचाटपणुं थइ जाय छे. वळी कोइ कार्य बगडी जाय छे, त्यारे उचाट थाय छे.

(८) अभाव भावनाने लीधे कोइनी साथे प्रीति बंधाईने पाछी छूटी जाय छे, तेमज कोइ कोइ वस्तु विषे पण अभाव थाय छे. वळी इंद्रियोना भोग तृप्त करीने तेमना प्रत्ये अभाव थाय छे.

(९) मुन्य भावनाने लीधे कार्य कारणथी बोलाय छे, अने पाछुं मुन्य रही जवाय छे ए प्रमाणे सदाकाळ जंगममां मुन्य भावना वर्ते छे.

(१०) असामर्थ भावनाने लीधे कांइ कार्य करतां हठी जवाय छे, तेमज रणना संग्राममां कोइ शूरो थइने सन्मुख लडे छे, अने कोइ कायर थइ भागी जाय छे.

जंगम विषे त्रण गुणना नव नव भाग रह्या छे ते विषेः--

(१) रजोगुणना विभागने लीधे वस्तुओ उपर मोह थाय छे.

(२) तमोगुणना विभागने लीधे तामसपणुं उपजे छे.

(३) सतोगुणना विभागने लीधे अंतरमां दया उपजे छे.

त्रण घणना जंगममां एक एक भाग रह्या छे, ते विषेः--

(१) अचेत घणनो एक भाग पंच अवस्थानी संधिमां रह्यो छे, तेथी अवस्थाओ पलटाय छे, ते जणातुं नथी.

(२) स्वकाशघणनो एक भाग शरीरना हाडकांओनी संधिमां रह्यो छे, तेथी शरीर आम तेम वळे छे अने वसातुं अवाज करतुं नथी.

(३) अहंकारघणनो एक भाग पंच भूतोनी संधिमां रहे छे, तेथी पंच भूत न्यारां न्यारां अकडवाज रह्यां छे.

जंगममां प्रकृति तत्व कारणनां नव भाग रह्या छे, ते विषेः--

(१) प्रकृति तत्व कारण शरीरनां बधां तत्वोने चंचळ करे छे.

(२) जंगममां आनंद तत्वकारणना नव भाग रह्या छे तेथी विषयनो भोग करतां आनंद उपजे छे.

(३) जंगममां महातत्वकारणनो एक भाग रह्यो छे,

तेथी सर्वनी देहमां पोतपोतानुं महत्तापणुं रह्युं छे.

(४) जंगममां धनजे तत्वकारणनो एकज भाग रह्यो छे, ते विषय भोगना आनंदने लीन करी मंद पमाडे छे फरी उपजे तो फरी मंद पमाडे छे.

मनुष्य लक्षण कोष्टक।

(१) जे जंगमना अंतःकरणमां तमोगुणनो भाग विशेष होय ते अतिशय क्रोधी होय.

(२) जे जंगमना अंतःकरणमां रजोगुणनो विभाग विशेष होय, ते अतिशय विषयी होय.

(३) जे जंगमना अंतःकरणमां सतोगुणनो विभाग विशेष होय, ते अतिशय शांति स्वभावनो होय.

(४) जे जंगमना अंतःकरणमां अहंकारपणनो विभाग विशेष होय ते अतिशय अभिमानी होय.

(५) जे जंगमना अंतःकरणमां स्वकाशपणनो विभाग विशेष होय, ते आठे पहोर हसमुखो रहे.

(६) जे जंगमना अंतःकरणमां अचेतपणनो विभाग विशेष होय ते आठे पहोर अचेत जेवो रहे.

(७) जे जंगमना अंतःकरणमां तमो अने रजोगुणना विभाग होय, ते हेतु विश्वासघाती थाय.

(८) जे जंगमना अंतःकरणमां तमो अने सतोगुणना बंने विभाग होय ते मुखथी मीठुं बोले पण अंतरमां इर्षा-वान होय.

(९) जे जंगमना अंतःकरणमां तमोगुण अने अहं कारघण ए बंनेना विभाग होय, ते अतिशय दंभी कपटी होय.

(१०) जे जंगमना अंतःकरणमां तमोगुण अने स्व-काशघण संयुक्त रह्या होय ते अतिशय हास्य मश्करो होय.

(११) जे जंगमना अंतःकरणमां तमोगुण अने अचंत घण ए बंनेना विभाग होय तो अतिशय मूर्ख होय.

(१२) जे जंगमना अंतःकरणमां सतोगुण अने रजो गुणना विभाग होय ते सर्व साथे प्रीति राखे.

(१३) जे जंगमना अंतःकरणमां सतोगुण अने अहं-कारघणना विभाग होय, ते अतिशय गंभीर होय.

(१४) जे जंगमना अंतःकरणमां सतोगुण अने स्वका-शघणना विभाग होय ते आठे पहोर उमंगी रहे.

(१५) जे जंगमना अंतःकरणमां सतोगुणनाने अचंत घणना विभाग होय, ते घणो वाचाळ होय नहि, अने मुगा जेवो रहे .

(१६) जे जंगमना अंतःकरणमां रजोगुणना अहंकारघ-णना विभाग होय, ते अतिशय वैभवी अने शोखीन होय.

(१७) जे जंगमना अंतःकरणमां रजोगुणना अने स्व-काशघणना विभाग होय, ते अतिशय बकवादी होय.

(१८) जे जंगमना अंतःकरणमां रजोगुणनो अने अचं-तघणना विभाग होय, ते बावरो होय.

(१९) जे जंगमना अंतःकरणमां अहंकारघणना अने स्वकाशघणना विभाग होय, तेनुं बोलवुं अतिशय भारे खंभ होय.

(२०) जे जंगमना अंतःकरणमां अहंकारघणनाने अचंतघणना विभाग होय, ते अतिशय असत्य बोलवावाळो होय.

(२१) जे जंगमना अंतकरणमां स्वकाशघण अने अचंतघणना विभाग होय, ते बींदल थाय.

(२२) जे जंगमनी सर्व देहीमां अने अंतःकरणमां त्रण गुण अने त्रणघण व्यापक होय, ते सदाकाळ सहेज स्वभावी होय.

(२३) जे जंगमना अंतःकरणमां त्रणगुण अने त्रणघण होय, ते अतिशय प्रपंची होय.

(२४) जे जंगमना अंतःकरणमां प्रकृति तत्वकारण रह्युं होय, ते अतिशय आशा तृष्णावाळो थाय.

(२५) जे जंगमना अंतःकरणमां आनंद तत्वकारण होय ते अतिशय चतुरने न्यायी अने नीतिवंत थाय.

(२६) जे जंगमना अंतःकरणमां महातत्वकारण होय, ते पोतानी जातिवर्णमां अधिपति थाय.

(२७) जे जंगमना अंतःकरणमां घनंजे तत्वकारण होय, तेने गुरु मळे तो समाधी योगवान थाय.

(२८) जे जंगमना अंतःकरणमां प्रकृति तत्वकारणना

अने धनंजे तत्वकारणना विभाग होय, ते अतिशय शूर सुभट थाय जो स्त्री होय तो सती नीपजे.

(२९) जे जंगमना अंतःकरणमां प्रकृति तत्वकारणना महातत्वकारणना विभाग होय, ते पृथ्वीपति थाय.

(३०) जे जंगमना अंतःकरणमां प्रकृति तत्वकारणना अने आनंद तत्वकारणना विभाग होय, ते कवि थाय.

(३१) जे जंगमना अंतःकरणमां आनंद तत्वकारणना अने धनंजे तत्वकारणना विभाग होय, ते मोटो प्रारब्धी धनवान थाय.

(३२) जे जंगमना अंतःकरणमां आनंद तत्वकारणना अने महातत्वकारणना विभाग होय, ते सिद्धवान थाय.

(३३) जे जंगमना अंतःकरणमां धनंजे तत्वकारणना अने महातत्वकारणना विभाग होय ते अतिशय दालिद्री थाय.

(३४) जे जंगमना अंतकरणमां चारे तत्वकारण रह्यां होय ते अतिशय ज्ञानी थाय.

(३५) जे जंगमना अंतःकरणमां अने सर्व शरीरमां चारे तत्वकारण रह्यां होय, ते अहन्नु विद्यवान थाय.

(३६) जे जंगमना अंतःकरणमां चार तत्वकारण त्रण गुण अने त्रणपण ए दश भाग रह्या होय, ते ब्रह्मवेता विभूतिवान थाय. ते दस अवतारनी आद्य कहने सर्वे जाणवा.

(३७) जे जंगमना अंतःकरणमां त्रणगुण अने त्रणघण, चार तत्वकारण अव्याकृत निरंजन ए बधा विभाग संयुक्त रह्या होय, ते देहमां कैवलवेत्ता पुरुष प्रवेश करीने विराजमान थाय. ए प्रकारे पशु, पक्षी, कीट अने पतंगमां होय, पण तेमनामां केटलाक विभाग अतिशय जड रह्या छे, अने मनुष्यमां ए विभागो सूक्ष्म रह्या छे, तेमनामां प्रकाश थाय नहि, कदाच प्रकाश होय तो ते तेमनी जातिमां जाणवो.

(१) जंगममां आठ भाग निरंजनना अने बे भाग अव्याकृतना पोष्या हता, तेना पुरुष जाति थया.

(२) जंगममां आठ भाग अव्याकृतना अने बे भाग निरंजनना पोष्या हता तेनी स्त्री जाति थइ.

(१) स्त्रीमां अव्याकृतना आठ भाग हता, ते पैकी सात भाग स्त्रीना देहनी सात धातुमां मळी जइ, नीखाथी शीखा पर्यंत स्त्रीलींग शरीर करी दीधुं, अने एक भाग अव्याकृतनो रह्यो हतो, ते स्त्रीना डाबे अंगे इंगळा नाडीमां रह्यो छे एमां बे भाग निरंजनना पोष्या हता, ते पैकी एक भाग स्त्रीना जमणे अंगे पिंगळा नाडीमां रह्यो छे, बाकी एक भाग रह्यो, तेनो अरधो भाग स्त्रीना भगस्थान इंद्रिमां रह्यो छे, अने बीजो अरधो भाग स्त्रीना नेत्र इंद्रिमां रह्यो छे. स्त्रीना नेत्रमां अने भगइंद्रिमां निरंजनना अरधा अरधा भाग रह्या छे, तेथी स्त्रीने नेत्रे करीने पुरुष उपर मोह

थाय छे, तथा भगस्थान इंद्रिए करीने पुरुषनो भोग करे छे. ए प्रमाणे स्त्रीमां बंने जगाए रहेला पुरुषना विभाग पुरुषनी चाहना करे छे, जेम तेजनो विभाग नेत्रमां रह्यो छे तेथी नेत्र तेजनुं आकर्षण करे छे, कारणके जे जेनो विभाग होय ते तेने ग्रही शके छे ए प्रकारे आकाशनो भाग कर्णमां रह्यो छे, ते शब्द आकाशना विभागने ग्रहण करे छे, त्वचामां वायुनो विभाग रह्यो छे ते वायुना स्पर्शनो ग्रहण करे छे. नासाए पृथ्वीनो विभाग रह्यो छे, तेथी ते पृथ्वीना गंधने ग्रहण करे छे. रसनामां उदकनो विभाग रह्यो छे, तेथी ते जळना विभाग रसना ग्रहण करे छे, ए प्रमाणे जे जेनो विभाग होय ते तेनुं ग्रहण करे छे तेथी स्त्रीना नेत्रमां अने भगस्थानमां पुरुषना विभाग रह्या छे. ते पुरुषनी चाहना करे छे.

(२) जंगम पुरुष जातिमां आठ भाग निरंजनना पोष्या हता, ते पैकी सात भाग पुरुषना देहनी सात धातुमां मळी जइने नीखाथी शीखा पर्यंत पुरुष लींग देह करी दीधो. बाकी एक भाग रह्यो ते पुरुषना जमणा अंगे पिंगळा नाडीमां रह्यो छे. तेथी पिंगळा नाडी पुरुष लींग थइ छे. पुरुषमां बे भाग अव्याकृतना पोष्या हता. ते पैकी एक भाग पुरुषनी इंगळा नाडीमां डाबा अंगे रह्यो छे, तेथी इंगळा नाडी चंद्रनी स्त्री लींग थइ रही छे. बाकी रहेला एक भाग अव्याकृतनो अरधो भाग पुरुषनी लींग

इंद्रीमां रह्यो छे. अने बीजो अरधो भाग पुरुषना नेत्रमां रह्यो छे, एथी पुरुषने नेत्रवडे स्त्री उपर मोह थाय छे अने लींग इंद्रीए करीने स्त्रीनो भोग करे छे. नेत्रमां अने इंद्री स्थानमां रहेला अव्याकृतना विभागो स्त्रीनी चाहना करे छे; ए प्रकारे निरंजन अव्याकृतना विभाग जंगममां रह्या छे तेओने उलटावीने पोताना सजाति विभागमां मेळवी दइ स्त्री पुरुषो त्यागी थाय छे (पुरुषमां रहेला स्त्रीना विभागने पुरुष स्त्रीने विषे मेळवी दे छे अने तेज प्रमाणे स्त्री पण करे छे.

(१) कर्तानी प्रकाश ब्रह्ममूर्त्तिना विकाश महातत्वना आठ भागमां एक भाग अविकाश महातत्वनो अने एक भाग कुंभस्थ महातत्वनो पोष्यो हतो.

(२) अविकाश महातत्वना आठ भागमां एक भाग विकाश महातत्वनो अने एक भाग कुंभस्थ महातत्वना आठ आठ भाग पोष्या हता.

(३) कुंभस्थ महातत्वना आठ भागमां एक भाग अविकाश महातत्वनो अने एक भाग विकाश महातत्वनो पोष्यो हतो एमनी हकीकतो नीचे मुजबः–

(१) जंगममां विकाश महातत्व दश भागे पोष्युं हतुं, तेनो जंगममां सोहम प्राणायम थयो.

(२) जंगममां अविकाश महातत्व दश भागे पोष्युं हतुं, तेनो ओंकार प्राणायम थयो.

(३) जंगममां कुंभस्थ महातत्व दश भागे पोष्युं हतुं, तेनो कुंभक प्राणायम थयो.

विकाश महातत्वने प्रकाशीक जाणवुं तेथी सोहम प्राणायम बहार सुन्यमां प्रवेश करे छे, कारण के सुन्यमां विकाशपणुं रहयुं छे.

अविकाश महातत्वने संपटवत जाणवुं. तेथी ओंकार प्राणायम पिंडमां भीतर (अंदर) खेंचाय छे, कारणके पिंड संपटवत छे.

कुंभस्थ महातत्वने समदम जाणवुं, तेथी कुंभक समदम थाय छे.

ओंकार प्राणायमने पिंडमां खेंचातां अने सोहम प्राणामने बहार मुकतां मध्ये श्वास स्थंभन पामे छे ते कुंभस्थ महातत्व जाणवुं. कुंभस्थ महातत्वने लीधे जंगममां सामर्थ्य रहे छे.

अविकाश महातत्वना आठ भागमां एक भाग विकाश महातत्वनो अने एक भाग कुंभस्थ महातत्वनो पोष्यो हतो ते विषेः–विकाश महातत्वनो एक भाग ओंकार प्राणायमना मोक्ष भागे रह्यो छे ज्यारे ओंकार प्राणायम शरीरमां प्रवेश करे छे, त्यारे विकाश महातत्वनो भाग सर्व नाडीओना आगे आगे विकाश करतो जाय छे, अने एनी पाछळ ओंकार प्राणायम प्रवेशे छे. कुंभस्थ महातत्वनो एक भाग ओंकार प्राणायममां व्यापक रह्यो छे.

ज्यारे कोइ योगी साधन करे छे, त्यारे साधन करतां करतां प्राणायम कुंभस्थ महातत्वने लीधे अटके छे, ए प्रमाणे कुंभस्थ महातत्वनो एक भाग अविकाश महातत्वमां रह्यो छे.

जंगममां विकाश महातत्वना आठ भागमां एक भाग अविकाशनो अने एक भाग कुंभस्थनो पोष्यो हतो ते विषे अविकाश महातत्वनो एक भाग विकाश महातत्वना सोहंम प्राणायमना मोक्ष भागे रह्यो छे. अविकाश महातत्वना विभागने लीधे, श्वास बार आंगण चालीने पाछो उलटाय के कुंभस्थ महातत्वनो एक भाग विकाश महातत्वना सोहंम प्राणायममां व्यापक रह्यो छे, तेथी प्राणायम घाडपणे रहे छे, अने उतावळे वही जतो नथी.

कुंभस्थ महातत्वना आठ भागमां एक भाग अविकाश महातत्वनो अने एक भाग विकाश महातत्वनो पोष्यो हतो, ते विषेः--थते कुंभस्थ महातत्वे अविकाश महातत्वनो विभाग रह्यो छे, अने विखराता कुंभस्थ महातत्वे विकाश महातत्वनो विभाग रह्यो छे. थता कुंभकने अविकाश महा तत्वनो विभाग खेंची राखे छे. अने विखराता कुंभकने विकाश महातत्वनो विभाग वीखरी नाखे छे.

ए प्रकारे जंगमने विषे कर्तानी प्रकाश ब्रह्मवृत्तिना त्रण महातत्व रह्यां छे.



कर्तानी संजम भोगवृत्तिना त्रण चक्षसत्व विषेः—

(१) जंगममां त्रण भाग अनंग चक्षसत्वना अने त्रण भाग वर्गज्ञान चक्षसत्वमां चार भाग कालचक्षसत्वना पोष्या हता, ते विषेः--

पुरुष दृष्टिथी के ध्यानथी स्त्रीनुं आलोचन करे छे, ते वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. स्त्रीनुं आलोचन कर्या पछी ते पुरुष काम वगेरे सर्व शरीरनो अरग काढीने बिंदु सहीत वंकनाळमां लावे छे ते कालचक्षसत्व जाणवुं.

कालचक्षसत्व वंकनाळमां सर्व तत्वनुं बिंदु आणे छे. ते नीचे मुजब (पंचभूतनो अरग) बिंदुमां गाढपणुं रह्युं छे, ते पृथ्वीनो विभाग जाणवो बिंदुमां उष्णता रही छे. ते तेजनो विभाग जाणवो. बिंदुमां रसपणुं रह्युं छे, ते जळनो विभाग जाणवो. बिंदुमां विकाशपणुं रह्युं छे, ते आकाशनो विभाग जाणवो. बिंदुमां वेगपणुं रह्युं छे, ते वायुनो विभाग जाणवो. ए प्रमाणे बिंदुमां पंचभुतनो अरग संयुक्त रह्यो छे.

ए प्रमाणे त्रण चक्षसत्वनी मूळ क्रिया थाय छे. हवे प्रगट क्रिया नीचे मुजब स्त्री पुरुषना लींगनो संजम करी आपे छे. ते वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. संजम कर्या पछी

मैथुन क्रिया करे छे. ते अनंग चक्षसत्व जाणवुं. मैथुन कर्या पछी बिंदुपात थाय छे, ते कालचक्षसत्व करे छे.

स्त्रीमां थती त्रग चक्षसत्वनो क्रिया.

स्त्री अंतरमां के नेत्र वडे पुरुपनु आलोचन करे ते वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. त्यारपछी स्त्री कामातुर थाय छे ते अनंग चक्षसत्व जाणवुं कामातुर थया पछी स्त्रीना कमळमां रसबिंदु उत्पन्न थाय छे. ए बिंदुने कालचक्षसत्व स्त्रीना शरीरमांथी सर्व तत्वनो अरग साथे खेंची लावे छे स्त्रीना बिंदुमां चिकास अने दुर्गंध ते पृथ्वीनो विभाग जाणवो. स्त्रीना बींदुमां अतिशय रसपणुं रहयूं छे. ते जळनो विभाग जाणवो स्त्रीना बींदुमां उष्णता रही छे ते अग्निनो विभाग जाणवो. ज्यारे पुरुपना बिंदुनो अने स्त्रीना बिंदुनो संयम थाय छे त्यारे पुरुपना बिंदुने वच्चे घालीने स्त्रीनु बिंदू उपर रहे छे. तथा मध्ये पुरुपना बिंदूने राखे छे ते स्त्रीना बिंदूना आकाशतत्व जाणवुं, पुरुपना बिंदुने आकर्षीने स्त्रीनु बिंदु पोताना बिन्दुमां मेळवी दे छे, ते स्त्रीना बिन्दुमां वायुतत्वनो विभाग जाणवो ए प्रकारे मूळ कार्य क्रिया स्त्रीना त्रण चक्षसत्वनी करी, हवे प्रगट क्रिया नीचे मुजब ज्यारे पुरुप मैथुन करे छे. त्यारे स्त्रीने तेना लींगमां आनंद उपजावे छे अने पुरुपना बिन्दुने खेंचीने स्त्रीना कमळमां पहोचाडे छे, ते स्त्रीनु प्रगट अनंग चक्ष-

सत्व जाणवुं पुरुषनो अनंग चक्षसत्व पूरुषना बिन्दुने अधोमुखे उतारे छे अने स्त्रीनो अनंग चक्षसत्व स्त्रीना बिन्दुने उर्द्ध (उंचे) मुखे चढावे छे, कारणके पुरुषमां अनंग चक्षसत्व अधो (नीचा) मुखे रह्यो छ अने स्त्रीमां अधोमुखे रह्यो छे तेथी स्त्रीनो अनंग चक्षसत्व बिन्दुने उपर खेंचे छे, अने मैथुन करतां स्त्री जलदी शांति पामती नथी. पुरुषनो अनंग चक्षसत्व अधोमुखे रहेलो होवाथी ते थोडी वारमां शांति पामे छे स्त्रीना कमळमां बिन्दुनी वहेंचण करीने जे जे तत्व इंद्रियोनो अरग ते ते तत्व इंद्रीयोनी जगाए पोषीने घाट घडे छे, ते स्त्रीना वर्गज्ञान चक्षसत्वनी प्रगट क्रिया जाणवी. ते घाटने परिपक्व करीने कमळथी भिन्न करी नांखे छे, त्यारे बाळ प्रसवे छे, ते स्त्रीनुं कालचक्षसत्व जाणवुं.

पुत्र अने पुत्री क्या संजोगे थाय छे ते विषेः—

(१) पुरुषनी पींगळा नाडी चालतां पुरुषनुं बिन्दु स्त्रीमां पडे तो तेनो पुत्र थाय.

(२) पुरुषनी इंगळा नाडी चालतां पुरुषनुं बिन्दु स्त्रीमां पडे तो तेनी पुत्री थाय.

पुरुषना जमणा अंगे पींगळा नाडीमां निरंजननो एक भाग रह्यो छे, तेथी पींगळा नाडीमां पुरुषातन रहयुं छे. एज प्रभाणे पुरुषना डाबा अंगे इंगळा नाडीमां अव्याकृतनो

रूक भाग रह्यो छे, तेथी इंगळा नाडीमां स्त्री लींगपणुं रह्युं छे. ए कारणोथी पुरुषनी पींगळा नाडी चालतां पुत्र अने इंगळा नाडी चालतां बिन्दु गळे (पडे) तो पुत्री थाय छे ज्यारे बंने नाडीओ साथे चाले त्यारे सुक्ष्मणा नाडी कहे-वाय छे. ए वखते बिन्दू पडे तो ते निष्फळ जाय छे. कारण के सुक्ष्मणा नाडीमां आकाशनो भाग विशेष रह्यो छे, अने आकाश निःसत्व नपुंसक छे, तेथी सुक्ष्मणा नाडीमां नपुंसकपणुं रह्युं छे, माटे सुक्ष्मणा नाडी चालतां बिन्दु पडे तो बिन्दु भ्रले जाय छे, जो कदाच सुक्ष्मणानुं बिन्दु जामे तो बे बाळक थाय. ज्यारे पुरुषनी सुक्ष्मणा नाडी चालती होय अने स्त्रीनी पण सुक्ष्मणा नाडी चालती होय त्यारे बंनेना बिन्दुनो पुत्र अने पुत्री नीपजे.

(१) स्त्रीनी सुक्ष्मणा नाडी चालती होय अने बंने कमळ खीलेलां होय तथा पुरुषनी इंगळा नाडी चालती होय ते वखते स्त्री पुरुषना संयम बिन्दुनी बे पुत्री थाय.

(२) पुरुषनी पींगळा नाडी चालती होय अने स्त्रीनी सुक्ष्मणा नाडी चालती होय ते वखते बंनेना संभोगथी बे पुत्र नीपजे.

ज्यारे स्त्रीनी नाभीमां अनंग अघोमुखे होय त्यारे ते वखतना संयोगे सुक्ष्मणाना बिन्दुनो गर्भ रहे, नहि तो बिंदु भ्रले जाय.

पुरुषनी सुक्ष्मणा चालती होय अने स्त्रीनुं एक कमळ

खील्युं होय तथा स्त्रीनी पींगळा नाडी चालती होय तो ते समयना संयमना बिंदु प्रले जाय. जो कदाच ते बिंदुनो गर्भ रहे तो ते गर्भ प्रसवे नहि, ते अंदरने अंदर उदरमां चींपट थइने रहे. कारणके पुरुषनी सुक्ष्मणाना बंने बिंदु एक कमळमां प्रवेशे छे, ते बंने बिन्दुना संयोगे करीने अंदरनो अंदर संयोग थइ रहे छे तेथी गर्भ प्रसवतो नथी. जो कदाच गर्भ प्रसवे तो बंने बिन्दु पैकी एक बिन्दुना विभाग सडी जइने अंदरथी झरी पडे, त्यार पछी एक विभाग रहे ते मरेलो प्रसवे जो कदाच ते बिंदुना विभाग पुठळ रहे अने कमळनुं शोपण करी पुष्ट थइने प्रसवे तो सजीवन पुत्र थाय.

पुरुषनी सुक्ष्मणा चालती होय अने स्त्रीनुं एक कमळ खील्युं होय तेमज स्त्रीनी इंगळा नाडी चालती होय तो ते स्त्री पुरुषना संयमनां बिंदु पण प्रले जाय. कदाच ते बिंदुनो गर्भ रहे तो ते पण प्रसवे नहि. अने जो कदाच प्रसवे तो बंने बिन्दु पैकी एक विभाग झरी पडे अने एक विभाग रहे ते प्रसवे पण ते मरेलुं प्रसवे. जो कदाच पुठळ रहे अने स्त्रीना कमळनुं धावन करी ते बिन्दुनो विभाग पुष्ट थयो होय तो तेनी सजीवन पुत्री नीपजे.

ए प्रकारे इंगळा; पींगळा अने सुक्ष्मणा नाडी देहमां रही छे. इंगळा अने पींगळा एकली एकली चाले छे अने

सुक्ष्मणा बंने नाडीओना संयोगे चाले छे. पींगळा नाडी-मांथी छत्रीहजार नाडीओ नीकळी शरीरमां जमणा अंगे रोमरोममां प्रसरी रही छे.

इंगळा नाडीमांथी छत्रीहजार नाडीओ नीकळी डाबा अंगे रोमरोममां प्रसरी रही छे.

सूक्ष्मणामांथी दश नाडीओ नीकळीने ब्रह्मरंध्रमां प्रसरी रही छे. ए त्रण नाडीओनो पसारो शरीरमां रोमरोम रह्यो छे.

कर्तानी प्रकाश ब्रह्मवृत्तिनां त्रण महातत्व (१) अविकाश महातत्व (२) विकाश महातत्व अने (३) कुंभस्थ महातत्व आ त्रण महातत्वोथी त्रणे नाडीओ पोषाईने श्वासवत थाय छे. तेमां पींगळा नाडीए जमणा अंगे छत्रीहजार नाडीओ पोषाइने श्वासवत थाय छे. अने इंगळा नाडीए डाबा अंगे छत्रीहजार नाडीओ पोषाइने श्वासवत थाय छे के जेथी दश प्रकारना अनहद नाद थाय छे.

ए प्रकारे त्रण महातत्वनी सत्ताथी नाडीओ पोषाइने नीखाथी ते शीखा पर्यंत सर्व देह श्वासवत थइ रह्यो छे.

स्त्री पुरुषने विषे अविकाश महातत्वनो लेवातो प्राणायम स्त्रीलींग जाणवो, अने मूकातो विकाश महातत्वनो पुरुषलींग जाणवो. तथा कुंभस्थ महातत्वनो कुंभक प्राणायमने नपुंसक जाणवो.

त्रणे महातत्व त्रणे नाडीओमां रमण करे छे तेथी

सर्व जंगमना देह श्वासवत थइने हलण चलण करे छे, ए प्रकारनी नाडीओ अने तत्व संयुक्त करीने जंगमने विषे पुत्र पुत्री थाय छे.

पुत्र पुत्री विषे त्रण महातत्वनो भावः—

(१) पूरुषनी पींगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायामे बिन्दु छूटे अने स्त्रीनी पण पींगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायामे बिन्दु ग्रहे तो तेनो पूत्र थाय ते महाशुभट अने शूरवीर होय, वळी एने सत्संग मळे तो इंद्रिजीत योगी थाय.

(२) पुरुषनी पींगळा नाडी चालतां लेते प्राणायमे बिन्दु छूटे अने स्त्रीनी पण पींगळा नाडी चालतां लेते प्राणायामे बिन्दु ग्रहे तो तेनो पुत्र थाय ते वींढळ होय.

(३) पुरुषनी पींगळा नाडी चालतां लेते प्राणायामे बिन्दु गळे, अने स्त्रीनी पींगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायामे बिन्दु ग्रहे तो तेनो पुत्र थाय ते अतिशय कामी होय.

(४) पुरुषनी पींगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायमे पुरुषनुं बिंदु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडी चालतां लेते प्राणायमे स्त्री बिंदु ग्रहे तो तेनो पुत्र थाय ते सर्व वाते साधारण नीपजे.

(५) पुरुषनी इंगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायामे

पुरुषनुं बिंदु खरे अने स्त्रीनी इंगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायमे स्त्री बिंदु ग्रहे तो तेनी पुत्री नीपजे ते [illegible] (वंझा) होय.

(६) पुरुषनी इंगळा नाडी चालतां लेते प्राणायमे पुरुषनुं बिंदु खरे अने स्त्रीनी इंगळा नाडी चालतां लेते प्राणायमे स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनी पूत्री नीपजे, ते महा सुभट सुजाण पतिव्रता होय, अने कदाच एने सत्संग मळे तो कुंवारपद साधन करे एवी होय.

(७) पुरुषनी इंगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायमे पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी इंगळा नाडी चालतां लेते प्राणायमे स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनी पुत्री नीपजे ते अतिशय कामी विभीचारीणी होय.

(८) पुरुषनी इंगळा नाडी चालतां लेते प्राणायमे पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी इंगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायमे स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनी पुत्री नीपजे ते सर्व वाते साधारण होय.

(९) पुरुषनी पींगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायमे पुरुषनुं बिन्दु उत्पन्न थाय अने स्त्रीनी इंगळा नाडी चालतां मूकते श्वासे स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे ते वंझा होय.

(१०) पुरुषनी पींगळा नाडी चालतां लेते प्राणायमे पुरुषनुं बिन्दु गळे (खरे) अने स्त्रीनी इंगळा नाडी चालतां

लेते प्राणायमे स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे, ते वाचाळ (वाचोल) होय.

(११) पुरुषनी पींगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायमे पुरुनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी इंगळा नाडी चालतां लेते प्राणायमे बिन्दु स्त्री ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे, ते मूर्ख पशु जेवो होय.

(१२) पुरुषनी पींगळा नाडी चालतां लेते प्राणायमे पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी इंगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायमे स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे ते अतिशय कायर, शूरातन विनानो होय.

(१३) पुरुषनी इंगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायमे पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायमे स्त्री बिन्दु ग्रहे तो, तेनी पुत्री नीपजे, ते महा शूरवीर पुरुषना जेवा आकृतिवान होय, अने तेने पूत्रा पूत्रादि अतिशय नीपजे नहि.

(१४) पूरुषनी इंगळा नाडी चालतां लेते प्राणायमे पूरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडी चालतां लेते प्राणायामे स्त्री बिन्दु ग्रहे तो, तेनी पूत्री नीपजे, ते वाचरी (वाचोल) होय.

(१५) पूरुषनी इंगळा नाडी चालतां मूकते प्राणायामे पूरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडी चालतां लेते

प्राणायामे स्त्री बिन्दू ग्रहे तो तेनी पूत्री नीपजे, ते कठण काळजानी होय तथा पूरूषनी साथे सती थाय.

(१६) पूरुषनी इंगळा नाडी चालतां लेते प्राणायामे पूरुषनुं बिन्दू खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडी चालतां मुके प्राणायमे स्त्री बिन्दू ग्रहे तो, तेनी पूत्री नीपजे, ते महा: चरित्रवान अने शंखणी होय.

ए प्रमाणे इंगळा अने पींगळा नाडीमां अग्निकाश महातत्व तथा त्रिकाश महातत्वनी क्रिया रही छे.

कुंभस्थ महातत्वना रेतनी पुत्र पुत्रीने विषे क्रिया थाय छे ते विषे:—

पूरुषनो प्राणायम स्थंभन पामता पूरुषनुं बिन्दू स्त्रीमां पडे अने स्त्रीनो प्राणायम पण ते वखते स्थंभन होय तो ते बिन्दू निष्फळ जाय, अने कदाच ते बिन्दुनो गर्भ रहे तो तेनुं बाळक थाय ते मुंगुं, पागळुं, बहेरुं, आंधळु के तणाएलुं होय.

(१) पूरुषना प्राणायममां पृथ्वीतत्व चालतां कुंभकनुं बिन्दू खरे, ते बिन्दूनो गर्भ रहे तो ते बाळक पांगळु प्रसवे.

(२) पुरुषना प्राणायममां जळतत्व चालतां कुंभकनुं बिन्दु खरे, तेनो गर्भ रहे तो मुंगुं बाळक प्रसवे.

(३) पुरुषना प्राणायममां अग्नितत्व चालतां कुंभकनुं बिन्दु खरे, तेनो गर्भ रहे तो अंध बाळक उत्पन्न थाय.

(४) पुरुषना प्राणायममां वायुतत्व चालतां कुंभकमां बिन्दु खरे, तेना बिन्दुनुं बाळक थाय ते तणाएलुं होय.

(५) पुरूषना प्राणायममां थता आकाशतत्वना कुंभ-कमां बिन्दु खरे, ते बिन्दूनुं बाळक प्रसवे ते वे अंगे खंडित नीपजे. एमां प्रथम बहेरूं अने बीजु जे तत्व साथे होय ते तत्वनी इंद्रि पण खंडित थाय.

कुंभकमां पुत्र पुत्री थाय छे तेनो भेद.

(१) पुरूषनी पींगळा नाडी चालतां प्राणायमना बिंदुनो पुत्र थाय पण ते पांगळो, बहेरो के आंधळो होय.

(२) पुरूषनी इंगळा नाडी चालतां प्राणायमना कुंभ-कना बिन्दुनी पुत्री थाय पण ते बहेरी, लुलीके आंधळी होय.

अस्थी, रग, रोम अने पुरुषनो पुरूषातननो रेत भाग ए चार धातु पूरूषना व्रज बिन्दुनी होय तथा रूद्र, मांस, अने त्वचा ए त्रण धातु स्त्रीना व्रज बिन्दुनी होय तो ए समधातुनो पुत्र थाय.

रूद्र, मांस, त्वचा अने स्त्रीना स्त्रीपणानो रेत भाग ए चार धातु स्त्रीना व्रज बिन्दुनी होय तथा अस्थी, नाडीने

रोम ए त्रण धातु पुरूषना ब्रज बिन्दूनी होय तो ए सप्त धातुनी पुत्री थाय.

पुरूषनी चार धातु अने स्त्रीनी त्रण धातु तथा पुरूषनी त्रण धातु अने स्त्रीनी चार धातु क्या संजोगे उत्पन्न थाय छे ते विषेः--

(१) पुरूषनी पींगळा नाडी चालतां पुरूष स्त्रीनुं मैथुन करे तो अस्थी, नाडी, रोम अने पुरुपातननो रेत भाग पुरूषना बिंदुमां उत्पन्न थाय.

(२) स्त्रीनी पींगळा नाडी चालतां स्त्री पुरुषनो भोग करे तो मांस, रुद्रने त्वचा ए त्रण धातुनुं बिन्दु स्त्रीनुं उत्पन्न थाय.

(३) पुरुषनी इंगळा नाडी चालतां पुरुष स्त्रीनुं मेथुन करे तो पुरुषनुं त्रण धातु (१) अस्थी, (२) नाडी (३) रोमनु बिंदु उत्पन्न थाय तेमज (४) स्त्रीनी इंगळा नाडी चालतां स्त्री पुरुषोनो भोग करे तो स्त्रीनु बिंदु चार धातु (१) मांस (२) रुद्र (३) त्वचा अने (४) स्त्रीरणाना रेत भागनुं उत्पन्न थाय.

स्त्री पुरुषनी ए सप्तधातु मिश्र होय तेनी पूत्री थाय.

(१) स्त्री पुरुषना संयोग वखते पुरुषनी पींगळा नाडी चालती होय अने स्त्रीनी इंगळा नाडी चालती होय तो स्त्री पुरुषनी चार चार धातुनां बिन्दु उत्पन्न थाय. ए अष्ट

धातु मिश्र होय तो बिन्दु निष्फळ जाय जो कदाच ते बिन्दुनो गर्भ रहे तो तेनो पुत्र थाय, ते व्यंढळ, पुरुषातन विनानो होय.

(२) स्त्री पुरुषना संयोगमां पुरुषनी इंगळा नाडी चालती होय अने स्त्रीनी पींगळा नाडी चालती होय तो त्रण त्रण धातुनां बिन्दु उत्पन्न थाय ते निष्फळ जाय, जो कदाच गर्भ रहे तो तेनी पुत्री थाय, ते स्त्री धर्म विनानी वींढळ होय.

स्त्री पुरुषनी नाडीमां तत्वभेदनी क्रिया रही छे ते विषेः—

(१) पुरुषनी पींगळा नाडी चालतां पृथ्वीतत्व चाले अने पुरुषनुं बिन्दु खरे, अने स्त्रीनी पण पींगळा नाडीमां पृथ्वीतत्व चालतां स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे ते मंद अंतःकरणनो अने शरीरे पुष्ट होय.

(२) पुरुषनी पींगळा नाडीमां जळतत्व चालतां पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां जळतत्व चालतां स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनो पुत्र थाय ते चतुर, दातार अने शरीरे दीर्घवान होय.

(३) पुरुषनी पींगळा नाडीमां अग्नितत्व चालतां पुरुषनु बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां अग्नितत्व चालतां स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे ते लबाड

मिथ्या भाषण करनार जुठो होय अने शरीरे गटको (छोटो) होय तथा दीर्घवान थाय नहि.

(४) पुरुषनी पींगळा नाडीमां वायु तत्व चालतां पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां वायु तत्व चालतां स्त्री बिंदु ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे ते अतिशय जोरावर थाय अने शरीरे पातळो होय.

(५) पुरुषनी सुक्ष्मणा नाडीमां आकाश तत्व चालतां पुरुषनुं बिंदु खरे अने स्त्रीनी सुक्ष्मणा नाडीमां आकाश तत्व चालतां स्त्री बिन्दु ग्रहे तो ते बिन्दु निष्फळ जाय, जो कदाच ते बिंदुनो गर्भ रहे तो पुत्र अने पुत्री थाय. ए बंने पैकी स्त्रीनी जमणी कुक्षानुं बाळक स्मृतिवान नीपजे, कदाच पाछळथी प्रसवे अने स्मृतिवान होय तो पण तेने जमणी कुक्षानुं जाणवुं. ए बाळको नानां मोटां होय, सरखां होय नहि.

(६) पुरुषनी पींगळा नाडीमां पृथ्वी तत्व चालतां पुरुषनुं बिंदु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां जळतत्व चालतां स्त्री बिंदु ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे, ते स्त्रीवश होय तथा पुण्यात्मा दातार नीपजे.

(७) पूरुषनी पींगळा नाडीमां पृथ्वी तत्व चालतां पूरुषनुं बिंदु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां अग्नितत्व चालतां स्त्री बिंदु ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे, ते अतिशय आळसु, दालीद्री होय.

(८) पुरुषनी नाडीमां पृथ्वी तत्व चालतां पूरुषनुं बिंदु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां वायुतत्व चालतां स्त्री बिंदु ग्रहे तो, तेनो पुत्र नीपजे ते अतिशय परदेश रटण करतो रहे.

(९) पूरुषनी पींगळा नाडीमां पृथ्वी तत्व चालतां पूरुषनुं बिंदु खरे, अने स्त्रीनी नाडीमां आकाश तत्व चालतुं होयने बिंदु ग्रहे तो, ते निष्फळ जाय. कदाच गर्भ रहे तो मरेलुं अवतरे.

(१०) पूरुषनी पींगळा नाडीमां जळ तत्व चालतां पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां पृथ्वी तत्व चालतां स्त्री बिंदु ग्रहे तो, तेनो पुत्र नीपजे, तेने वश घणी स्त्रीओ थइ रहे, अने ते अतिशय लोभी होय.

(११) पुरुषनी पींगळा नाडीमां जळ तत्व चालतां पुरुषनुं बिंदु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां अग्नि तत्व चालतां स्त्री बिंदू ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे ते जीभनो कटुवचनी पण अंतरमां दयाळु होय.

(१२) पुरूषनी पींगळा नाडीमां जळ तत्व चालतां पुरूषनुं बीन्दू खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां वायु तत्व चालतां स्त्री बिन्दू ग्रहे तो, तेनो पुत्र नीपजे, ते नपुंसक होय तथा शांति स्वभावनो होय.

(१३) पुरूषनी पींगळा नाडीमां जळ तत्व चालतां

पुरूषनुं बीन्दू खरे अने स्त्रीनुं आकाश तत्व चालतां स्त्री बीन्दू ग्रहे तो ते बीन्दू निष्फळ जाय कदाच गर्भ रहे तो बे पुत्र नीपजे तेओ अतिशय शांतिवान होय.

(१४) पुरुषनी पींगळा नाडीमां अग्नि तत्व चालतां पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां पृथ्वीतत्व चालतां स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे, ते अतिशय दावादारी, अन्यायी मूर्ख होय.

(१५) पुरुषनी पींगळा नाडीमां अग्नि तत्व चालतां पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां जळतत्व चालतां स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे, ते मुखे मीठु बोले पण अंतरमां कपटी होय.

(१६) पुरुषनी पींगळा नाडीमां अग्नि तत्व चालतां पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां वायुतत्व चालतां स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनो पुत्र थाय ते गर्भपात थइ जाय. कदाच गर्भ परिपक्व थइने प्रसवे तो थोडा दिवस जीवे.

(१७) पुरुषनी पींगळा नाडीमां अग्नि तत्व चालतां पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी सुक्ष्मणा नाडीमां आकाश तत्व चालतुं होय तो ते बिन्दु निष्फळ जाय.

(१८) पुरुषनी पींगळा नाडीमां वायुतत्व चालतां पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां पृथ्वीतत्व

चालतां स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे, ते सुद्रने पेटे होय तो चोर नीपजे अने ब्राह्मण क्षत्रिय के वैश्यने पेटे होय तो कोइनो दास, कासद के वाणोतर थइ रहे.

(१९) पुरुषनी पींगळा नाडीमां वायुतत्व चालतां पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां जळ तत्व चालतां स्त्री बिन्दु ग्रहे तो तेनो पुत्र नीपजे ते शील स्वभावनो शांतिवंत होय; पण परदेशथी कमाइ लावीने दिन गुजारे.

(२०) पुरुषनी पींगळा नाडीमां वायुतत्व चालतां पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां अग्नि तत्व चालतां स्त्री बिंदु ग्रहे तो ते बीन्दु निष्फळ जाय कदाच गर्भ रहे तो ते बाळकनुं थोडा वर्षमां मृत्यु थाय.

(२१) पुरुषनी पींगळा नाडीमां वायुतत्व चालतां पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी सुक्ष्मणा नाडीमां आकाशतत्व चालतुं होय तो ते बीन्दु निष्फळ जाय. कदाच गर्भ रहे तो ते गर्भ एकवीस दिवसमां विलसाइ जाय छे.

(२२) पुरुषनी सुक्ष्मणा नाडीमां आकाश तत्व चालतां पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां पृथ्वीतत्व चालतां स्त्री बिंदु ग्रहे तो ते बिन्दु निष्फळ जाय. कदाच गर्भ रहे तो जुगल बाळक थाय ते बंने मूर्ख होय.

(२२) पुरुषनी सुक्ष्मणा नाडीमां आकाश तत्व चालतां पुरुषनुं बिन्दु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां जळतत्व

चालतां स्त्री बिन्दू मूहे तो ते बिन्दु मूले जाय, कदाच गर्भ रहे तो जुगल पुत्र थाय ते महाशांतिवान शील स्वभावना होय.

(२३) पुरुषनी सुक्ष्मणा नाडीमां आकाशतत्व चालतां पुरुषनुं बिंदु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां अग्नितत्व चालतां स्त्री बिंदु मूहे तो ते बिंदु निष्फळ जाय.

(२४) पुरुषनी सुक्ष्मणा नाडीमां आकाशतत्व चालतां पुरुषनु बिंदु खरे अने स्त्रीनी पींगळा नाडीमां वायुतत्व चालतां स्त्री बिंदू मूहे तो ते बिन्दु निष्फळ जाय.

(२५) पुरुषनी इंगळा नाडीमां पांचे तत्व एने ए प्रकारे चालतां पुरुषनु बिन्दू खरे अने स्त्रीनी पण इंगळा नाडीमां पांचे तत्व एने ए प्रकारे चालतां स्त्री वीन्दु मूहे तो तेनी पुत्रीओ नीपजे, तेमना गुणदोष पण पींगळामां कहेला पुत्रोनी माफक होय.

पुत्र पुत्रीनां शरीर जुदा जुदा रंगना होय छे ते विषेः—

(१) जे पुत्रके पुत्रीनी त्वचामां पृथ्वीतत्वनो विभाग विशेष होय तेनु शरीर केसरी रंगनु होय.

(२) जे पूत्रके पुत्रीनी त्वचामां जळतत्वनो विभाग विशेष होय तेनु श्वेतभर्युं शरीर होय.

(३) जे पुत्रके पुत्रीनी त्वचामां अग्नितत्वनो विभाग विशेष होय तेनु रक्त शरीर होय.

(४) जे पुत्रके पुत्रीनी त्वचामां वायुतत्वनो विभाग विशेष होय तेनु शरीर भीनेवान होय. भीनेवान एटले अतिशय काळू नहि तेम अतिशय गोरू नहि.

(५) जे पुत्रके पुत्रीनी त्वचामां आकाशतत्व विशेष होय तेनु शरीर घनश्याम होय.

पुरुषना सर्व शरीरना चतुष्टअंगनो अधिक तुन्य अरग बिन्दुमां आव्यो होय तेनी क्रिया.

(१) पुरुषनी भुजानो अरग बिन्दुमां विशेष आव्यो होय तो जे पुत्र नीपजे ते अतिशय बाहुबळी होत, जो कदाच मुखारविन्दनो विशेष भाग बिन्दुमां आव्यो होय ते पुरूष अतिशय वाचाळ नीपजे, हृदयनो अरग बिन्दुमां विशेष आव्यो होय तो तेनो पुत्र थाय ते अतिशय बुद्धिवंत होय. चरणारविंदनो विभाग बिंदुमां विशेष आव्यो होय तो ते अतिशय मलीन होय.

जे प्रकारे पुरुषना अधिक तुन्य अरगनी क्रिया पुत्र विषे कही ते प्रकारे स्त्रीना अधिक तुन्य अरगनी क्रिया पुत्री विषे जाणवी.

एज प्रकारे ब्रह्माथी पण चार वर्ण उत्पन्न थइ छे.

ब्रह्माना मुखारविंद अरगना विशेष भागना ब्राह्मण थया. ब्रह्माना हृदय अंगना विशेष अरगना वैश्य थया. ब्रह्माना भुजा अंगना विशेष अरगना क्षत्रिय थया. ब्रह्माना चरणना विशेष अरगना शूद्र थया.

ए प्रकारनां तत्व क्रिया चिह्न संयुक्त पोपाइएलां पुत्र पुत्रीने कालचक्षत्वे बहार प्रसव कर्यां छे.

पुत्र पुत्रीने विषे स्त्रीना रस बिन्दुना पंच भूतना विभाग अने पुरुषना बिन्दूना पंच भुतना विभाग क्या क्या छे ते विषेः—

(१) पुत्र के पुत्रीमां अस्थी भाग छे तेने पुरुषना बिन्दुनु पृथ्वीतत्व जाणवुं.

(२) पुत्र के पुत्रीना उदरमां जठराग्नि रही छे तेने पुरुषना बिंदूनुं तेज तत्व जाणवुं.

(४) पुत्र के पुत्रीमां नाडी (नस) तेज तत्व भाग छे तेने पुरुषना बिंदुनुं वायु तत्व जाणवुं.

पुत्र के पुत्रीना नाडी भागमां रस रह्यो छे तेने पुरुषना बिंदुनु जळतत्व जाणवुं.

(६) पुत्र के पुत्रीमां मांस भाग छे तेने स्त्रीना रस बिंदुनुं पृथ्वी तत्व जाणवुं.

(७) पूत्र के पुत्रीना मांस भागमां लोही (रक्त) रह्युं छे तेने स्त्रीना बिंदुनुं जळ तत्व जाणवुं.

(८) पुत्र के पुत्रीना मांस विषे उष्णता रही छे तेने स्त्रीना बिंदुनु अग्नि तत्व जाणवुं.

(९) पुत्र के पुत्रीना शरीर उपर त्वचा भाग रह्यो छे, तेने स्त्रीना बिन्दुनुं वायुतत्व जाणवुं.

(१०) पुत्र के पुत्रीना त्वचा भागमां छिद्र रह्यां छे के जेथी परसेवो उत्पन्न थाय छे, तेने स्त्रीना बिन्दुनुं आकाश तत्व जाणवु.

स्त्री पुरुषनां त्रण चक्षसत्व बिंदु साथे पुत्र पुत्रीमां आव्यां छे ते विषे.

(१) बाळक स्त्रीना कुचस्थान (स्तन)ने ओळखे छे तेने स्त्रीना बीन्दुनुं वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. स्तनने देखतां बाळकने हर्ष उपजे छे ते स्त्रीना बीन्दुनुं अनंग चक्षसत्व जाणवुं. त्यार पछी बाळक स्तनने ग्रहण करे छे ते पुरुषना बिन्दुनुं अनंग चक्षसत्व जाणवुं. स्तनने ग्रहण कर्या पछी बाळक पयनुं शोषण करे छे, ते पुरुषना बीन्दुनुं वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. दूध पीने बाळक तृप्त थाय छे, ते स्त्रीना बिन्दुनुं काळचक्षसत्व जाणवुं. तृप्त थइने ते बाळक पयोधर (स्तन)ने छोडी दे छे. ते पुरुषना बीन्दुनुं काळचक्षसत्व जाणवुं. त्यार पछी बाळक आनंदमां रहे छे ते स्त्रीना बीन्दुनुं अनंग चक्षसत्व जाणवुं. आनंदमां रही हाथ पग

वगेरे हलावी चेष्टा करे छे, ते पुरूषना बीन्दुनुं अनंग चक्षसत्व जाणवुं. बाळक चेष्टा करतुं शांत थइने जंपे छे, ते पुरूषना बिन्दुनुं काळचक्षसत्व जाणवुं. त्यार पछी बाळक निद्रावश थाय छे, तेमां स्त्रीनुं कालचक्षसत्व वर्तंतुं जाणवुं त्यार पछी बाळक जाग्रत थाय छे, ते जाग्रतमां पुरूषना बिन्दुनुं वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. बाळक जाग्रत थया पछी क्षुधानी परीक्षा करे छे, ते स्त्रीना बिंदुनुं वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. त्यार पछी बाळक मातुश्रीनी साथे प्रीति राखे छे, ते मातुश्रीना बिंदुनुं अनंग चक्षसत्व जाणवुं. त्यार बाद बाळक मोटुं थतां मातुश्रीने ओळखे छे, ते मातुश्रीना बींदुनुं वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. कोइवार बाळक माता उपर क्रोध करे छे, ते मातुश्रीना बिंदुनुं काळचक्षसत्व जाणवुं. त्यार पछी बाळक पिताने ओळखे छे ते पिताना बींदुनुं वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. त्यार पछी पिता साथे प्रीति करे छे, ते पिताना बींदुनुं अनंग चक्षसत्व जाणवु. कोइ समे बाळक पिता उपर क्रोध करे छे ते पिताना बींदुनुं कालचक्षसत्व जाणवुं. त्यार पछी बाळक सर्व पुरूष वर्गनी ओळखाण करे छे. ते पिताना बींदुनुं वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. पछी ते पिता तेमज पुरूष वर्ग उपर रोष करे छे, ते पिताना बींदुनुं कालचक्षसत्व जाणवुं. बाळक सर्व पुरूष उपर प्रीति राखे छे. ते पिताना बींदुनुं अनंग

चक्षसत्व जाणवुं. मातुश्री अने सर्व स्त्री वर्गने ओळखे छे, ते माताना बीदुनुं वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. मातुश्रीनी आद्य लइने सर्व स्त्री जाति साथे हेतु करे छे, ते मातुश्रीना बीदुनुं अनंग चक्षसत्व जाणवुं. मातुश्री तेमज सर्व स्त्री जाति उपर रोप करे छे. ते मातुश्रीना बीदुनुं काल चक्षसत्व जाणवुं.

ए प्रकारे सर्व जंगम जाति, देव, नर, नाग, मनुष्य अने मृत्य लोकनी आद्य लइने, पशु पंखी, कीट पर्यंत, जेमां जे प्रकारना तत्व विभाग पोष्या छे, तेमां ते प्रकारनी क्रियाना पुत्र पुत्र्यादिक उत्पन्न थाय छे.

जे जंगम जातिमां छ भाग आकाशतत्वना, छ भाग वायुतत्वना, छ भाग अग्नितत्वना अने छ भाग जळतत्वना पोष्या छे ते जंगम जातिनां बाळक पयपान करे नहि, कारणके:—

जे जंगम जातिमां छ भाग आकाशतत्वना रह्या छे, ते जातिमां पय उत्पन्न थाय नहि कारणके आकाशतत्व निःरस छे. एज प्रमाणे वायु पण निःरस छे तेथी ते जातिमां पय थाय नहि. अग्नितत्व पण निःरस छे तेथी ते जातिमां पण पय उत्पन्न नहि थाय, जळतत्व अतिशय रस रूपे छे तेथी रसमां रस उत्पन्न थाय नहि कारणके ए जातिनां बाळक रसमांज रहे छे. ए प्रमाणे ए चार जंगम जातिमां दूध (पय) उत्पन्न थाय नहि.

जे जंगम जातिमां पृथ्वीतत्वना छ भाग पोष्या छे तै जंगम जातिमां त्रण चक्षसत्वना दश पा पा भाग पोष्या छे तेथी जंगम जातिमां पण पय उत्पन्न नहि थाय, त्रण चक्षसत्वना पा पा भाग पोष्या छे तेमां अनंग चक्षसत्व कमी होवाथी ते जंगम जातिमां उरस्थान उत्पन्न थाय नहि अने उरस्थान न थवाने लीधे पय उत्पन्न थाय नहि.

जे जंगम जातिमां पय उत्पन्न थतुं नथी. ते जंगम जातिनां बाळकोमां त्रण चक्षसत्वनी नीचे प्रमाणे क्रिया थाय छे बाळक प्रसव्या पछी थोडा दिवस सुधी मातुश्रीनी साथे हेतु राखे छे ते स्त्रीपुरूषना बिंदुनु मिश्र अनंग चक्षसत्व जाणवुं, अने ते पोताना खानपाननी परिक्षा करीने चारो करे छे, ते स्त्रीपुरूषना बिंदुनुं मिश्र वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं त्यारपछी ते बाळक थोडा दिवसमां मातुश्रीनो संग छोडी दे छे, ते स्त्रीपूरूषना बिंदुनु काळचक्षसत्व जाणवुं, ए प्रमाणे ते जंगम जातिमां सूक्ष्म भागे त्रण चक्षसत्व वर्ते छे गरूड, हंस वगेरे जे आकाशमां गमन करे छे, ते सर्वने पतंग जाति जाणवी, चोमासानी ऋतुमां थवा उद्भाज खाणना जीव, नवकुळ नाग वगेरेने कीट जाति जाणवी. जे पाताळमां नागलोक देवतनु धारण करे छे, तेने देव लोकमां गणवा, पण कीट, पतंग अने जळजाति देव कहेवाय नहि, अणुनी आग लइने मच्छ, कच्छ,

मगरादि पर्यंत जे जळमां रहे छे, ते सर्वेने जळ जाति जाणवी.

कीट, पतंग अने जळजाति जंगममां जेनी रसनामां तमोगुणनो विभाग विशेष रह्यो छे, तेना मुखमां कडक वचन अने डंखवापणुं रहयुं छे जेनी रसनामां रजोगुणनो विभाग विशेष रह्यो छे, तेनु मुख खानपाने रजोगुणी होय पण करडवापणुं न होय, जेनी रसनामां सतोगुणनो विभाग विशेष रह्यो छे, तेनु मूख खानपानमां शांति स्वभावनु होय, जेनी रसनामां अहंकारघण अने तमोगुण ए बंनेना विभाग विशेष रह्या छे तेना मुखमां भयंकर डंखवापणुं रहयुं छे, भयंकर डंखवापणुं एटले जेने ते डंखे तेने विष चढे अने मरी जाय, जे जंगमनी रसनामां स्वकाशघणना अने सतोगुणना विभाग विशेष रह्या होय ते जंगम जातिना मुखमां अतिशय निर्मल शांतिपणुं होय, अने ते जंगमजाति हालतां चालतां जीवनु भक्षण करे नहि. जे जंगमनी रसनामां अचंतघणना अने तमोगुणना विभाग विशेष रह्या होय, ते जंगम जातिना मुखमां डंखवापणुं होये, पण तेनु डंखेलुं विष थोडीवार चढे अने पछी उतरी जाय, जे जंगम जातिनी रसनामां अहंकारघणना अने रजोगुणना विभाग विशेष रह्या होय, तेना मुखना शब्दनु गर्जनापणुं घणुं होय, अने ते कोइने डंखी शके नहि. ए प्रकारे त्रण जंगम जातिनी रसनामां गुण वर्त्या करे छे, तथा ए त्रण जातिमां

पयपान उत्पन्न थाय नहि, ए प्रमाणे सर्व जंगम जातिनी रतनामां त्रण गुण अने घणना त्रिभाग वर्ते छे, पण अन्य जंगमना मुखमां डंखवापणुं उत्पन्न थाय नहि.

जे जंगम जातिमां छ भाग पृथ्वी तत्वना अने त्रण चक्षसत्वना दश दश भाग रह्या छे, तथा जेमां अर्धा अर्धा भाग त्रण चक्षसत्व तत्वना रह्या छे, ते सर्व जंगम जातिमां पयपान उत्पन्न थाय, ते जंगम जातिनां बाळको पयपान करीने मोटां थाय, अने ते जंगम जातिना बाळक प्रसव्या पछी जे क्रिया करे छे, ते विषे आगळ कहेवाई गयुं छे. ते जंगम जातिनु बाळक मातुश्रीनु पयपान छोडी दइने अन्नादि भोजन करवा लागे, त्यारे मातापिताना त्रण चक्षसत्व एकठां थइने वर्ते छे, मातुश्रीनु वर्गज्ञान चक्षसत्व पिताना वर्गज्ञान चक्षसत्वमां मळी जाय छे. मातुश्रीनु अनंग चक्षसत्व पिताना अनंग चक्षसत्वमां मळी जाय छे, अने मातुश्रीनु कालचक्षसत्व पिताना कालचक्ष सत्वमां मळी जाय छे. ए प्रकारे मातुश्रीनां त्रण चक्षसत्व पिताना त्रण चक्षसत्वमां मळी जइने मूळ त्रण चक्षसत्व थइने ते बाळकमां वर्ते छे.

दोहा

जंगम विपू तीनु तत्वकी कीनेहु सकळ त्रिभाव;
पोषेहु जेही जेतने जीमे, तेही दरशायेहु न्याव. १
अब अंतर अविलोकउ, पलट अवस्था मर्म;
कहे कुबेर सूण शुद्ध चित्ते नारण्यदास निःकर्म. २

अथ अवस्था पलटावन चक्षसत्व क्रिमाकित दर्शको.

कंद १३मो.

त्रण चक्षसत्व पांचे अवस्थामां सदाकाळ जंगम जातिनां बाळकमां वर्ते छे, ते नीचे मुजबः—जंगम जातिनुं बाळक जाग्रत अवस्थामां हलण चलण करे छे, तेने अनंग चक्षसत्वनी क्रिया जाणवी. हलणचलण करतां कांइ कार्य कारण करे छे, ते वर्गज्ञान चक्षसत्वनी क्रिया जाणवी. हलण चलण करतां मन अंतःकरण अने शरीर मंद पामीने निद्रावश थइ जाय छे, ते कालचक्षसत्वनी क्रिया जाणवी. ए त्रण चक्षसत्वनी त्रण क्रिया जाग्रत अवस्थामां थाय छे त्यार पछी स्वप्न अवस्था स्फुरण थाय छे, तेमां वर्गज्ञान चक्षसत्वनी क्रिया जाणवी. स्वप्ननां स्फुरेला पदार्थमां मोह उपजे छे, ते अनंग चक्षसत्वनी क्रिया जाणवी. त्यार पछी बुद्धि अंतःकरणने संपट करीने स्वप्नने विलय पमाडीने निद्रावश करे छे, ते कालचक्षसत्वनी क्रिया जाणवी ए त्रण चक्षसत्वनी त्रण प्रकारनी क्रिया स्वप्न अवस्थामां थाय छे. त्यार पछी सुसुप्ती अवस्थाने स्फुरण करे छे, ते सुसुप्तीने विषे वर्गज्ञान चक्षसत्वनी क्रिया जाणवी.

सुसुप्तीमां ते वर्गज्ञान चक्षसत्व क्या पदार्थनुं स्फुरण करे छे, ते नीचे मुजबः--स्वप्ननी अर्ध मात्रा देखाइने विलाइ जाय छे, के जेमां स्वप्ननुं पुरु रुप बंधातुं नथी. अने अल्प पदार्थ देखाय छे. ते वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. ते अल्प पदार्थ दर्शननो अल्प मोह उत्पन्न थाय छे, ते अनंगचक्षसत्वनी क्रिया जाणवी. त्यार पछी सुसुप्ती अवस्थाना अहंकार अंतःकरणने संपट करीने लय पमाडीने निद्रावश करे छे, ते काळचक्षसत्वनी क्रिया जाणवी ए त्रण चक्षत्वनी त्रण प्रकारनी क्रिया ए प्रमाणे सुसुप्तीमां थाय छे.

सुसुप्ती अवस्थानां चिन्ह.

जाग्रत अवस्थानो प्राणायाम अव्यक्तज्ञान चाले छे, अने स्वप्न अवस्थानो प्राणायम व्यक्तज्ञान चाले छे, तथा सुसुप्ती अवस्थानो प्राणायम घोर करतो चाले. ते घोर लेवा प्राणायममां थाय छे, अने मुक्तो प्राणायम सामान्य स्वप्ना अवस्थाना जेवो चाले छे, ए प्रमाणे सुसुप्ती अवस्थानो प्राणायाम चालतो जाणवो. मन, बुद्धि अंतःकरण लीन पामे छे, तेथी अर्धा भागनो ते लेतो प्राणायम घोर करे छे, अने अर्धा भागनी नाडीओ सुसुप्ती अवस्था अने अंहकार अंतःकरणने जाग्रत करीने विकाशे छे, तेथी मुक्तो प्राणायाम घोर (अवाज) करतो नथी.

जेम कोइ पुरुष वांसनी वांसळीना चपटाएला (संकोचाएला) भाग तरफथी फुकतां ते वांसळी घोर करे छे, अने संकोचाएलाविना भाग तरफथी फुकतां वांसळी वागे नहि. तेम सुसुप्तीनो बोलतो अने न बोलतो प्राणायम जाणवो. तुर्या अवस्था अने उनमुनी अवस्था एकला प्राणायम देहमांज स्फूरण थाय छे. तेनी क्रिया नीचे मुजबः-

सर्व पदार्थना संकल्प लीन पामीने सामान्य शांतिवत थइ जाय, त्यारे तुर्याअवस्था जाणवी. तुर्यावस्था स्फूरण थतां प्रथम प्राणायम बराबर घोर करे छे. कारणके शरीरनी नाडीओ जे जाग्रत, स्वप्न अने सुसुप्तीमां तथा मन, बुद्धि अने अहंकार, अंतःकरणमां आकृतिवान हती, ते सर्व लीन पामे छे, लीन पामीने नीखाथी ते शीखा पर्यंत संकोचाय छे. तेथी लेतो प्राणायम अने मुकतो प्राणायम घोर करतो चाले छे, ए प्रमाणे तुर्या अवस्थाने स्फुरण करे छे, ते वर्गज्ञान चक्षसत्व जाणवुं. वर्गज्ञान चक्षसत्व कबंध नियंतावान छे. तेथी बंने प्राणायम बराबरी नियंताने कबंधी राखे छे. त्यार पछी घोर करता बंने प्राणायम पैकी मुक्तो प्राणायम सामान्य चाले अने लेतो प्राणायम घोर करे, ते अनंग चक्षसत्वनी क्रिया जाणवी. लेता प्राणायमनुं अनंग चक्षसत्व प्राणायमने खेंचे छे, तेथी लेतो प्राणायम घोर करे छे, अने मुक्ता प्राणायममां अनंग चक्षसत्व

नपुंसक नम्र थाय छे, तेथी मुकतो प्राणायाम सूक्ष्म सामान्य चाले छे.

अनंग चक्षसत्वने कामदेव तुल्य गणवुं. कामदेव ज्यां सुधी बंध होय त्यां सुधी कामनी समर्थता रहे छे पण काम स्खलीत थई जतां जेम पुरुष नपुंसक थइ जाय छे. तेम मुक्ता प्राणायममां अनंग चक्षसत्व स्खलीत थाय छे. तेथी मूक्तो प्राणायाम सामान्य चाले छे त्यार पछी चित्त अंतःकरणने मंद पाडीने तुर्यावस्थानी अवधि आणे छे, ते कालचक्षसत्वनी क्रिया जाणवी. तुर्यावस्थाना प्राणायममां कालचक्षसत्व केवी रीते हतुं ते विषेः-

अनंगचक्षसत्वने विषे लेतो प्राणायम घोर करतो हतो अने मूकतो प्राणायम सामान्य चालतो हतो, ते कालचक्षसत्वने विषे मूकतो प्राणायम घोर करतो चाले अने लेतो प्राणायम सामान्य चाले ते समये कालचक्षसत्व वर्ततुं जाणवुं. कारणके कालचक्षसत्व प्राणायमनी नास्ती करवा माटे प्राणायमने बहार जोरथी फेंकी दे छे, अने लेता प्राणायमने सूक्ष्म खेंचे छे. ए प्रकारे तुर्यावस्थामां त्रण चक्षसत्वनी क्रिया थाय छे. त्यार पछी तुर्यावस्थाना अंतमां अने जाग्रतावस्थानी आद्यमां उनमुनी अवस्था अने नचित्त अंतःकरण स्फुरे छे ते वर्गज्ञान चक्षसत्वनी क्रिया जाणवी. ज्यारे उनमुनी अवस्था होय छे त्यारे बंने प्राणायम सम

थइ जाय छे, अने सामान्य चाले छे. सामान्य एटले के जाग्रत अवस्थामां प्राणायम चालतो होय ते करतां लेश मात्र जास्ती चाले तेथी प्राणायम उनमुनीमां सामान्य चाले छे, अने घोर करतो नथी. निद्रानी अवधी थइ छे अने जाग्रतनी शरुआत थइ छे तथा नचित अंतःकरण स्फूर्युं छे, ए कारणे सर्व देहनी नाडीओ विकाश पामे छे अने घोर करती नथी, तथा सर्व शरीर समवत होय छे. त्यार पछी शरीर चळवळे अने हाथपग वगेरे लांबा टुंका थाय तेने उनमुनी अवस्थामां अनंग चक्षसत्वनी क्रिया जाणवी. चळवळ थाय छे तेनुं कारण एटलुंज के उनमुनी अवस्थाना साधक शीव अने एकलशृंगी वगेरे काळना भयथी नथी डोलता, द्रव्यथी पण चळ्या नथी सुख तरसे पण डोल्या नथी, चौद लोकनी पदवीथी छकी जइने डोलायमान थता नथी पण अनंगचक्षसत्व (जे कामदेव)थी डोलायमान थीया छे. माटे उनमुनी अवस्थामां शरीर चलायमान करे छे ते अनंगचक्षसत्व जाणवुं. त्यार पछी नचित अंतःकरणने संपट करीने उनमूनी अवस्थानो लय करे छे, तथा शरीर सून्याकार करी नांखे छे. ते कालचक्षसत्वनी क्रिया जाणवी. उनमूनी अवस्थानो लय थया पछी जाग्रत अवस्था स्फूरे छे. ए जाग्रत अवस्थामां प्रथम स्त्री पुरुषो उठतांज अंधाधुंध सून्य सरखां अचेत

थइने उठे छे, ते माटे ते समये (उनमूनीना अंतमां) कालचक्षसत्व वर्ततुं जाणवुं अचेत के अंधाधुंधपणुं समी जइने सर्व कार्यनी शूद्धि स्त्री पुरुषोने स्फुरे छे ते जाग्रत अवस्थामां वर्गज्ञानचक्षसत्वनी क्रिया जाणवी.

ए प्रमाणे जंगमनी पांचे अवस्थामां त्रणचक्षसत्व वर्ते छे.

दरेक अवस्था केटला समय सुधी वर्ते छे ते विषेः—

चार हजार त्रणसोने वीश (४३२०) प्राणायाम जपाय त्यारे एक अवस्था पूर्ण थाय, एटला एटला प्राणायम पांचे अवस्थामां चाले छे पण दरेक अवस्थामां अंतरे अंतरे बीजी पांच अवस्था वर्ते छे. ते दरेक अवस्था आठसोने चोसेट (८६४) प्राणायन सूधी वर्ते छे, पांच उपवस्था एक मूळ अवस्थामां वर्ते छे (८६४×५=४३२०).

जाग्रत अवस्थामां पांच उप अवस्थाओनुं वर्तनः—

जाग्रतमां जाग्रत=ए वखते होशियारी रहे छे.

जाग्रतमां स्वप्नावस्था=ए समये वृथा विचार उपजे छे.

जाग्रतमां सूसुप्ती=ए समये विसर्जनपणु थाय छे.

जाग्रतमां तुर्यावस्था=ए समये सर्व विचार लीन पामे छे तथा शांत थवाय छे.

जाग्रतमां उनमुनी=जाग्रतना अंतमां अने निद्रानी आद्य, ए बंने समयनी संधीमां उनमूनी अवस्था जाणवी. ए समये जाग्रतनी उपाधी दूर थाय छे तथा निवृत्ति थाय छे पण पुरी निद्रा होती नथी माटे ए वखते जाग्रतना उदरमां उनमुनी अवस्था वर्तती जाणवी.

स्वप्नावस्थामां पांच अवस्थाओनुं वर्तनः—

स्वप्नामां जाग्रत=जाग्रतमां देखेला पदार्थ दृश्यामां आवे यथार्थ रुप भाशे.

स्वप्नमां स्वप्न=ए समये नजरे देख्युं नहोय, काने सांभळयुं न होय के चित्तमां चितव्युं न होय तेवुं अणचिंतव्युं आळपंपाळ दृश्यमान थाय छे स्वप्नवस्थामां स्वप्न स्फुरे छे ते.

स्वप्नमां सुसूप्ति=ए समये स्वप्नना घाटो लीन पामे छे. अंधाधुंध जेवुं रहेवाय छे.

स्वप्नमां तुर्यावस्था=ए समये स्वप्नना पदार्थनी स्मृति रहेती नथी. अथवा शरीरनुं बीलकुल भान होतुं नथी.

स्वप्नमां उनमुनी=स्वप्नावस्थाना अंतमां अने सूसुप्ति अवस्थानी आद्यमां वर्तती जाणवी.

सुसुप्तिअवस्थामा पांच अवस्थाओनुं वर्तनः-

शुसुप्तिमां जाग्रत ए समये कोइ बोली उठे छे, अने तेने जो कोइ पुछेके केम बोले छे ? तो ते कहेके हुं कांइ बोलतो नथी.

शुसूप्तिमां स्वप्न स्वप्ननी अर्धमात्रा, विना चिंतवन दृश्यमान थाय छे अने पछी मटी जाय छे.

शुसुप्तिमां शुसुप्ति अर्धमात्रानुं स्वप्नु अर्धा भागे लीन थई जाय छे ते शुद्ध सूसुप्ति अवस्था जाणवी. अंधाधुंध रहेवाय छे.

शुसुप्तिमां तूर्यावस्था अर्धमात्रा स्वप्नना अल्प विषय शांत थइ जाय छे अथवा अहंपणानी ग्रंथी छुटी जाय छे.

शुसुप्तिमां उनमूनी शुसुप्तिनी अंतमां अने तुर्यावस्थानी आद्यनी संधीमां उनमूनी वर्ते छे ते वखते मूकतो प्राणायम घोर करतो वहार नीकळे छे अने लेतो प्राणायम नहि जेवो घोर करे छे.

तुर्याअवस्थामां पांच अवस्थाओनुं वर्तनः-

तुर्यावस्थामां जाग्रत-मूकतो प्राणायम एकलो घोर करे अने लेतो प्राणायम घोर कर्या वगर सुक्ष्म चाले त्यारे तुर्यामां जाग्रत वर्तती जाणवी. जाग्रत अवस्थानी उर्द्ध मुखे रहेली नाडीओ विकाश पामे छे तेथी मुकतो

प्राणायम घोर करे छे अने लेलो प्राणायम सुक्ष्म चाले छे.

तुर्यावस्थामां स्वप्न-ए समये प्राणायाम सुक्ष्म चाले छे. तथा शरीर अमळाय छे.

तुर्यावस्थामां शुसुप्ति-लेता श्वासनो शब्द थाय छे अने मूकतो प्राणायम सामान्य चाले छे.

तुर्यावस्थामां तुर्या-ए वखते बंने प्राणायमना शब्द थाय छे.

तुर्यावस्थामां उनमुनी-तुर्यावस्थाना अंतमां अने उनमुनीनी आद्यमां वर्ते छे ए वखते बंने प्राणायम श्वासवत सूक्ष्म चाले छे.

उनमुनी अवस्थामां पांच अवस्थाओनुं वर्तन.

उनमुनीमां जाग्रत-ए समये निद्रानो अंत आवे छे अने जाग्रतनी शरुआत थाय छे (आंख उघाडतांज उनमुनीमां जाग्रत वर्ते छे) ए वखते हाथ शरीर उपर फेरवाय छे (खंजवाळे छे.)

उनमुनीमां स्वप्न-ए समये हाथ पग लांबा टुंका थाय छे.

उनमुनीमां शुसुप्ति-ए वखते शरीर डाबुं जमणुं फरे छे.

उनमुनीमां तुर्यावस्था-ए वखते एक बे प्राणायम सामान्य चाले छे. अने पछी एक प्राणायम अवाज करे

छे, ते अवाज थोडीवारे बंध थाय के फरीथी अवाज करे छे.

उनमुनीमां ऊनमुनी–ए वखते बंने प्राणायम सामान्य समवत थइ जाय छे (चिद् अंतःकरण थतां तरतज जाग्रत थइ जवाय छे.

क्या क्या शरीरमां कइ कई अवस्था भोगवाय छे ते विषेः—

(१) स्थुलदेह, पृथ्वीतत्व, मन अंतःकरण अने रजोगुण अधिष्टान ए चतुर्पुटी संयुक्त जाग्रत अवस्था वर्ते छे.

(२) सूक्ष्म देह, जळतत्व, बुद्धि अंतःकरण अने सतोगुण अधिष्ठान ए चतुर्पुटी संयुक्त स्वप्न अवस्था वर्ते छे.

(३) कारण देह, अग्नितत्व, अहंकार अंतःकरण अने रुद्र अधिष्ठान ए चतुर्पुटी साथे शुसूप्ति अवस्था वर्ते छे.

(४) महाकारण देह, वायुतत्व, चित्त अंतःकरण अने अव्याकृत अधिष्टान ए चतुर्पुटी साथे तुर्यावस्था वर्ते छे.

(५) परमकारण देह, आकाशतत्व, नचित अंतःकरण अने निरंजन अधीष्ठान ए चतुर्पुटी साथे उनमुनी वर्ते छे.

दरेक देहनुं बंधारणः—स्थुलदेहनुं बंधारणः—

अहंकारघणना पांच भूतमांथी पृथ्वी तत्वना छ भागमां बीजा चार भूतोना दरेकना एक एक प्रमाणे चार भाग

मूकीने ए दश भाग, रजोगुणनी दश आकांक्षा पैकी पांच पांच अने बीजी पांच आकांक्षनो एक एक भाग मुकीने, पांच मात्राना चार चार भाग रजोगुणनी आकांक्षाना छ छ भागमां मुकीने अने प्रधान रजोगुणना नव भाग लइने तेमां एक भाग अहंकारघणनो मुकीने ए सित्तेरतत्व विभागे मन अंत.करण संयुक्त, रजोगुण अधिष्टान सहवर्तमान कर्तानी क्रियावृत्तिथी थएलो स्थुलदेह जाणवो. एमां अहमदेहोस्मि अहंता रही छे.

सुक्ष्मदेहनुं बंधारणः—

जळतत्वना छ भागमां बीजा चार भुतोना दरेकना एक एक प्रमाणे चार भाग मुकीने सतोगुणना पांच अंतः-करण अने पांच अवस्थाना दरेकना नव नव भागमां स्वकाशघणना पांच संभसकरण अने पांच विवस्थानो एक एक भाग मूकीने अने प्रधान सतोगुणना नव भागमां एक भाग स्वकाशघणनो मूकीने, ए कुल एकसोनेवीश तत्व विभागे बुद्धि अंतःकरण संयुक्त सात्वीक अधिष्टान सहवर्तमान कर्तानी क्रियावृत्तिथी थएलो सूक्ष्मदेह जाणवो, एमां अहंजीवोस्मी अहंता रही छे.

कारणदेहनुं बंधारणः—

अग्नितत्वना छ भागमां बीजा चार भुतोना दरेकना एक एक प्रमाणे चार भाग मूकीने, तमोगूणना दशकालना

नव नव भागमां अचंतघणनी दशभावनानो एक एक भाग मुकीने, अने प्रधान तमोगुणना नव भागमां अचंतघणनो एक भाग मूकीने ए एकसोनेवीश विभागे अहंकार अंतःकरणनो संयूक्त, रुद्र अधिष्टान सहवर्तमान कर्तानी क्रिया वृत्तिथी थएलो कारणदेह जाणवो. एमां अहंशिवोस्मी अहंता रही छे.

महाकारण देहनुं बंधारणः—

वायुतत्वना छ भागमां बीजा चार तत्वना चार भाग मुकीने, अव्याकृतना आनंद तत्वकारण अने प्रकृतितत्व कारणना नव नव भागमां महातत्वकारण अने धनंजे तत्व कारणनो एक एक भाग मुकीने, ए त्रीस तत्व विभागे चित अंतकरण संमूक्त, अव्याकृत अधिष्टान सहवर्तमान कर्तानी क्रियावृत्तिथी थएलो महाकारणदेह जाणवो, एमां अहंब्रह्मास्मी अहंता रही छे.

परमकारण देहनुं बंधारणः—

आकाशतत्वना छ भागमां बीजा चार भूतना चार चार भाग मुकीने, निरंजनना आठ भागनां अव्याकृतना बे भाग मुकीने ए वीशतत्व विभागे नचित अंतकरण संयूक्त, निरंजन अधिष्टान सहवर्तमान कर्तानी क्रियावृत्तिथी थएलो परमकारण देह जाणवो, एमां सर्व विसर्जनास्मी अहंता रही छे.

आकाशतत्वना छ भागमां बीजा चार तत्वना चार भाग मूकीने, अव्याकृतना आठ भाग बे भाग निरंजनना मूकीने ए वीश भागे नचित अंतःकरण संयुक्त. निरंजन अधिष्ठान सहवर्तमान कर्तानी क्रिया वृत्तिथी थएलो स्त्रीनो परमकारण देह जाणवो.

स्त्रीना अने पुरुषना परमकारण देहमां तत्व विभाग फेरफार छे ए सिवाय बीजा देहोमां तत्व फेरफारी नथी.

पांचे शरीरना तत्व विभाग न्यारा न्यारा छे छतां तेओ शा वडे युक्त थई रह्या छे अने पांचे शरीरनी पांच अहंता कोण राखे छे ते विषेः---

अविकाश महातत्व अने विकाश महातत्वना विभाग के जे पांचे शरीरने विषे पोष्या हता, तेओ पंच शरीरना जुथने जतमत राखी रह्या छे, अने त्रीजुं कुंभस्थ महातत्व के जेना विभाग पांचे शरीरनी संधीमां पोष्या हता, तेओ पांचे शरीरमां पांच अहमता मानी रह्या छे

कर्तानी संजम भोगवृत्तिना वर्गज्ञान चक्षसत्व अने अनंग चक्षसत्वना विभागो जंगम जाति मनुष्यमां पोष्या हता, तेओ पांचे शरीरमां रहीने पांचे शरीरने उमंगमां राखे छे, अने पांचे शरीरना उमंगनो काळचक्षसत्वना विभागो भंग करता रहे छे.

अवस्थाओनां स्थान.

(१) नेत्र स्थाने जाग्रत अवस्था भोगवे छे.

(२) कंठ स्थाने स्वप्ना अवस्था भोगवे छे.

(३) हृदय स्थाने सुसुप्ती अवस्थाने भोगवे छे.

(४) नाभीस्थाने तुर्यावस्था भोगवे छे.

(५) ब्रह्म रंध्रस्थाने उनमुनी अवस्था भोगवे छे.

ए पांच अवस्था पांच स्थाने पांच प्रकारे भोगवाय छे.

अवस्थाओ शा वडे पलटाय छ ते विषे:—

पंचतत्व वारा फरती प्राणायममां वर्तमान करे छे, तेथी अवस्था पलटाय छे पांचे तत्वमां महाद प्राणायमना आभासना पांच सुक्ष्म प्राणायम रह्या छे. तेओ पांचे सूक्ष्म प्राणायम महाद प्राणायममां वाराफरती वर्ते छे ते नीचे मुजब:—

पांच तत्वना पांच प्राणवायुने पांच सूक्ष्म प्राणायम जाणवा, अपान वायुने पृथ्वीतत्वनो प्राणायम जाणवो पान वायुने जळ तत्वनो प्राणायम जाणवो. उदान वायुने अग्नि तत्वनो प्राणायम जाणवो. वान वायुने पवन तत्वनो प्राणायम जाणवो अने समान वायु ते आकाश तत्वनो प्राणायम जाणवो. एमां ए प्राणायमो पांच तत्वना मुकता श्वासना प्राणायम जाणवा अने पांच तत्वना लेता श्वासना पांच प्राणायम नीचे मुजब:--

पांच तत्वना पांच लेता श्वासना प्राणायमने पांच उष्म वायु जाणवा. कूर्मवायुने पृथ्वी तत्वना लेता श्वासनो प्राणायम जाणवो.

क्रकल वायुने जळतत्वना लेता श्वासनो प्राणायम जाणवो.

देवदत्त वायुने अग्नि तत्वना, नागवायुने पवन तत्वना, अने धनंजय वायुने आकाश तत्वना लेता श्वासनो प्राणायम जाणवो.

ए प्राणायमो सूक्ष्म भागे रह्या छे.

पांच तत्वना पांच सूक्ष्म प्राणायम महद् प्राणायममां केवी रीते वर्ते छे, ते विषे:–मुकता महद् प्राणायममां पांच तत्वना पांच मूकता प्राणायम वर्ते छे. अने लेता महद् प्राणायममां पांच तत्वना पांच सूक्ष्म प्राणायम वर्ते छे. ए सुक्ष्म प्राणायमो पंच तत्वना विकार संयुक्त महद् प्राणायममां वर्ते छे. पांच तत्वना विकारी प्राणायमना आवरणने लीधे (तत्वना भेदे) अवस्था पलटाय छे.

क्या तत्वना आवरणथी कइ अवस्था पलटाय छे, ते विषे:–

महद् प्राणायममां पृथ्वी तत्वनो सुक्ष्म प्राणायम वर्ते त्यारे जाग्रत अवस्था, जळतत्वनो सूक्ष्म प्राणायम वर्ते त्यारे स्वप्ना अवस्था, अग्नि तत्वनो सुक्ष्म प्राणायम वर्ते

त्यारे सुसुप्ती अवस्था वायु तत्वनो सूक्ष्म प्राणायम वर्ते; त्यारे तुर्यावस्था अने आकाशतत्वनो सूक्ष्म प्राणायम वर्ते त्यारे उनमूनी अवस्था स्फूरे छे, ए पांचे अवस्था तत्वना प्राणायमना आवरणथी वाराफरती पलटाय छे.

तत्वना प्राणायम पांच तत्वमां केवी रीते रह्या छे, ते विषे:-

जेवी रीते वाजींत्रमां नाद, काष्ट तथा पाषाणमां अग्नि अने लुहारनी धमणमां पवन रह्यो छे तेवीज रीते पांच भुतमां पांच सूक्ष्म प्राणायम सामान्य भागे रह्या छे. सत्व कारण जे अग्नि वायु अने शब्द सामान्य भागे जडवत रह्या छे, पण ज्यारे तेमने विशेष चैतन्य मळे छे त्यारे तेओ (नाद काष्टनो अग्नि अने धमणनो पवन) जाग्रत थाय छे पण पोते तेओ पोतानी मेळे तेमनामां सामान्य सत्व रहेलुं होवाथी जाग्रत (चैतन) थइ शकता नथी. विशेष चैतन्य अग्निने धमणना पवनने अने वाजींत्रना नादने जाग्रत करी महद् सत्वमां मेळवी दे छे. तेवीज रीते पंच सूक्ष्म प्राणायमने कोइ विशेष शक्ति जाग्रत करीने महद्-प्राणायममां मेळवी छे, महद् सत्वमां (महदाकाश, महद् अग्नि अने महद् पवन) सामान्य सत्व (काष्ट पाषाणनो अग्नि धमणनो पवन अने वाजींत्रनो शब्द) प्रगट थइने तरतज मळी जाय छे पण ते विशेष चैतन्य पुरुषथी प्रगट थाय छे, अने महद् सत्वमां मळे छे.

विशेष चैतन्य पुरुषनी माफक नियंता कैवलनी संयम भोगवृत्तिना त्रणचक्षसत्व पंच तत्वना सामान्य प्राणायमने जाग्रत करीने महद प्राणायममां मेळवी दे छे. त्रणे चक्षसत्व केवी रीते जाग्रत करे छे, तथा महद प्राणायममां मेळवी दे छे, अने मंद करी नाखे छे ते विषे:-

(१) ज्यारे वर्गज्ञान चक्षसत्व पृथ्वी तत्वना प्राणायमने जाग्रत करे छे, त्यारे अनंगचक्षसत्व ते पृथ्वीतत्वना सूक्ष्म प्राणायमने महद् प्राणायममां मेळवी दे छे. एथी जाग्रत अवस्था स्फुरे छे. कालचक्षसत्व पृथ्वी तत्वना सूक्ष्म प्राणायमने महद प्राणायममांथी जुदो पाडी मंद करी नाखे छे, त्यारे जाग्रत अवस्था लीन पामे छे.

(२) ज्यारे वर्गज्ञान चक्षसत्व जळतत्वना सूक्ष्म प्राणायमने जाग्रत करे छे, त्यारे अनंग चक्षसत्व ते जळ तत्वना प्राणायमने महद् प्राणायममां मेळवी दे छे, एथी स्वप्ना अवस्था स्फुरे छे, काळचक्षसत्व जळतत्वना सूक्ष्म प्राणायमने महद् प्राणायमथी जुदो पाडी मंद करी नाखे छे, त्यारे स्वप्नावस्था लीन पामे छे, एज प्रमाणे.

(३) ज्यारे वर्गज्ञान चक्षसत्व अग्नि तत्वना प्राणायमने जाग्रत करे छे, त्यारेज अनंग चक्षसत्व अग्नि तत्वना प्राणायमने महद् प्राणायाममां मेळवी दे छे. एथी सुसुप्ती अवस्था स्फुरे छे, त्यार पछी कालचक्षसत्व ते अग्नितत्वना

प्राणायमने महद् प्राणायममांथी जुदो करी मंद पाडी नांखे छे, त्यारे सुसुप्ती अवस्था लीन पामी जाय छे.

(४) ज्यारे वर्गज्ञान चक्षसत्व वायुतत्वना प्राणायमने जाग्रत करे छे, त्यारे अनंग चक्षसत्व ते प्राणायमने महद् प्राणायममां मेळवी दे छे, एथी तुर्यावस्था स्फुरण थाय छे, अने काळचक्षसत्व ज्यारे ते प्राणायमने महद् प्राणायममांथी जुदो पाडी मंद करी नांखे छे, त्यारे तुर्यावस्था लीन पामे छे.

(५) ज्यारे वर्गज्ञान चक्षसत्व आकाश तत्वना सूक्ष्म प्राणायमने जाग्रत करे छे, त्यारे अनंग चक्षसत्व ते प्राणा-यमने महाद् प्राणायममां मेळवी दे छे, एथी उनमुनी अव स्था स्फुरे छे, अने काळचक्षसत्व ज्यारे ते प्राणायामने महाद् प्राणायममांथी जुदो पाडी मंद करी नाखे छे, त्यारे उनमुनी अवस्था लीन पामे छे.

उपर मुजबना दरेक सूक्ष्म प्राणायममां आठसोने चोसेंट (८६४) प्राणायम जाप सुधी वर्ते छे.

ए प्रकारे पंच तत्वना सूक्ष्म प्राणायमने महद् प्राणा-यममां त्रण चक्षसत्व रमण करावे छे तेथी पंच अवस्था पलटाय छे.

जे समये जे अवस्था स्फुरे छे, ते समये ते अव-स्थानी स्मृति होय छे. अने अन्य अवस्थानी क्रिया विस-र्जन थाय छे. तेनुं कारण पण त्रण चक्षसत्वज छे.

जाग्रत अवस्थामां सर्व अवस्थानुं ज्ञान स्फूरे छे, बावन अक्षर वगेरे शब्दोनुं उच्चारण थाय छे. बीजी अवस्थाओमां शब्दो उच्चार नथी थता, तेमज अन्य अवस्थानुं ज्ञान होतुं नथी. एम थवानुं कारण शुं छे, ते विषे:--

जाग्रत अवस्था नेत्र द्वारे स्फूरे छे, ते नेत्र द्वारनी नाडीओना छेडा ब्रह्मरंध्र साथे एकता राखे छे ब्रह्मरंध्रमां आकाश तत्वनुं विशेषपणुं रहयुं छे, अने विशेष आकाश तत्वमां परमकारण देह रहयो छे, तथा ते परमकारण देहमां उनमुनी अवस्था रही छे. उनमुनी अवस्थामां नचित अंत:करण रहयुं छे. अने ते नचित अंत:करणमां कैवल महद् सजाण कर्तानी अंशवृत्तिनो अंश के जे सर्व देह स्फूरण साजनो साक्षी अने सर्वातीत, सर्वनुं जीवन सर्वनो प्रेरक प्रकाशीक अने सर्वनो चिंतक तेमज सर्वथी अचंत, सर्वनो अव्यक्त सत्व अने सर्वनो अव्यक्त महात्व एवो अचंत अयव्क्त कैवल सजाण स्वरूप महाद कर्तानो जे अंश ते देहातीत देहने विषे रहयो छे, ते आपणुं शूद्ध स्वरूप जे नीज जाणपणुं जाणवुं ते जाणपणुं जे सर्व पदार्थ संयुक्तनी जाणनुं जीवन ते सदायकाळ अव्यक्त मूर्तिमान अने लक्षालक्ष रहीत अखंड एक रस जे रहयो छे ते.

हवे जे जाणपणुं अवस्था पलटावाथी अवस्थानी साथे लीन पामे छे ते जाणतो पदार्थ संयुक्तनी होय छे तेनुं दृष्टांत नीचे मुजब:--

जेम सूर्यनुं प्रतिबिंब जळमां पडे छे अने जळ उपर कांइ आवरण आवेथी जळ तेमज प्रतिबिंब लीन पामे छे, पण निज सुर्य तो हतो तेमने तेमज होय छे, तेम अहीं प्राणायम जळमां निज जाण स्वरुपनुं प्रतिबिंब रह्युं छे, अने तेनी उपर पांच तत्वना विकार संयूक्त प्राणायम रुप आवरण आवेथी ते प्राणायम संयुक्त जाण अवस्थाने विषे लीन पामे छे. ते प्राणायम सर्व पदार्थ संयुक्त रह्यो छे, तेथी पदार्थ संयुक्त जाण अवस्था लीन पामे छे. त्रण चक्ष-सत्व पांचतत्वना प्राणायमना आवरणने आणे छे, तेमज ते आवरणने दुर करे छे. ए प्रमाणे पदार्थ संयूक्त जाण अवस्था लीन पामे छे पण निज जाण स्वरुप तो सनातन सदाकाळ जेम छे तेमज रहे छे. (के जे सर्व अवस्थामां एकरस, अने पिंड ब्रह्मांडमां अनुसुत, सरल, सभेद, सर्वो-तित अने साक्षीवंत छे.) ते निज जाण स्वरुप स्वयं आपनुं आप (निज सजाण कैवलकर्तानो अंश) प्रगट प्रसिद्ध, पिंडमां हालहजुर रह्यो छे. ते शुद्ध स्वरुप निज जाण, कैवल सजाणना अंशनो विशेष आभास उनमूनी अवस्थाना नचित अंतःकरणमां रह्यो छे ते नचित अंतःकरणनो जाग्रत अवस्थामां नेत्रनी नाडीओना छेडाने विषे थइने एक रस संबंध थाय छे. उनमुनी अवस्था अने नचित्त अंतःकरणनी एकताथी जाग्रत अवस्था विशेष जाग्रत थाय छे.

ए विशेष जाग्रत अवस्थामां त्रण चक्षसत्व पण आवीने जाग्रत थाय छे त्यारपछी ए त्रण चक्षसत्व जाग्रत अवस्थाना मन अंतःकरणने जाग्रत करे छे, एथी ते मन चार अवस्थाओनु ज्ञान जाणे छे. वळी एथी बावन अक्षर संयुक्त शब्द उच्चारण थाय छे. ए प्रमाणे निज जाण स्वरुपना विशेष आभासथी मन वधारे जाग्रत होय छे.

शब्द उच्चारनो भेद.

ज्यारे निज जाण स्वरुप कैवल कर्ताना अंशने शब्द उच्चार करवानी ईच्छा थाय छे त्यारे ते त्रण चक्षसत्वने हुकम करे छे, ते त्रण चक्षसत्व प्रकाश ब्रह्मवृत्तिना त्रण महातत्वने प्रेरे छे. एथी ते त्रण महातत्वना प्राणायमना आकृति संयोगथी शब्द उच्चार थाय छे.

अन्य अवस्थामां निज जाण स्वरुपनो सामान्य स्पर्शास्पर्श आभास रह्यो छे तेथी ते अवस्थाओमां अंधतम निद्रा वर्ते छे, अंधतम निद्राने लीधे ते अवस्थाओमां त्रणचक्षसत्व पण अंधपणे रहे छे, तेथी ते अवस्थाओमां बीजी अवस्थानुं ज्ञान होतु नथी. तेम शब्द उच्चार थतो नथी जाग्रतमां निज जाण स्वरुपनो विशेष आभास होवाथी पांचे अवस्था जाग्रतना उदरमां वर्ते छे, ते तेमना चिन्हथी जणाय छे.

ए प्रमाणे पंच अवस्था अने पंच अंतःकरण उलट

सुलट थाय छे तेनु कारण संजम भोगवृत्तिना त्रण चक्ष-सत्वोनुं रमण छे.

ए प्रमाणे त्रण चक्षसत्वनां जंगमने विषे अवस्था भेद रमणनां सहेलानी मकाननां चिन्ह कह्यां.

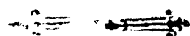
दोहा

तीन चक्ष अनुकरमही, कीये पसरन गति पंच;
जाग्रत स्वप्न ससोपति, उनमुनी तुरी सकंच. १
अब तीनु पुनी स्थानकी, रुचीत रमण अतिगार;
प्राग गवन गतिगम कहुं, नारण्यदास सूणसार. २



तीन चक्षसत्वके महद मकान रमणगति नाम.

कंद १४मो.



त्रण चक्षसत्व कये कये स्थाने रमण करे छे. ते विषे:—

दरेक चक्षसत्व त्रण त्रण स्थाने रमण करे छे. ए त्रणे स्थान पैकी बे स्थानमां ते चक्षसत्व सहेल करे छे अने एक स्थानमां ते कायम रहे छे.

अनंगचक्षसत्वनां नेत्रद्वार अने उपस्थ इंद्रि ए बंने मकान सहेल करवानां छे.

वर्गज्ञान चक्षसत्व कर्णद्वार अने हृदयस्थान ए बंने मकानमां सहेल करे छे. (चक्षसत्व जे स्थानमां सहेल करे छे तेने सहेलानी मकान कहेवामां आवे छे.)

कालचक्षसत्वनां रसना अने मुख सहेलानी मकान छे.

ए बे बे स्थानमां एक एक चक्षसत्व रहीने बीजी सर्व इंद्रियोमां सहेल करे छे, पण केटलांक तो बब्बे इंद्रिओमांज वर्ते छे.

त्रणे चक्षसत्व तेमना मूळ मकानमां श्रेष्ट भागे वर्ते छे, वळी ते त्रण श्रेष्ठ चक्षसत्व भागमां अन्य चक्षसत्वना सूक्ष्म भाग मळी रह्या छे.

वर्गज्ञान चक्षसत्वमां एक भाग अनंगचक्षसत्वनो अने एक भाग कालचक्षसत्वनो मिश्र थइ रह्या छे.

अनंगचक्षसत्वमां एक भाग वर्गज्ञान चक्षसत्वनो अने एक भाग कालचक्षसत्वनो मिश्र थइ रह्या छे.

कालचक्षसत्वमां वर्गज्ञान चक्षसत्वनो एक भाग अने अनंगचक्षसत्वनो एक भाग मिश्र थइ रह्या छे.

मिश्र थइ रहेला भागोनु वर्तमान नीचे मुजब

अनंगचक्षसत्व नेत्रद्वारे रहयुं छे ते स्त्रीनी आद्य लइने सर्व रुपने निहाळे छे. (एने मूळ अनंग चक्षसत्व जाणवुं.)

(१) अने ते रुप नीहाळतां सार असारनी परीक्षा करे छे ते अनंगचक्षसत्वमां रहेलो वर्गज्ञान चक्षसत्वनो विभाग जाणवो. ने सार असार द्रष्टिनो अभाव उपजावे छे तेने अनंग चक्षसत्वनो विभाग जाणवो.

(२) वर्गज्ञान चक्षसत्व हृदयमां रहे छे ते सर्व क्रिय व्यवहारना भावोनी विभक्ति न्यारी न्यारी देखाडे छे तेमां सार भाव ग्रहण करीने प्रिय माने छे, तेने वर्गज्ञा चक्षसत्वमां रहेलो अनंग चक्षसत्वनो विभाग जाणवो. क्रिया भावमां असार भावनो अभाव उपजावे छे, ते वर्गज्ञान चक्षसत्वमां रहेलो कालचक्षसत्वनो विभाग जाणवे

(३) वदनद्वारे कालचक्षसत्व रहयुं छे ते, मूळ प्राण यमना जीवनने छेदीने शब्द उच्चार करी नांखे छे शब्दमां अक्षरनो छंद बंधाय छे, तेने कालचक्षसत्व रहेलो वर्गज्ञान चक्षसत्वनो विभाग जाणवो. अने ते छंद प्रियपणुं रहयु छे तेने कालचक्षसत्वमां रहेलो अनंगचक्ष सत्वनो विभाग जाणवो.

ए प्रमाणे त्रणचक्षसत्व तेमना एक एक सहेला स्थानमां वर्ते छे ते कहयुं, एज प्रमाणेनुं तेमनुं वर्तन बीज सहेलानी स्थानमां पण जाणवुं.

त्रणे चक्षसत्वना मूळ (स्थार्या) मकानो विषे

कर्तानी प्रकाश ब्रह्मवृत्तिनां त्रण महातत्वने विषे त्र

चक्षसत्वनां मूळ मकानो रह्यां छे क्या चक्षसत्वनुं क्या महातत्वमां स्थान छे ते नीचे मुजब.

(१) अविकाश महातत्वने लेतो प्राणायम जाणवुं, एमां वर्गज्ञान चक्षसत्व रह्युं छे.

(२) मूकता प्राणायमने विकाश महातत्व जाणवुं. एमां कालचक्षसत्व रह्युं छे.

(३) बंने प्राणायमनी संधीमां श्वास स्थंभन पामे छे तेने कुंभस्थ महातत्व जाणवुं. एमां वर्गज्ञान चक्षसत्व रह्युं छे.

क्रिया.

(१) वर्गज्ञान चक्षसत्व लेता प्राणायम श्वासने भीतर (अंदर) पुगीने पुष्ट करे छे, एथी प्राणायम अतिशय बहार वही जतो नथी.

(२) अनंगचक्षसत्व कुंभकमां पोरक प्राणायम (लेता श्वास)ने अंदर खेंची राखे छे, एथी प्राणायमनी जवराई रहे छे तेमज शरीरमां जमाव पण करे छे.

(३) कालचक्षसत्व मूकता प्राणायम श्वासने बहार रेचक करी नांखे छे. कालचक्षसत्व प्राणायमनो काळ आणवा माटे बहार रेचक करी नांखे छे.

जेम जेम अनंग चक्षसत्व निर्बळ (ओछुं) थतुं जाय छे तेम तेम कालचक्षसत्व प्राणायमने विशेषने विशेष

बहार रेचक करी नांखे छे. अने एम थवाथी शरीरना वेगनी नागित थाय छे. ए कारणथी योगीजन अनंगचक्ष सत्व (कामदेव)ने जीतीने जतमत राखे छे. ते कामदेवने जतमत राखवाथी अनंग चक्षसत्व अतिशय बळवान थाय छे; तथा अनंग चक्षसत्व तेना सामर्थ्य वडे प्राणायमने विशेष कुंभक करी राखे छे. अने ए कुंभकना विशेष रहेवाथी सर्व शरीर ऐश्वर्यपणाने पामे छे, तथा योगीनुं वचन फळीभुत थाय छे. तेमज शरीर लांबा वखत सुधी चिरणजीवी रहे छे. ए प्रमाणे योगी अनंग जीत्याथी काळने जीते छे. अने काळ जीत्याथी तेने सर्व सिद्धि प्राप्त थाय छे. ज्यारे अनंगचक्षसत्व प्राणायमने विशेष कुंभक करी राखे छे त्यारे वर्गज्ञान चक्षसत्व पण विशेष बळवान थाय छे. वर्गज्ञान चक्षसत्व सर्व देहनी इंद्रियो, अंतःकरण वगेरेना व्यवहारिक विषय (जे इंद्रिना जे विषय होय ते) ने तेमना वर्ग जणावे छे अने ते पोते जाणे छे. ते माटे वर्गज्ञान चक्षसत्वना सामर्थ्य वडे योगी लोको सर्व पदार्थ भावनानी रतिने अगम निगम जाणे छे. ए प्रमाणे काळचक्षसत्व शरीरना जीवन (प्राणायम)ने बहार रेचक करी नांखे छे. अनंग चक्षसत्व जे कामदेव ते प्राणायमने अने सर्व शरीरने जतमत घणा काळ सुधी अनंग भर्युं राखे छे.

ए प्रमाणे त्रणचक्षसत्वनी तेमना मूळ मकानमां थती क्रिया कही. ए क्रिया स्थावर, जंगम, कीट, पतंग, पशु,

पक्षी, देव नर, नाग, मनुष्य अने यक्ष वगेरेमां तेमां पोषेला विभागो प्रमाणे ओछी के वधारे थाय छे. ए प्रमाणे त्रणे चक्षसत्व सर्वमां सदायकाळ वर्त्यां जाय छे.

ए प्रमाणे घणां लांबा वखत सुधी त्रणे चक्षसत्वने वर्तमान करतां प्रथम अनंगचक्षसत्व हारी जाय छे, तेथी लेता प्राणायम श्वासना कुंभकमांथी खेंचाणपणुं छूटी जाय छे खेंचाणपणुं छूटी जवाथी श्वास शीतळ थइ जाय छे अने अंदर जेटलो पोरक थएलो श्वास हतो तेटलो बहार रेचक थाय छे. तथा बीजो वधारा तरीके पण श्वास शरीरमां एकठो थतो नथी. ए कारणथी शरीर अतिशय शीतळ थइ जाय छे ज्यारे शरीर शीतळ थई जाय त्यारे तेनुं हलण चलण सुक्ष्म थाय, अने एम करतां थोडा दिवसमां वर्गज्ञान चक्षसत्व ओछुं थवा मांडे. ज्यारे वर्गज्ञान चक्षसत्वनो नाश थाय त्यारे छेवटे एकलुं कालचक्षसत्व रहे, एथी प्राणायम रेचकज थतो रहे पण पिंडमां पोरक थाय नहि.

वर्गज्ञान चक्षसत्व नाश पामे छे तेथी प्राणायमने पोरक करनार कोइ होतुं नथी तेमज अनंग चक्षसत्व नाश पाम्युं छे तेथी प्राणायमने अंदर खेंची राखनार पण कोइ रह्युं नथी. ए बे चक्षसत्वनो नाश थवाथी कालचक्षसत्व एकलुं प्राणायमने रेचक करी नांखे छे ज्यारे वर्गज्ञान अने अनंग चक्षसत्व हतां त्यारे कालचक्षसत्व बळ पहोंचतु नहतुं

अने तेथी देही सजीवन (अमर) रहेती हती, पण हवे तो कालचक्षसत्व एकलुं रह्यु छे ते प्राणायमनो नाश करतुं रहे छे कारणके एमां बंनेना विभागो करतां एक विभाग वधारे रह्यो छे ते प्राणायमने उलेकीने नांख नांख करे छे. कालचक्षसत्वनो ए एक वधारानो भाग ज्यारे नास्ति पामे छे त्यारे काल चक्षसत्वनो पण नाश थइ जाय छे. तेमज प्राणायम बहार रेचक थतो पण रही जाय छे. ज्यारे रेचक प्राणायम बंध थई जाय अने पोरक तो प्रथमथी नाश पाम्यो छे तेथी ए बंने प्राणायम शांत थइ जाय छे. कालचक्षसत्व प्राणायमनो नाश करीने पोते पण नाश पामे छे त्यारे देह मृत्यु पामे छे कालचक्षसत्व प्राणायमनो नाश करीने पोते नाश पाम्युं छे. एम जाणवा माटे नीचे हकीकत आपवामां आवे छे. ज्यारे थोडोक प्राणायम शरीरमां रही गयो होय अने काल चक्षसत्व नाश पाम्यू होय त्यारे मृत्युं समे स्थावर जंगम अने मनुष्य वगेरेना ते मृत्यु पामेला देहना मुख उपर तेज उत्पन्न थाय छे. मृत्यू समे जेना मुख उपर श्यामता जामे तेना सर्व शरीरनो सर्व प्राणायमनो नाश करीने काल चक्षसत्व नाश पाम्युं छे एम जाणवुं. ज्यारे देव पतन (मृत्यू) पामे छे त्यारे ते देव तनु तेज पुंज थइने विलसी जाय छे, ते तेजना पुंजने विषे धुमर भर्या अग्निके जवाळाना सरखी श्यामता देखाय तो देवतनुना सर्व प्राणायमनो नाश करीने काळ

चक्षसत्व नाश पाम्यूं जाणवुं जो ते तेजना पुंजने विषे अतिशय प्रकाश देखाय अने श्यामता न होय तो ते देव तनुमां प्राणायम थोडोक रही गएलो अने काल चक्षासत्व नाश पामेलु जाणवुं.

ए प्रमाणे सर्व देव मनुष्यमां तनुनी उत्तपत्ति अने प्रलय थाय छे एतो सर्व पदार्थ भावनानो उत्तपत्ति प्रलय भेद कह्यो पण कर्तानी कर्ता अंशवृत्तिनो अंश जे निज जाण स्वरुप ते शरीरनो नाश थया पछी क्यां जाय छे अने छते पिंड शरीरमां ते क्यां बिराजमान हतो, हवे ते कहीए छीए.

कर्तानी कर्ता अंशवृत्तिनो अंश जे निजजाण स्वरुप ते, छते पिंडे पिंड ब्रह्मांडनी संधीमां रह्यो हतो. जो ते कदाच पिंडमां होय तो पिंड मृत्यू पामे नहि अने जो ब्रह्मांडमांज होय तो पिंड सचेतन थइने चाले नहि. माटे कर्तानो निजजाण स्वरुप अंश पिंड ब्रह्मांडनी संधीमां रह्यो हतो, अने एथी पिंड सचेतन थतुं हतुं.

पिंड ब्रह्मान्डनी संधी क्यां छे ते विषे:—

पींड ब्रह्मांडनी संधी जाग्रत अवस्था अने उनमुनी अवस्थानी मध्ये रही छे. जाग्रत अवस्थानी संधीनी ओळखाण:–उनमुनी अवस्थाना पश्चिम (छेल्ले) भागे ब्रह्मांडनी एकता रही छे अने जाग्रत अवस्थाना पश्चिम (छेल्ले) भागे

पींडनी एकता रही छे, तेथी ए बंने अवस्थानी मधे पींड ब्रह्मांडनी संधी रही छे. ए संधीमां कर्तानो निज जाण स्वरूप अंश बिराजमान हतो, तेना आभासे ए आभास वडे देव मनुष्य वगेरे सर्वनां तनु लीला (विलास) करतां हतां. ते निजजाण स्वरुपनो आभास प्रथम क्या तत्वमां मळीने सर्व शरीरमां प्रवेश करतो हतो ते नीचे मुजबः-

बे प्रकारना आभास· पडे सत्र तनु विराजमान हतां.

(१) विशेष आभास अने (२) सामान्य आभास पींडने क्या स्थानमां रही प्रकाशतो हतो अने विशेष आभास क्या स्थानमां रहीने पींडने चैतन करतो हतो ते विषेः—

(१) निज कर्ताना अंशनो सामान्य आभास प्रथम कर्तानी प्रकाश ब्रह्मवृत्तिना त्रण महातत्वना प्राणायाममां रहेतो हतो. त्यारपछी ते सामान्य आभास (प्रतिबिंब) प्राणायमने चैतन करीने कर्तानी संजम भोगवृत्तिना त्रण चक्षसत्वमां जतो हतो. ते त्रण चक्षसत्वनो सामान्य आभास त्रण चक्षसत्वने चैतन करीने निरंजन अने अव्याकृतनो विभागोमां जतो हतो. ते निरंजन अने अव्याकृतनो आभास निरंजन अने अव्याकृतने चैतन करीने चार तत्वकारण (धनंजे तत्वकारण, आनंद तत्वकारण, प्रकृति तत्वकारण, अने महातत्वकारण) मां जतो हतो. ते चार तत्वकारणना

आभास चार तत्वकारणने चैतन करीने त्रण गुण अने त्रण घणमां जतो हतो. एमां सत्वगुणनो आभास पांच अंतःकरण अने पांच अवस्थामां जतो हतो. रजोगुणनो आभास दश आकांक्षाने विषे जतो हतो. तमोगुणनो आभास दशकाळना विभागमां जतो हतो, अहंकारघणनो आभास पांच भुत अने पांच मात्रामां जतो हतो, रवकाशघणनो आभास पांच संभसकरणने अने पांच विवस्थामां जतो हतो अचेतघणनो आभास दश भावनामां जतो हतो.

ए प्रकारे प्राणायमना सामान्य आभासे करीने अन्योअन्य आभास पोषाइने सर्व शरीरनो साज सामान्य चैतनवत रहेतो हतो.

पण ते प्राणायमनो सामान्य आभास प्राणायममां सदाकाळ एक रस रहेतो हतो. प्राणायममां स्थिरता नथी तेथी आभास पण तेमां अस्थिर रहे छे. जेम अस्थिर जळमां सूर्यनो आभास पडे छे ते झळक मात्रज देखाय छे, पण तेमां सूर्यनो मूर्तिमान देखातो नथी, तेम निजजाण स्वरूप अंशनो आभास अस्थिर प्राणायममां पडयाथी तेनुं विशेष मूर्तिमान स्वरूप बंधातुं नथी तेथी प्राणायममां आभास एकरस रहे छे छतां ते सामान्य आभास कहेवाय.

(२) निजजाण स्वरुप अंशनो विशेष आभास उनमुनी अवस्थामां रह्यो हतो. उनमुनी अवस्था अने नचित अंतः-

करण ज्यां सुधी स्फूरे छे त्यां सुधी ते अचळ (स्थिर) रहे छे तेथी निज जाण स्वरुप अंशनो आभास उनमुनीमां विशेष भासमान रहेतो हतो. पण उनमूनी अवस्था उपाधी वगरनी होवाथी ते आभास कोइने स्फुरावतो न हतो. तेथी ते आभास त्यां विशेष शुद्ध स्वरुपे रहेतो हतो. उनमुनी अवस्थानो त विशेष शुद्ध आभास ज्यारे जाग्रत अवस्था स्फूरती हती त्यारे जाग्रत अवस्थामां बिराजमान थतो हतो, कारणके जाग्रत अवस्थाने विषे उनमुनी अवस्थानो एकता (संबंध) थाय छे. ए कारणथी निज जाण स्वरुपनो विशेष आभास जाग्रत अवस्थामां थतो हतो. ते जाग्रत अवस्थाने विषे अनंत उपाधि स्फूरती हती ते देखीने निजजाण स्वरुपना आभासनो आभास अनंत सामर्थ्य धारण करीने गादीपति थइने त्यां विराजतो हतो.

निजजाण स्वरुपना आभासनो आभास जाग्रतमां गादीपति थतो हतो ते विषे:-

राजा राज करे छे ते जाग्रतमां, न्यायवटी न्याय चूकवे छे ते जाग्रतमां, कोइ हीरा माणेक अने रत्ननी परीक्षा करे छे ते जाग्रतमां, अनेक प्रकारनां प्राणीओ उद्यम करे छे ते जाग्रतमां, अने तेओ खानपानादि अनेक प्रकारना विषय विहार करे छे ते पण जाग्रतमां, स्थावर जंगम चरअचरनी आद्य लइने चौद लोकनी ओळख करे छे ते पण जाग्रतमां, चारवेद चौद विद्या छ शास्त्र, नव

व्याकरण अने अढार पुराण वंचाय छे ते पण जाग्रतमां मंत्र, तंत्र, विद्या अविद्या वगेरे भणाय छे ते पण जाग्रतमां, त्रण प्रकारनी समाधिनी आद्य लइने अष्टांगयोग अने सिद्धि सधाय छे ते पण जाग्रतमांज, नवधा भक्तिनी आद्य लइने ज्ञान विज्ञान अने पांच प्रकारनो वैराग करे छे ते जाग्रतमां, कोइ पुरुष नरपति दिग्वीजय करीने पृथ्वी जीते छे ते जाग्रतमां, कोइ ज्ञाता पूरुष जड चैतननी आद्य लइने सार असारनो विवेक करे छे ते जाग्रतमां, विष्णुए चोवीश अवतार धारण करीने धर्म स्थापन कर्या ते जाग्रतमां, ए प्रकारे अनंत ब्रह्मांडने विषे अनंत लीला विपुधरीने अद्वैताद्वैत रमण करे छे ते जाग्रतमां, अणीमा, महीमा, गीरीमा, लघूमा, इसत्वा, वसीत्वा, प्राप्ति प्रकासीकनी आद्य लइने तेवीस प्रकारनी सिद्धिने साधे छे ते पण जाग्रतमां, सम, दम, उपरति तितिक्षणा, श्रद्धा अने समाधान ए छ संपत्ति वगेरे सर्व सिद्धांतना सत्वने ग्रहण करे छे ते जाग्रतमां, सात भोमिकानुं स्वरुपाकारपणुं पण जाग्रतमां कहेवाय छे.

सप्त भोमिकानो लक्ष.

(१) शुभइच्छा. (२) सुविचारण, (३) तनुमानसा. (४) सत्वापति, (५) असम शक्तिनामीका. (६) पदार्था भावनी.

अने (७) तटस्थ तुर्या ब्रह्मसंधी ए सात भोमिका (भूमि) छे.

(१) शुभइच्छा एटले कोइ मुमुक्ष मोक्ष इच्छाने लीधे गुरुने शरणे जाय अने श्रवण, मनन करे, ते पण जाग्रतमां थाय छे,

(२) सुविचारणा एटले कोइ मूसूक्षू निदिध्यास अने निरुपण वगेरे करे तथा सुक्ष्म वस्तुनुं ग्रहण करे अने स्थुलनो अभाव राखे, ए पण जाग्रतमां थाय छे.

(३) तनुसानसा एटले नित्या नित्यनो विवेक करवो ए पण जाग्रतमां थाय छे.

ए त्रण भोमिका सुधी जगत सत्य भासे छे.

(४) सत्वापति भोमिका जे आत्मप्रति दृढ अने जक्त स्वप्न तुल्य भासे ए पण जाग्रतमां. ए भोमिकाना माणसने ब्रह्मविद् कहेवो.

(५) असम शक्ति नामिका ते क्षण समाधिवत अने क्षणस्वकाश दृष्टिए रहे पण स्वकाश दृष्टिमां कोइ पण रीते आशक्त न होय, एने ब्रह्मवितवर कहेवो ए भोमिकाना चिन्ह पण जाग्रतमां जणाय छे.

(६) पदार्था भावनी कहेतां जे सदा समाधिवत रहे अने कोइ उत्तम मुमुक्षु मळे तो सहेज स्वभावे लक्षार्थ बोले.

पण तेमने आपोआप बोलवानी इच्छा थती नथी. माटे तेने ब्रह्मवितवरिया कहेवो. ए भोमिकानो अनुभव पण जाग्रतमां जणाय छे.

(७) तटस्थ तुर्या ब्रह्म संधी ते सदा उनमुन खलविंद अयम ईतिब्रह्म एक रस रहे. तेमने आपोआप बोलवानी इच्छा थती नथी. तेओ कोइ मुमुक्षु प्रत्ये पण बोले नहि. ते पण जाग्रतना उजाग्रतमां रहीने निवृत्ति पामे छे.

साते भोमिका क्या क्या शरीर अने क्या तत्वमां, कइ अवस्थामां रही छे तथा तेमने कयुं अंतःकरण धारण करी रहे छे तेमज तेमनो अधिष्टा कोण छे ते विषेः—

(१) शुभइच्छा भोमिकाने स्थुल शरीर, पृथ्वीतत्व, जाग्रत अवस्था अने विधि अधिष्टान सहवर्तमान मन अंतःकरण धारण करी रहे छे. कारण के शुभ इच्छा मनथीज उपजे छे अने तेनां शुभ कर्म पण स्थुल शरीर वडे थाय छे.

(२) सुविचारणा भोमिकाने सुक्ष्म शरीर, जळतत्व स्वप्न अवस्था अने विष्णु अधिष्टान सहवर्तमान बृद्धि अंतःकरण धारण करी रहे छे. कारण के बृद्धिवंतने बुद्धिथी सुविचार उपजे छे. तेमज ते सुविचारनां सूक्ष्म शरीरे होय छे.

(३) तनुमानसा भोमिकाने कारण शरीर, अग्नितत्व, सुसुप्ति अवस्था अने रुद्र अधिष्टान सहवर्तमान अहंकार

अंतःकरण धारण करी रहे छे. कारण के तनुनी मानीनता अहंकारघणथी उपजे छे वळी कारण शरीर स्थुल शरीरने तोळी रह्युं छे.

(४) सत्वापति भोमिकाने महाकारण देह, वायुतत्व तुर्या अवस्था अने अव्याकृत अधिष्ठान सहवर्तमान चित्त अंतःकरण धारण करी रह्युं छे. कारण के सर्वशास्त्रना सिद्धांतना सत्वनु चित्त वडे चिंत्वन थाय छे अने स्थुल सूक्ष्म अने कारण शरीरनुं पतिपणुं पण महाकारण शरीरमां रह्युं छे.

(५) असम शक्तिनामीका भोमिकाने परमकारण शरीर आकाश तत्व, उनमुनी अवस्था अने निरंजन अधिष्ठान सहवर्तमान नचित्त अंतःकरण धारण करी रह्युं छे. कारण के नचित्त अंतःकरणमां नचितता रही छे, अने ते नचित्त अंतःकरणने लीधे (असम शक्ति नामीका कहेतां जे) सम शक्ति रही छे. वळी परमकारण शरीरमां सामान्यपणुं पण रह्युं छे.

(६) पदार्थ भावनी भोमिकाने शुद्ध अहंग शरीर, ओहंगकार प्रणवतत्व, अव्यक्त महद् मानुभाव अवस्था अने ब्रह्म अधिष्ठान सहवर्तमान चिदाभास अंतःकरण धारण करी रहे छे. चिदाभास अंतःकरण एटले चिदनो आभास चिदना आभासनो अंत ते चिदज जाणवुं अने ते चिद अंतनुं किरण तेज चिदाभास के जे ॐकार प्रणवमां

भासमान थाय छे. पदार्थ भावनी भोमिका कहेतां अंत पद अर्थनी भावना के जे शूद्ध अहंग शरीरमां रही छे.

(७) तटस्थ तुर्या ब्रह्म संधी भोमिकाने स्वयंमेव हंश शरीर, सोहंग (सोहम्) प्रणवतत्व, सहेज सुन्य अवस्था अने कैवल अधिष्ठान सह वर्तमान चिद अंतःकरण धारण करी रहे छे. चिद अंतःकरण ते जे चिदनु अंत ते कैवल पद ते कैवलना किरणना चिद भासने व्यापक ब्रह्म जाणवो. व्यापक चिद ब्रह्मना सत्वनी सहेज मानीनता पण स्वयंमेव हंस शरीरमां रही छे. तटस्थ तुर्याब्रह्म संधी नाम एटले जे सर्व शरीरना तट (तीर, किनारो)मां रहीने हंस शरीर अने सोहम प्रणवतत्व तथा सहेज सुन्य अवस्था ए त्रणे व्यापक चिद ब्रह्ममां सदाकाळ एकता राखे छे. माटे तेने तटस्थ तुर्या ब्रह्म संधी कहेवी. चिद अंतःकरण तटस्थ तुर्या ब्रह्म संधीना सत्वने पोताना स्वरूपमां समरस करीने सम दम राखे छे. माटे चिद अंतःकरणने ए भूमिकाने धारण करी रहेनारुं जाणवुं.

ए सप्त भूमिका एक शरीरनी कही. ए सप्त भूमिका रूपी सप्त माळाना महेलमां कैवल कर्तानो अंश जे सजाण स्वरूप ते निवासे छे. अंशनी दृष्टि जे माळ उपर आभासमान थाय तेने ते भोमिकानो पुरुष जाणवो. ए महेलना साते माळ सामान्य छे; पण अंशने अधिक नुन्य जणाय छे. जे भूमिकामां जेवां तत्व अने अंतःकरण रह्यां छे

त्यां तेवी महादत्ता स्फुरे छे तेथी भिन्न भिन्न महदता (मोटाइ) जणाय छे. एमां प्रथम कर्ताना अंशनी वृत्ति शुभ इच्छामां वर्ते तो ते पहेली भोमिकानो पुरुष कहेवाय अने सुविचारणामां अंशनी इच्छा वर्ते तो ते बीजी भोमिकानो पुरुष कहेवाय. एज प्रमाणे अंशनी इच्छा तनुमानसामां वर्ते तो त्रीजी, सत्वापतिमां वर्ते तो चोथी, असमशक्ति नामीकामां वर्ते तो पांचमी, पदार्थ भावनामां वर्ते तो छठी अने तटस्थ तुर्या ब्रह्म संधीमां वर्ते तो सातमी भोमिकानो पुरुष कहेवाय.

ए सर्व भोमिकानुं स्वरूपाकारपणुं जाग्रत अवस्थाना अनुभवमां रहीने कहेवाय छे. वळी जाग्रतमां शरीरना त्रिविधि ताप (दु:ख) अने त्रण उप परिताप भूकतमान थाय छे.

खट ताप विषे:—

मुख्य त्रण ताप अने त्रण उपपरिताप मळीने छ ताप थया छे.

(१) शरीरमां काम क्रोधादि गुण अधिक तपी जाय अने दश इंद्रीयोना देव अधिक विषयनी चाहना करवा लागे पण ते विषय प्राप्त न थाय तेथी शरीरमां दु:ख थाय. ए तापने शरीर संबधीनो आधि दैव्य ताप जाणवो.

(२) पंच भूतमां कोई भूत वृद्धि पामे छे त्यारे दु:ख थाय छे जेम पंडरोग, कठोदर अने जाळंधर वगेरे

व्याधि उत्पन्न थाय छे ते पृथ्वी तत्वना वृद्धि पाम्याथी थाय छे जळतत्व वृद्धि पामेथी शरदी, क्षय, कफ, अजीर्ण अने शीत वगेरे व्याधि थाय छे. अग्नितत्व वध्याथी प्रमेह ज्वर, ययन दुःख, गलतकोड, पक्षघात अने गरमी वगेरे व्याधि थाय छे. वायुतत्व वध्याथी उलटी, उधरस, दम, ताण, मरघीवायु अने चित्तभ्रम वगेरे व्याधि थाय छे. आकाश तत्व वधेथी सोजो वा, उधरस वगेरे व्याधि थाय छे. आ तापने आधिभौतिक ताप कहेवामां आवे छे.

(३) शरीरमां क्षुधा पीपासानो ताप सदाकाळ अध्यात्म लागु रहे छे माटे ए क्षुधा पीपासाना तापने अध्यात्म ताप जाणवो के जेने माटे सर्व दुनिआ रात दिवस महेनत करे छे, बीजा तापो कोइ समे शांत थइने फरी थवाना होय तो थाय छे पण आ ताप तो सदा चालुज रहे छे.

ए त्रिविध ताप शरीर संबंधी जाणवा. हवे त्रण उपपरिताप विषे कहेवामां आवे छे.

(४) नव ग्रह, पितृ, पीडा, वृष्टि, अग्निकोप वगेरे शीत अने देवकोपनी पीडा उत्पन्न थाय छे तेने आधि दैव्य उपपरिताप जाणवो. केमके आपणा देहथी परोक्ष रह्या छे तेओ पीडा पमाडे छे (पर रहीने दुःख आपे छे) माटे ए तापने आधि दैव्य उपपरिताप जाणवो.

(५) नरपति, चोरपति, सर्प वींछी, वगेरे परोक्ष रहेला शरीरने दुःख आपे छे तेथी ए तापने अधिभुत उपपरिताप

जाणवो. केमके पंचभुतना घाट सर्व कोइना छे ते एक बीजाने दुःख आपे छे.

(६) सुतवितदारा कुटुंब सहोदर संबंधी तेमना दुःखनो अभ्यास आपणा अंतरमां रहे छे के जेथी ते तापे तपवाथी घणुंज दुःख थाय छे ए तापने अध्यात्म उपपरिताप जाणवो.

ए त्रण प्रकारना परथी थता तापने उपपरिताप जाणवा ए छ तापोनी मानीनता जाग्रतमां रहे छे.

सर्पवींछीना डंखथी शरीरमां विष (झेर) व्यापे छे. ते विषने औषधके मंत्रादिथी उतारे छे ते पण जाग्रतमां.

मंत्रादि औषधीथी क्या संजोगे विष उतरे छे ते विषे:—

सर्प वींछी वगेरे जेटला जीव तामस योनीना छे तेटला जीवना मूखार्विंदमां तामस भाग विशेष रह्यो छे तेथी तेओ जेने डंखे छे तेने विष चढे छे. ते विष मंत्रादि औषधीथी उतरे छे ते पण तामसयोनीनो विभाग छे, मंत्रादि औषधी पोते तामसनो विभाग होवाथी ते पेला सर्प वींछीना डंखवाळा शरीरमां रहेला तामस भागने जाग्रत करे छे के जेथी ते विशेषतापणुं पामे छे, चैतन शरीरमां रहेलो ते शरीरनो तामस भाग विशेषतापणुं पामीने पेला चैतनथी जुदा रहेला तामस भागना विषनो नाश करे छे, ते पण जाग्रतमां थाय छे.

विष केवी रीते उतरे छे तेनुं दृष्टांतः—

जेम कोइ मंदिर (घर) मां अग्नि राख्यो होय ते जाग्रत थतां मंदिरना धुमाडानो नाश करे छे अथवा जेम कोइ खेतरमां ढोर पेसीने ते खेतर उज्जड करवा मांडे पण ते खेतरना रखवाळने कोइ जाग्रत करे तो ते ढोरने खेतरमांथी हांकी काढे, तेम शरीरना तामसने कोइ जाग्रत करे तो ते विषरूपी ढोर अने धुमाडानो नाश करे. कोइ समे मंत्रादि औषधीथी विष उतरे छे अने कोइ वेळा नथी उतरतु तेथी देह मृत्यु पामे छे तेनुं कारण:—

(१) जेना शरीरमां मन अंत:करण, स्थुलदेह अने जाग्रत अवस्था ए त्रीपुटीमां तामसनो विभाग वर्तंतो होय ते वेळा सर्पवींछी वगेरेना डंखनुं विष मंत्रादि औषधी विना उतरी जाय

(२) जेना शरीरमां बुद्धि अंत:करण सुक्ष्मदेह अने स्वप्न अवस्था ए त्रीपुटीमां तामसनो विभाग वर्तंतां सर्प वींछी वगेरेना डंखनुं विष होय ते मंत्रादि औषधीथी उतरी जाय.

(३) जे शरीरमां अहंकार अंत करण, कारण शरीर अने सुसुप्ति अवस्था ए त्रीपुटी वर्तती होय अने तामसनो विभाग जाग्रत होय, छतां सर्प वींगेरेनुं विष चढेलु होय ते मंत्रादी औषधीथी पण उतरे नहि. कदाच वींछी जेवानुं

सूक्ष्म विष होय ते धीमे धीमे तेनी मेळे उतरी जाय अने सर्प वगेरेनुं विष होय ते उतरे नहि, पण देह मृत्युवश थाय

वळी जाग्रत अवस्थामां भुत पिचाश वगेरे मलीन योनीना देवो कोइना शरीरमां प्रवेशीने दुःख आपे छे. ज्यारे कोइ भुवा के जागरीआ टाणाटुणी करे छे त्यारे ते भराएला मलीन योनीना देव नीकळी जाय छे. ते केवा प्रकारे भुवा मलीन देवने काढे छे ते नीचे मुजबः–

भुवा वगेरे टाणाटुणी करीने ते शरीरमां मलीनयोनी-ना देवनुं पोषण करे छे तेथी ते शरीरमांना मलीन देवो जाग्रत थइ जाय छे, अने पेला मलीन योनीना भुतपिशाच वगेरेनो नाश करे छे. कोइ वेळा ते मलीन देवो टाणा-टुणी कर्या छतां नथी नीकळता तेनुं कारण विष उतरे अने न उतरे तेनो भेद कह्यो हतो ते प्रमाणे जाणवुं.

ए प्रकारे आ विश्वमां तंत्र भेद वर्तमान करे छे ते पण जाग्रतमां.

हवे कोइ मूठचोट वडे कोइने प्रहार करे छे ते पण जाग्रतमां ते मूठचोटने कोइ मंत्रादिथी उतारे छे तेनो भेद नीचे मुजबः–

कोई मंत्रथी मनुष्यने मारे छे ते विशेष तामस देव विभूति छे. ते विशेष तामस देव विभुतिने साधीने स्वा-धीन करीने पछी तेने मंत्र वडे वेरीना शरीरमां प्रवेश

करावे छे. ते विशेष तामस देव विभुति वेरीना क्या शरीरमां प्रवेशीने दुःख आपे छे ते नीचे मुजबः–

शरीरना पांचभूत अने पांच मात्रानी एकता इंद्रियोमां रही छे. ते इंद्रीयोनी एकता अंतःकरणमां रही छे. अंतःकरणनी एकता गुणघणमां रही छे. गुणघणनी एकता प्रकृतिमां रही छे ते प्रकृतिनी एकता आनंद तत्वकारण अने धनंजे तत्वकारणमां रही छे, ते आनंदतत्व अने धनंजे तत्व कारणनी एकता अव्याकृतमां रही छे ते अव्याकृतनी एकता पुरूषमां रही छे. ते पुरूषनी एकता ब्रह्ममां रही छे अने ते चैतन ब्रह्मनी एकता निज कैवल्यना अंशने विषे रही छे ए प्रकारे अन्योअन्य एकता ए करीने सर्व शरीर तुष्टपुष्ट रहे छे उपर मुजबना सर्व एकता पैकी अंतःकरण अने गुणनी एकतानी संधीमां पेला विशेष तामसदेव विभूतिना मूठचोट मंत्र वगेरे प्रवेश करीने अंतःकरण अने गुणनी संधीने छेदता रहे छे तेथी ते शरीर सुकाइ जाय छे ते मूठचोटने कोइ मंत्रथी मटाडी दे छे तेनुं कारण ते मंत्र पण विशेष तामसदेव विभुति छे ते विशेष तामसदेव विभुतिना चोट निवारण मंत्रने ते शरीरमां पोषण कर्याथी ते शरीरना विशेष तामसदेव जाग्रत थाय छे. त्यार पछी ते विशेष तामसदेव जाग्रत थइने पेला विशेष तामसदेव विभुति मंत्रने हांकी काढे छे. कोई वेळा ते कामदेव

विभुति मंत्र नीकळता नथी तेथी शरीर मृत्यु पामे छे तेनुं कारण ए के-तेना शरीरनो विशेष तामसदेव त्रीजा देह (कारणदेह)मां वर्ततो होय तो ते मूठचोट निवारण मंत्र तेने जाग्रत करी शके नहि. एथी ते चोट निवारण मंत्र परोक्षनो प्रेर्यो शरीरमां प्रवेशी शकतो नथी.

ए कारणथी ते शरीर मृत्यु पामे छे. ए पण जाग्रतमां थाय छे.

कोइ योगी श्राप दे छे ते पण विशेष तामस देवने साधीने दे छे. तेमज कोइ योगी आशीर्वाद आपे छे ते पण विशेष तामस देवने शांति पमाडीने दे छे. ते पण जाग्रतमांज होय छे.

राजा, योगी, ज्ञानी अने इश्वर वगेरेने मंत्र तंत्र मूठ चोट लागी शकती नथी कारण के तेमनामां सर्व देव विशेष विभूति लइने जाग्रत थइ रह्या छे.

ए प्रमाणे आ विश्वमां जाग्रतने विषे मंत्र तंत्रभेद उपाधि वर्तमान करे छे. हवे अन्य शरीर संबंधी नाना बाळकने त्रण प्रकारना फणगली रोग थाय छे.

फणगली रोग विषे:-

नाना बाळकने त्रण जातना फणगली रोग थाय छे. (१) मोटी फणगली (२) नानी फणगली अने (३) सूक्ष्म फणगली.

के जेने सर्व संसार शीतळा माता नीकळी कहे छे. अने तेनुं परछाया पथ पाळण करे छे. आपणा गूजरात देशमां ते रोगनुं बळीया देवनुं स्थापन करे छे ए व्याधिनो ताप पण बाळकने जाग्रतमां जणाय छे. ए रोग क्या कारणथी थाय छे ते विषेः--

प्रथम स्त्री पुरुषना संभोगना बिंदुनुं बाळक तनु थाय छे. ते बिंदुना पाका पांच तत्वनो तो बाळकनो देह बंधाय छे अने स्त्री पुरुषने तरत पान करेलां बिंदु साथे काचा जळनो विभाग स्खलीत थइने आवे छे ते बाळकनी नाडीओमां भराइ रहे छे. एमां स्त्रीना बिंदुनो काचो जळ भाग बाळकना मांश भाग अने त्वचा भागनी संधीमां भराइ रहे छे. ज्यारे बाळकनी नाडी, त्वचा अने मांश कठण थतां जाय छे त्यारे ते जळ बहार फूटी नीकळे छे. नाना मोटा बाळकने एकी वखते फूटी नीकळे छे तेनुं कारणः--

वैराटमां ओगणपचास वायु वाय छे ते पैकी शीत बल अग्निनामां नामनो वायु ज्यारे जेटला देश, पर गणा, मूलक, नगर अने गाममां वगेरे स्थळमां थइने वाय छे त्यारे तेटला स्थळनां बाळकोने के जेनां नाडी, मांश अने त्वचा कठण थइ रह्यां होय छे तेमने ते काचाजळना विभाग एकदम फूटी नीकळे छे एमां पिताना बिंदुना काचा

जळनो मोटी फणगली रोग थाय छे. माताना बिंदुना काचा जळनो नान्ही फणगली रोग थाय छे अने मातपिताना मिश्र काचा जळ (के जे बाळकनी त्वचामां भराइ रहे) छे ते नो सूक्ष्म फणगली रोग थाय छे, ए त्रण रोगना नाम ओरी अछबडा अने बळीया छे. कोइ देशमां तेने शीतळा देवी नीकळी कहे छे.

ए प्रमाणे सर्व व्याधिनी परीक्षा जाग्रतमां थाय छे.

अन्य सर्व दशे दिशा, स्थावर, जंगम, चौदेलोक मृत्यू पाताळ वगेरेनी अगम निगम गति स्फूरे छे ते जाग्रतमां. एवी जाग्रत अवस्था अतिशय स्फूरणता पामे छे तेनुं कारण ए के त्यां निजजाण स्वरुपना आभासनो विशेष आभास गादीपति थइने रहेतो हतो.

ए प्रमाणे निजजाण स्वरूपना सामान्य अने विशेष आभास वडे सर्व देही हलण चलण करती हती, ते निजजाण स्वरूपना विशेष आभासनो आभास जाग्रत अव-अवस्थामां भासमान रहेतो हतो. ते विशेष आभासना प्रतापे मन अंतःकरण अतिशय स्फुरतुं हतुं. ते मन अंतः-करण अतिशय स्फूरता पामीने सर्व इंद्रियोनी चासमी लेतुं हतुं ते मन चासमी लइने बुद्धिने पोपतुं हतुं. ते बुद्धि चासमी लइने अहंकार अंतःकरणने पोपती हती, ते अहंकार अंतःकरण चासमी लइने चित्त अंतःकरणने पोषंत

हतुं. ते चित्त अंतःकरण चासमी लइने नचित्त अंतःकरणने पोषतुं हतुं. ते नचित्त अंतःकरण चासमी लइने आश्र कर्तोना निजजाण स्वरुप सामर्थ अंशने पहोंचाडतुं हतुं. ए प्रमाणे निजजाण स्वरुप अंश सकळ पिंड (इंद्रियो) अने अंतःकरणना विषय) नी चासमी लेतो हतो.

ते निजजाण स्वरुप अंश पिंड ब्रह्मांडनी संधीमां रहीने (अलगनो अलग अने सलगनो सलग) चासमी लेतो हतो. ज्यां सूधी तेने सर्व इंद्रियो वगेरेनी चासमी पहोंची हती त्यां सूधी अशंनी दृष्टि पिंड उपर सन्मुख अनुकुळ रहेती हती. तेथी ते तन रमण करतुं हतुं. तेनिज जाण स्वरुप अंशनी दृष्टि आभासे आभास वडे जंगम तनुने चेतनवत राखती हती ते आभास प्रथम प्राणायममां पडतो हतो. ते प्राणायमना आभासना आभास वडे शरीर चैतन थतुं हतुं अने ते पिंडना चैतन थयाथी निज जाण स्वरुपने चासमी पहोंचती हती. ते निज जाण स्वरुपनो आभास प्राणायाममां आवतो हतो अने ते प्राणायम अनंगचक्षसत्व अने वर्गज्ञान चक्षसत्वना संबंधथी रहेतो हतो ज्यारे अनंग चक्ष सत्व अने वर्गज्ञान चक्षसत्व नाश पाम्यां अने एकलु वाळ चक्षमत्व रहयुं त्यारे ते प्राणायम निर्बळ थइ गयो. अने ज्यारे प्राणायम निर्बळ थइ गयो त्यारे सर्व अंतःकरण अने इंद्रियो सामर्थ्य वगरनां थइ गयां तेथी तेमना विषयो

पण नाश पाम्या. ते विषयो नाश पाम्या तेथी अंशने चासमी पहोंचतां अटकी ते चासमी बंध थइ गइ तेथी अंशनी दृष्टि पिंड उपरथी सामान्य समवत थइ गइ. कालचक्षसत्वे प्राणायमनो नाश करी नांख्यो त्यारे अंशनी दृष्टिनो आभास जे प्राणायम उपर हतो ते उलटीने निज-जाण स्वरुपने विषे लीन पामी गयो, ज्यारे प्राणायमनो नाश थये अंशनी दृष्टिनो आभास लीन पामी जाय त्यारे ते जंगम जाति तनुनुं मृत्यु थाय. ज्यारे जंगम तनु मृत्यु पामे त्यारे कर्तानो निजजाण स्वरूप अंश पिंड ब्रह्मांडनी संधी छोडीने कर्तानी प्रकाश ब्रह्मवृत्ति भुमिमां उलट बिराजमान थइ रहे ते अंश पोतानी इच्छा प्रमाणे स्वरु-पकार अव्यक्त मुर्तिमान रहीने प्रकाश ब्रह्मवृत्ति भुमिकामां बिराजमान रहे पण ते अंश ते प्रकाश ब्रह्मवृत्ति भुमिमां मळी जाय नहि कारणके कर्तानी प्रकाश ब्रह्मवृत्ति भुमिका तो निःसत्व, निराकार सुन्यमां व्यापक सून्य समानज छे दृष्टांत तरीकेः—जेम सूर्यनो प्रकाश सुन्यमां व्यापी रह्यो छे पण ते प्रकाशमां सूर्यनो मूर्तिमान अंश रह्यो नथी, तेथी ते प्रकाशनो (दिपकनो) बोलतो चालतो मुर्तिमान सूर्य अंश नीपजे नहि, जो कदाच नीपजे तो अग्नि नीपजे ते अग्निने तो प्रकाशज जाणवो केमके ते प्रकाश (प्रति-बिंब) निःसत्व होय छे. पण बिंबा अंश कोइ वश वृद्धि

पामे नहि. तेम कर्तानी प्रकाश ब्रह्मवृत्ति भूमिका निःसत्व निराकार छे तेमां निजजाण स्वरुप अंश (जे सत्व संयुक्त अंकुर मूर्तिमान छे ते) मळीने एक रुप केम थइ जाय? एनु दृष्टांतः—

अनेक प्रकारनी वनस्पतिनां बीज जे सूक्ष्ममां सुक्ष्म अति बारीकमां बारीक होय ते पृथ्वीमां मळी जइने एक मेक थइ रहे छे पण ते बीज पृथ्वीमां पृथ्वीरुप थई जतां नथी, कारणके बीज तो विशेप सत्व संयुक्त अंकुर मूर्तिमान छे अने पृथ्वी तो सामान्य सत्व जडाकार छे तेथी बीज अवनीमां मळी जतां नथी. तेम कर्तानो अंश प्रकाश ब्रह्मवृत्तिमां मळी जाय नहि. ए प्रमाणे कर्ताना अंश प्रकाश ब्रह्मवृत्ति भुमिमां मळी जइने न्याराने न्यारा रहे छे, वळी ते कर्ताना अंश पाछा कर्ताना स्वरुपमां पहोची शकता नथी तेथी तेओ कर्ताथी पण भिन्न रहे छे. केवल कर्ताए पोतानी इच्छामोजथी पांचवृत्ति उत्पन्न करीने, ते पांचवृत्तिओनां तत्व घणेक विभागे उलटा सुलटी मेळवीने देव वगेरे अनंत प्रकारना घाट रच्या. पछी ते घाटने विषे पोतानी (दृष्टि) चैतनवृत्ति पोषीने सर्व साज (संयुक्त) नीखाथी ते शीखा पर्यंत परिपक्व कर्या पण कोइ घाट कर्तानी इच्छा प्रमाणे हलण चलण करीने मोज करवा

लाग्या नहि त्यारे निज सजाण स्वरुप कैवल किरतारे पोतानी कर्ता अंश वृत्ति उत्पन्न करीने पोताना अश (जे निजजाण स्वरुप) पोष्या हता, ते वखतथी अंश कर्ताथी भिन्न पडया पडया कर्तानी पांच वृत्तिना विभागना साज (जडतन संयुक्त)ना साक्षी थइ रहे छे. ते कर्ताना अंश जडतनना साक्षी थये ते जडतन चेतन थवाथी ते अंश अनेक प्रकारना विषय वैभव करवा लाग्या ते सर्व विषयनी चासमीने अन्योअन्य पहोंचती निज जाण स्वरुप अंश लेवा लाग्या. तेथी ते अंशो निजसजाण स्वरुप कैवल कर्तानी जाण हती ते विसरी गया अने चासमीना जाणना ज्ञाता थया. एथी ते अंशो पोतानुं निजजाण स्वरुप विसरी गया अने वासना रुप थइ गया. तेओ वासनाना जाण स्वरुप थवाथी तेमने विषयना चासमीनी स्मृति रहे छे. (निजजाणनी स्मृति रही नहि) वासनानी चासमीनी स्मृति रहो निजजाण स्वरूपनी दृष्टि वासना उपर सहेज स्वभावे सूक्ष्मपणे रहे छे. अने एथी ते वासना अमरवेली सदा चेतन रहे छे. ते वासना अमरवेली पिंड पडया पछी पण निजजाण स्वरुप अंश साथे लपटाइ रहे छे. (जुदी थती नथी) दृष्टांत-जेम चुंबकनी सत्ताथी लोढु चुंबक साथे वळगी रहे छे तेम चुंबकवत अंशनी सत्ताथी लोढावत जड वा-

सना अंश साथे वळगी रहे छे. ते वासना कर्ताना अंशने केवी रीते लपटाइ (वळगी) रहे छे ते विषेः—

सकळ पदार्थ इंद्रियो अने अंतःकरणनी स्मृति निज जाण स्वरूप अंशने रहे छे. ते स्मृतिने वासनानुं स्वरुप जाणवुं. तेथी ते अंश वासना (स्मृति) संयुक्त सम्यक सहेज स्वभावे रहे छे. ते वासना (चासमीनी स्मृति) कर्ताना अंशने पदार्थ भावनाथी उत्पन्न थइ छे. तेथी ते वासनानी पदार्थ उपर अधोगत दृष्टि रहे छे. ते अधोगति दृष्टि पदार्थ उपर रह्याथी निजजाण स्वरुप अंशनी वृत्ति पण स्हेज स्वभावे अधोगत वासना पाछळ तणाएली रहे छे. एथी ते अंशो वासना पाछळ तणाइ जाय छे अने आद्य पुरुष सजाण स्वरुप कैवल कर्ताने पाछा पहोंची शकता नथी. ते कारणे कर्ताना अंश कर्ताथी भिन्न रहे छे. ए प्रमाणे ज्यारे कर्ताना अंश देह तजीने भिन्न थाय छे त्यारे वासना तेनी साथे तणाइ जाय छे. अने ज्यारे वासना अन्य देहमां प्रवेश करे छे त्यारे तेनी साथे कर्ताना अंश तणाया जाय छे. जेम नावमां लोढानो खीलो मार्यो होय ते उंडा पाणीए चुंबक नजरे पडतां खेंचाइ जाय अने तेनी साथे नाव सहित नाविक पण खेंचाई जाय तेम छूटते पींडे अंश पाछळ वासना तणाई जाय छे अने अंश बीजी देह धारण करती वासना साथे

तणाई (खेंचाइ) जाय छे.

इंद्रियो अने अंत:करणनी चासमीना स्वादने लीधे अंशने पदार्थोना साक्षी थवानी इच्छा रहे छे ए इच्छाने लीधे जन्ममरणनी भवाटी असंख्यकाळ थयां चाली जाय छे ए कारणथी मोटा पुरुषो खातांपीतां बोलतां चालतां वगेरे क्रिया करतां सर्व पदार्थना विषयमां रह्या छतां निर्लेप रहे छे अने तेमां आशक्त थइ जता नथी. जेम जीभ अनेक प्रकारना भोग भोगवे छे पण ते कोइ रसमां लेपायमान थइने चीकाश पामती नथी. (शरीरनी बीजी ग्रंथीओ चीकाश पकडे छे पण जीभ पकडती नथी.) तेम महाद पुरुष कैवलवेत्ता अनेक प्रकारना वैभव करवा छतां जीभनी माफक निर्लेप रहे छे पण अन्य जीव विषयनी तृप्तिमां बंधाई जाय छे तेथी महाद पुरुष कैवलवेत्तानां चिन्ह जोइने तेनी देखादेखी अन्य जीवे करवुं नहि कारणके महाद पुरुष कैवलवेत्ता तो कैवलकर्ताना महाद अंश छे अने ते कर्ताना निज हुकमथी अनुभवानंद देह धारण करे छे. माटे ते पुरुषने कर्ताना स्वरुपेज जाणवा. ते महाद पुरुष तो कर्ताना विशेष अंश छे माटे ते चाहे सो करे, ते महाद पुरुष विशेष सामर्थ्यने लीधे बोलवा चालवा खावा पीवा वगेरे क्रिया करवा छतां आवरणमां आवता नथी. ते माटे महाद पुरुष कर्तारुपे छे अन्य

जीवतो कर्तांना सामान्य अंश छे तेथी ते सर्व जीवो पदार्थना आवरणमां आवी गया छे, जो ते सामान्य अंशो विशेष अंश जे सद्गुरु मुर्तिनो सत्संग करे तो तेमनुं पदार्थना विषयनुं आवरण दुर थाय, अने कैवल मोक्षमां हेत भुत थई पडे. ॐ श्री करुणा सागरो विजयते.

इति कैवलस्वरुप कुबेर स्वामीजी विरचित.

पंचम (सूक्ष्म) वेद.

